PAGE NO.:
DATE: / /

[Unit – I]

Ques. माँग के नियम के अनुसार को समझाइए कि माँग तालिका कितने प्रकार की होती है माँग के प्रकार बताइए।

Ans. माँग का अर्थ :— (i) वस्तु के प्राप्त करने की इच्छा।
(2) इच्छा पूर्ति के लिए साधन।
(3) साधनों पर व्यय की तत्परता।
(4) वस्तु की कीमत
(5) समयावधि।

यह पाँचो तत्व मिलकर माँग को निर्धारित करते है।

परिभाषा :—
माँग से आशय किसी उपभोक्ता द्वारा किसी वस्तु की माँगी गई मात्रा है। जिसे वह निश्चित कीमत पर निश्चित व्यय क्रय करने के लिए प्रेरित रहता है माँग कहलाती है।

माँग तालिका के दो प्रकार होते है :—
(1) व्यक्तिगत माँग तालिका
(2) बाजार माँग तालिका

(1) व्यक्तिगत माँग तालिका :— व्यक्तिगत माँग तालिका बताती है कि एक उपभोक्ता किसी वस्तु की विभिन्न कीमतो पर उसकी कितनी मात्रा का उपभोग करता है।

Price	Quantity
10	8
9	10
7	15
5	20

(2) बाजार माँग तालिका :— बाजार माँग तालिका इसमें बाजार के सभी उपभोक्ताओं की माँग का प्रयोग कर लिया जाता है। बाजार माँग है।

Types of Demand ⇒ (a) कीमत माँग (b) आय माँग (c) आड़ी या तिरछी माँग

~~Types of Demand~~ :- कीमत माँग वस्तु की तथा माँग मात्रा मे विपरीत सम्बन्ध है। बताती है। अर्थात कीमत बढ़ने पर माँग मात्रा घटती है। तथा कीमत घटने पर माँग मात्रा बढ़ती है।

(a) ~~Price demand~~ :- आय माँग उपभोक्ता की आय मे परिवर्तन होने पर माँग मात्रा मे होने वाले परिवर्तन को दर्शाति है। आय माँग दो प्रकार की होती है।

(i) उच्च कोटी वाली वस्तुओ के संदर्भ मे
(ii) निम्न कोटी वाली वस्तुओ के संदर्भ मे

(i) In terms of high quality goods.

इन वस्तुओ के संदर्भ मे यदि आय बढ़ती है तो माँग मात्रा बढ़ जाती है। और अगर आय घटती है तो माँग मात्रा घट जाती है।

आय बढ़ने पर माँग मात्रा कम हो जाती है। तथा आय घटने पर माँग बढ़ जाती है। इसमें आय व माँग में विपरीत / उल्टा सम्बन्ध पाया जाता है।

Horizontal and oblique demands:- यह माँग उन वस्तुओं के लिए होती है जो एक दूसरे से सम्बन्धित होती है। ऐसी वस्तुओं में एक वस्तु की कीमत दूसरी वस्तु की माँग को प्रभावित करती है।

Substitute goods:— ये वे वस्तुएँ होती है जो एक दूसरे का सबसे अच्छा विकल्प होती है। इस विकल्प का उपयोग करने से उपभोक्ता को सन्तुष्टि में ज्यादा परिवर्तन आ करके माँग मात्रा में परिवर्तन होना।

Exampl is :— चाय - कॉफी, ब्रैड - रोटी, गुड - चीनी

Complementary items:— पूरक वस्तुएं वे होती है जिनका उपयोग एक साथ किया जाता है अर्थात दो वस्तुओं का उपयोग एक साथ होता है।

Q. माग के नियम लागू होने के कारण बताइए तथा माँग के अपवाद होने के कारण भी बताइए।

Due to the application of demand rules.

① Income effect :- किसी वस्तु के मूल्य मे कमी होने का अर्थ है की उस वस्तु की पहली जितनी

मात्रा कम मुद्रा मे क्रय की जाती है। अर्थात अप्रत्यक्ष रूप से उपभोक्ता की आय बढ़ जाती है यदि कीमत बढ़ जाती है तो उपभोक्ता पहले के जितना ही व्यय करेगा। और वस्तुओ की कम मात्रा खरीदेगा। बढ़ी हुई कीमत के घटने के समान है। कम मात्रा खरीदने से वस्तुओ की माँग कम हो जाती है। अतः आय प्रभाव यह बताता है की कीमत कम होने पर वस्तु की अधिक मात्रा खरीदी जाएगी। इस प्रकार माँग बाऐं से दाये की ओर होती है।

New experiments :— (नये प्रयोग)

अधिकांश वस्तुएं ऐसी होती है जिसका एक से अधिक प्रयोग किया जा सकता है वस्तुएं मंहगी होने पर वह अधिक आवश्यक प्रयोग मे होने पर कम काम मे ली जाती है (अधिक आवश्यकता उपयोग मे काम मे ली जाती है) जब वस्तु की आवश्यकता अत्यधिक हो जबकी वस्तुएं सस्ती होने पर कम उपयोग मे भी काम मे ली जाती है। अतः मुल्य बढ़ने पर घटने पर नये उपयोग बढ़ने के कारन वस्तु की माँग बढ़ती है। इसके विपरित मुल्य बढ़ने पर वस्तु केवल अत्यधिक महत्वपूर्ण प्रयोग मे ही ली जाती है। जिसके कारन माँग बढ़ जाती है।

Change in the number of buyers :— (क्रेताओं की संख्या मे परिवर्तन) क्रेताओ की संख्या बढ़ जाती है तथा मुल्य कम होने पर भी बढ़ जाती है तथा वस्तु की माँग वस्तु की माँग है इसके विपरीत मुल्य बढ़ने पर क्रेताओ की संख्या भी बढ़ जाती कम हो जाती है जिससे वस्तु की माँग कम जाती है।

Sustainability of Marginal utility :- (सीमान्त उपयोगिता का ह्रासनियता) माँग का नियम सिमान्त उपयोगिता ह्रासनियता पर आधारित होता है। सीमान्त उपयोगिता के ह्रासनीयता के अनुसार किसी वस्तु के उपभोग बढ़ने पर उसकी सीमान्त उपयोगिता घट जाती है उपभोक्ता सदैव अपने साम्य स्थिति को बनाए रखना चाहता है। अतः वह वस्तु की अधिक इकाईयो का उपभोग केवल उसी समय करेगा जब वस्तु के मूल्य में वृद्धि होने पर उसकी कम मात्रा क्रय करने लगता है।

Substitution effect :- (प्रतिस्थापन प्रभाव)
इस प्रभाव के अनुसार सस्ती वस्तु द्वारा मँहगी वस्तु का प्रतिस्थापन किया जाता है। अतः इस प्रभाव के कारण वस्तुओ का मूल्य घटने से माँग बढ़ जाती है मूल्य बढ़ने से माँग घटती है। मूल्य घटने पर माँग मात्रा बढ़ जाती है।

—*—*—*—*—

Exceptions to the law of demand :- (माँग के नियम के अपवाद)

(a) Giffin's paradox :- (गिफिन का विरोधाभास)
गिफिन प्रभाव के कारण निकृष्ट वस्तुएं मूल्य घटने पर कम व्यय की जाती है। क्योंकि मूल्य घटने से उपभोक्ता की वास्तविकता आय बढ़ जाती है। जिससे वह बढ़िया किस्म की वस्तुओ पर अधिक व्यय करता है जिसके कारण निकृष्ट वस्तुओ पर माँग का नियम लागू नहीं होता।

(b) Prestige related items :- (प्रतिष्ठा मूलक वस्तुएँ)

धनी लोग अपनी प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए आभूषण अथवा बहुमूल्य हीरो का मूल्य बढ़ने पर अधिक क्रय करते है जिससे उनके बाजार मे प्रतिष्ठा बढ़ती है। तथा मूल्य कम होने पर यह प्रतिष्ठा की वस्तुएँ नही होती है अतः कम क्रय करते है की वस्तुएँ नही होती। अतः यह माँग के नियम का अपवाद है।

Fear of price increase in future :- (भविष्य मे कीमत बढ़ने की आशंका) अनेक बार उपभोक्ता भविष्य मे कीमत बढ़ने की आशंका से भी मूल्य बढ़ने के बाद वस्तुओ को अधिक खरीदता है। क्योकि उसे आशा होती है की वस्तुओ का और अधिक मूल्य बढ़ेगा।

Consumer ignorance :- (उपभोक्ता की अज्ञानता) अनेक बार उपभोक्ता अज्ञानता के कारण महँगी वस्तुओं को उपयोगी मानता है। अधिक क्रय करता है। अतः मूल्य बढ़ने पर माँग बढ़ जाती है जो की माँग के नियम का अपवाद है।

Necessary things of life :- (जीवन की अनिवार्य वस्तुएँ) वे वस्तुएँ जो जीवन के लिए अनिवार्य है। इन वस्तुओं का मूल्य बढ़ने पर इनकी माँग मे कोई कमी नही होती। जो की माँग के नियम का अपवाद है।

युद्ध अथवा आपातकाल :-

अनेक बार युद्ध अथवा आपातकाल की स्थिति मे जब वस्तुओं के अभाव की आशा होती है तो जनता माल का स्टॉक बढ़ाने के लिए बढ़ते हुए मूल्यो पर भी वस्तुओं की अधिक मात्रा क्रय करता है।

कुल आय का सूक्ष्म व्यय :-

जब कोई वस्तु ऐसी हो जिस पर उपभोक्ता द्वारा किया गया व्यय उसकी कुल आय का छोटा साभाग होता है तब उस वस्तु के मूल्य मे परिवर्तन का उसकी माँग पर प्रभाव नही पड़ता।

PAGE NO.
DATE

माँग की लोच :-

Q. माँग की लोच की परिभाषा देते हुए इसके प्रकार व विधियों का वर्णन कीजिए :-

माँग की परिभाषा :-

माँग की लोच किसी वस्तु की किमत मे हुए परिवर्तन से माँग मे हुए परिवर्तन की माप है अर्थात किसी वस्तु की कीमत मे हुए आनुपातिक परिवर्तन से माँगी गई मात्रा मे आनुपातिक परिवर्तन को ही माँग की लोच कहते है।

माँग की लोच का सूत्र :-

$$\frac{\text{माँग मात्रा मे आनुपातिक परिवर्तन}}{\text{कीमत मे आनुपातिक परिवर्तन}}$$

माँग की लोच के प्रकार :-
1. कीमत लोच
2. आय लोच
3. आड़ी एवं तिरछी लोच

माँग की लोच की विधियाँ :- (1) प्रतिशत लोच विधि →

इस विधि का प्रतिपादन फ्लक्स द्वारा किया गया था इस विधि मे वस्तु की माँग मे प्रतिशत परिवर्तन का। कीमत मे प्रतिशत परिवर्तन से भाग देते है।

प्रतिशत लोच विधी का सूत्र :-

$$\frac{\text{माँग मात्रा मे प्रतिशत परिवर्तन}}{\text{कीमत मे \% परिवर्तन}}$$

$$E_P = \frac{\Delta Q}{\Delta P} \times \frac{P}{Q}$$

Example :- किसी उत्पाद से सम्बन्धित वस्तु की मात्रा व कीमत निम्न तालिका मे दे दी गई है इसकी सहायता से % लोच ज्ञात कीजिए।

Price	Quan...
5	100
4	120

$$EP = \frac{\Delta Q}{\Delta P} \times \frac{P}{Q}$$

$$= \frac{20}{1} \times \frac{5}{100} = 1$$

(2) कुल व्यय विधि :- कुल व्यय विधि का प्रतिपादन एल्फ्रेड मार्शल द्वारा किया गया था इसलिए इसे मार्शल की कुल व्यय विधि भी कहते है। मार्शल ने माँग मात्रा को आधार कहा और कीमत मे परिवर्तन होने पर कुल व्यय की मात्रा मे परिवर्तन होते है। इस विधि को निम्न तालिका की सहायता से समझा जा सकता है।

Price	Quantity	Total cost	माँग की लोच
10	60	600	EP = इकाई के बराबर
8	75	600	
6	100	600	
10	60	600	EP > 1
8	100	800	
6	150	900	
10	60	600	EP < P
8	70	560	
6	80	480	

बिन्दु लोच विधि :-

जब वस्तु के मूल्य मे बहुत सूक्ष्म परिवर्तन होता है तो इस स्थिति मे परिवर्तन की दर बहुत कम होती है।
अत: इस परिवर्तन को बिन्दु लोच विधि द्वारा ज्ञात किया जाता है।

formula :— $\dfrac{\text{माँग वक्र के नीचे का भाग}}{\text{माँग वक्र के ऊपर का भाग}}$

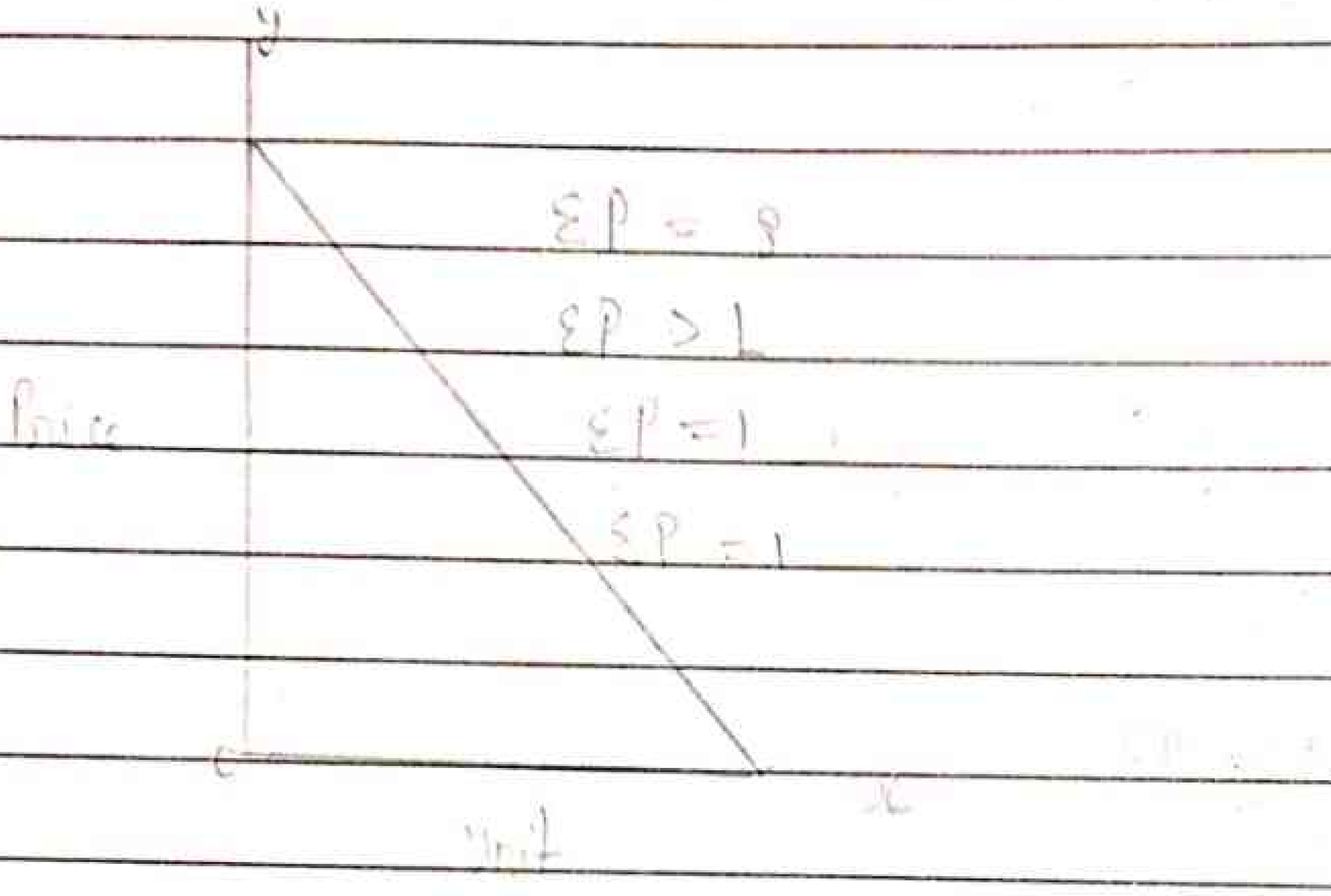

(d) चापलोच विधि :—

जब वस्तु के मुल्य मे सूक्ष्म परिवर्तन न होकर बड़े परिवर्तन होते है जब चापलोच विधि का प्रयोग किया जाता है।

formula चापलोच विधि :— $\dfrac{\Delta Q}{\Delta P} \times \dfrac{P_0 + P_1}{Q_0 + Q_1}$

Example :— चाप लोच विधि को एक उदाहरण द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है। माना कि किसी वस्तु का प्रारम्भिक मुल्य 20 रु० है प्रति इकाई होने पर उनकी 120 इकाइयो की माँग की जाती है यदि मुल्य घट कर 15 रु प्रति हो जाता है तो माँग बढ़कर 200 इकाई हो जायगी।

Example :-

चापलोच विधि को एक उदाहरण द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है। माना की किसी वस्तु का प्रारम्भिक मूल्य 20 रु प्रति इकाई होने पर उसकी 120 इकाईयों की माँग की जाती है यदि मूल्य घटकर 15 रु प्रति इकाई हो जाता है तो माँग बढ़कर 200 इकाई हो जायेगी। तो माँग की चापलोच विधि ज्ञात कीजिए।

Price	Quantity
20	120
15	200

चाप लोच विधि का सूत्र :-

$$\frac{\Delta Q}{\Delta P} \times \frac{P+P_1}{Q+Q_1}$$

$$= \frac{80}{5} \times \frac{20+15}{120+200}$$

$$= \frac{80}{5} \times \frac{35}{320}$$

$$= 1.75$$

[Second Unit]

Q. उदासीनता वक्रों की परिभाषा देते हुए इनकी विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

A. उदासीनता वक्र या तटस्थता वक्र :-

उदासीनता वक्र वह वक्र है जिस पर स्थित प्रत्येक दो वस्तुओं के ऐसे संयोग को प्रदर्शित करते है। जिसपर किसी उपभोक्ता को समान सन्तुष्टी मिलती है एक उदासीनता वक्र पर स्थित सभी संयोगो से समान सन्तुष्टि मिलने के कारण उपभोक्ता की उपयोगिता मे किसी भी प्रकार का कोई परिवर्तन नहीं होता है।

PAGE NO.:
DATE: / /

अंत: वह इन सभी संयोगो को समान महत्व देता है।

Explain :- रेखाचित्र मे ox, x पर वस्तु x o, y अक्ष पर वस्तु y की इकाईयाँ दी गई है उदासीनता वक्र मे A, B, C, D बिन्दुओ पर x तथा y वस्तुओ के विभिन्न संयोगो को दर्शाया गया जिससे उपभोक्ता को समान सन्तुष्टि मिलती है इस रेखा के अन्य बिन्दु भी सन्तुष्टि के समान स्तर को व्यक्त करते है इसलिए उदासीनता वक्र को समान उपयोगिता वर्क भी कहते है।

उदासीनता मानचित्र :-

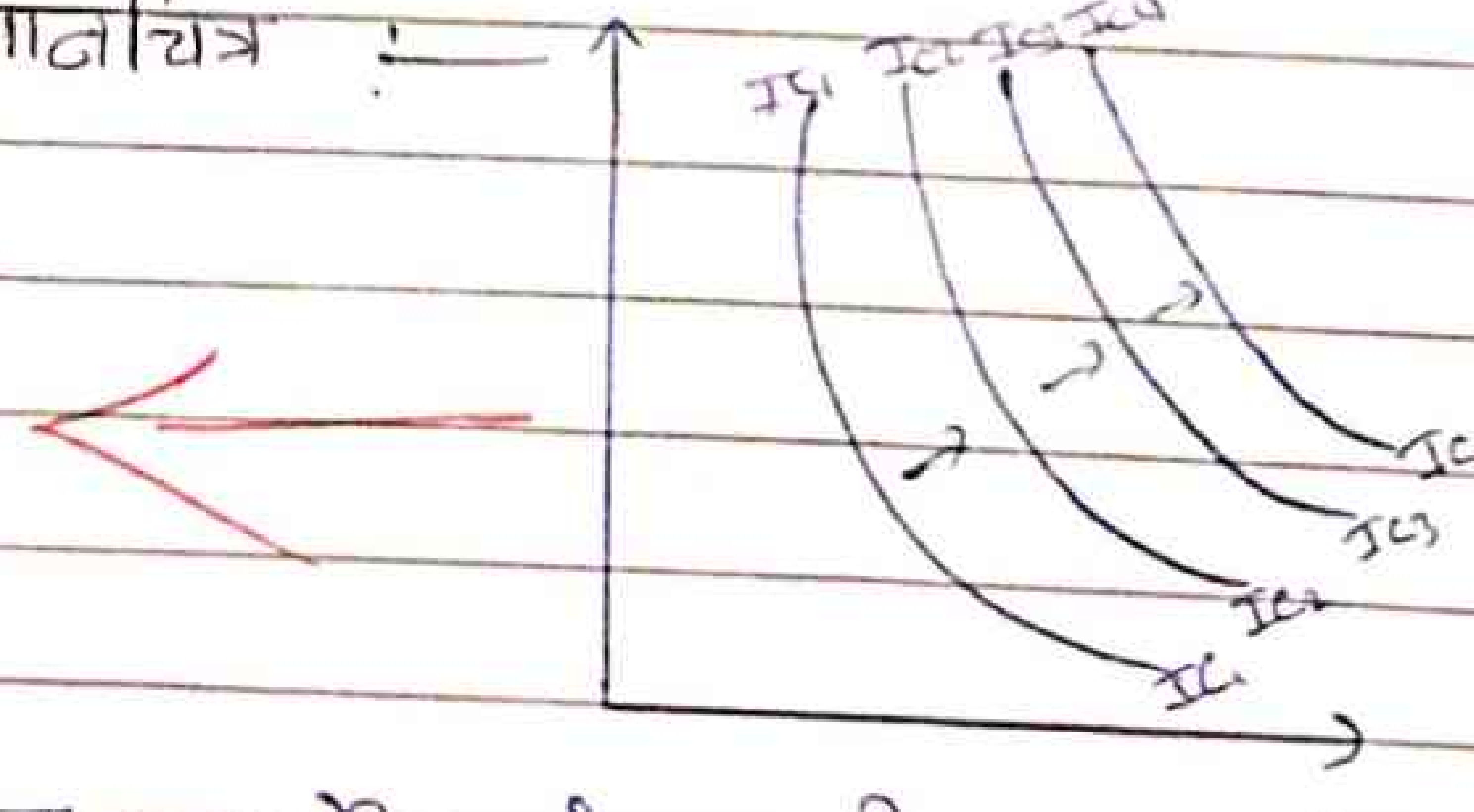

एक उदासीनता वर्को से अधिक वर्को को दर्शाने वाला चित्र उदासीनता मानचित्र कहलाता है अर्थात ऐसा चित्र जिसमे एक से अधिक उदासीनता वर्क हो उदासीनता मानचित्र कहलाता है।
उदासीनता मानचित्र यह स्पष्ट करता है की उपभोक्ता

PAGE NO. :
DATE : / /

जैसे नीचे से ऊपर की ओर बढ़ता है वैसे वैसे उसकी सन्तुष्टि भी बढ़ती जाती है सबसे नीचे वाला वर्क कम सन्तुष्टि को तथा सबसे ऊपर वाला वक्र अधिक सन्तुष्टि को प्रदर्शित करता है।

उदासीनता वक्रों की विशेषताएँ :—

① उदासीनता वक्र पर सभी बिन्दु समान उपयोगिता (सन्तुष्टि) प्रदान करते है :—
उदासीनता वक्र पर सभी बिन्दु वस्तुओं के ऐसे संयोगों को व्यक्त करता है जिससे उपभोक्ता को समान सन्तुष्टि मिलती है

② एक उदासीनता वक्र के दाँयी ओर अधिक ऊँचा दूसरा उदासीनता वक्र सन्तुष्टि के ऊँचे स्तर को तथा दो वस्तुओं के श्रेष्ठतम संयोगो को व्यक्त करता है
एक उपभोक्ता के लिए अनेक उदासीनता वक्र होते है किसी भी उदासीनता वक्र IC_1, की दाँयी तरफ का उदासीनता वक्र IC_2, IC_3, व IC_4 अधिक ऊँचे सन्तुष्टि के स्तर को व्यक्त करता है।

③ एक उदासीनता वक्र ऊपर से नीचे दाँयी ओर झुकता है।

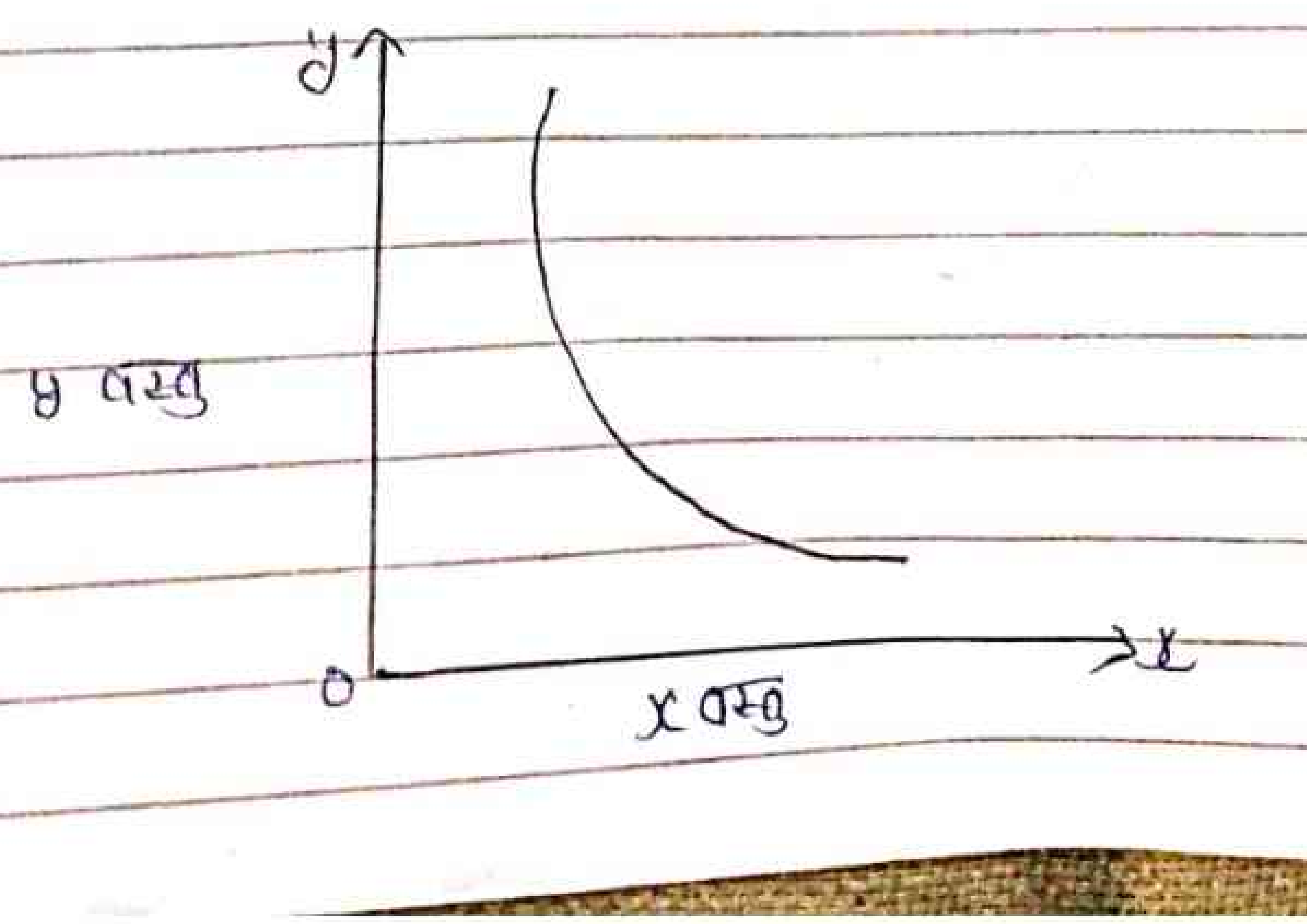

उदासीनता वक्रों का ढाल ऋणात्मक होता है अर्थात ऊपर से नीचे ढाँची और झुके होते है ऐसा होना स्वाभाविक है उपभोक्ता को समान सन्तुष्टि के स्तर पर बने रहने के लिए x वस्तु की मात्रा मे वृद्धि होने पर y वस्तु की मात्रा मे कमी करनी पडती है जिसके कारण यह ऊपर से नीचे की तरफ ढाँची और झुकते है

(4) उदासीनता वक्र मूल बिन्दु के उन्नोदर होते है :—

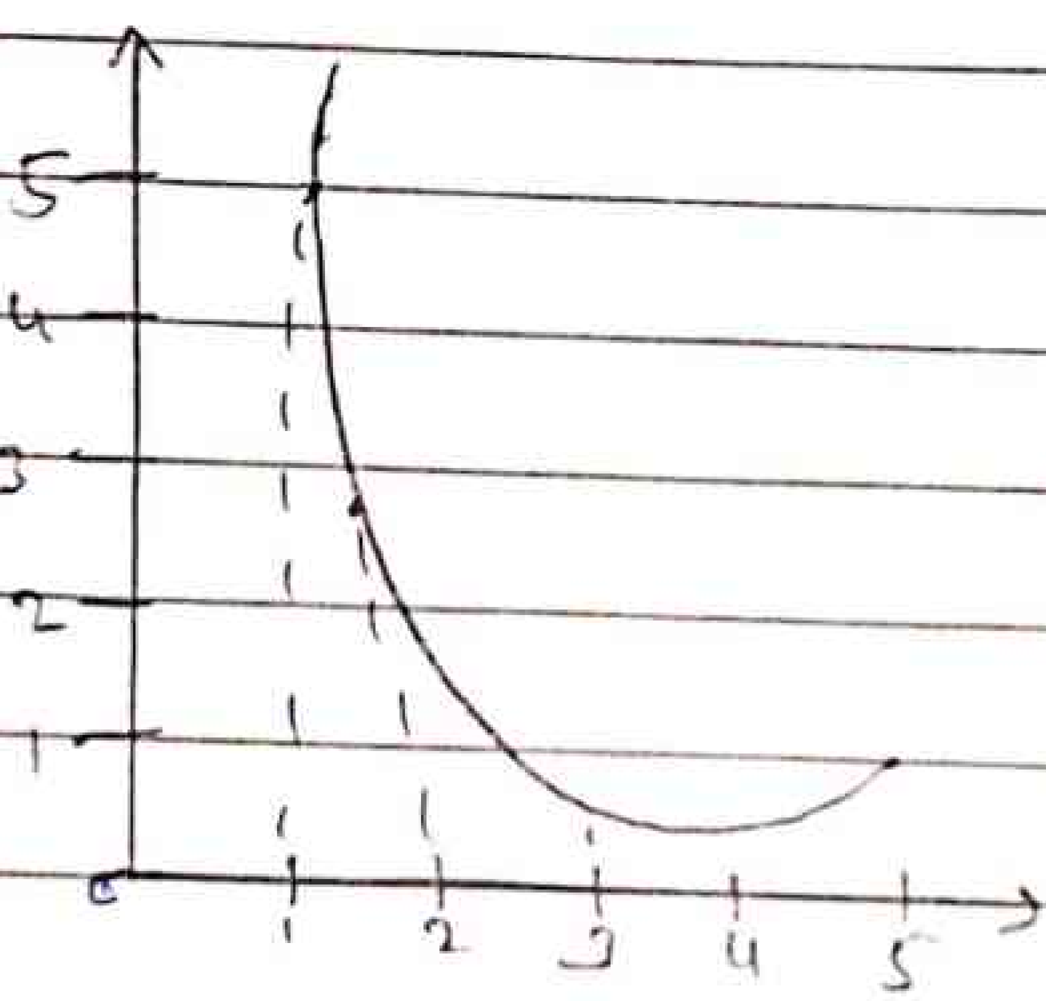

Explain :—

एक उदासीनता वक्र से अधिक एक उदासीनता वक्र मूल बिन्दु के उन्नोतर इसलिए होता है क्योंकि उदासीनता वक्र बाएँ से दाँए नीचे की ओर चलता है अर्थात x वस्तु की अगली इकाई के लिए y वस्तु का त्याग करना पडता है जो की घटती हुई सीमान्त प्रतिस्थापन कि मान्यता पर आधारित है अतः इस कारण से प्रत्येक उदासीनता वक्र मूल बिन्दु के उन्नोतर ही होते है

(5) उदासीनत वक्र कभी भी एक दूसरे को नही काटते है

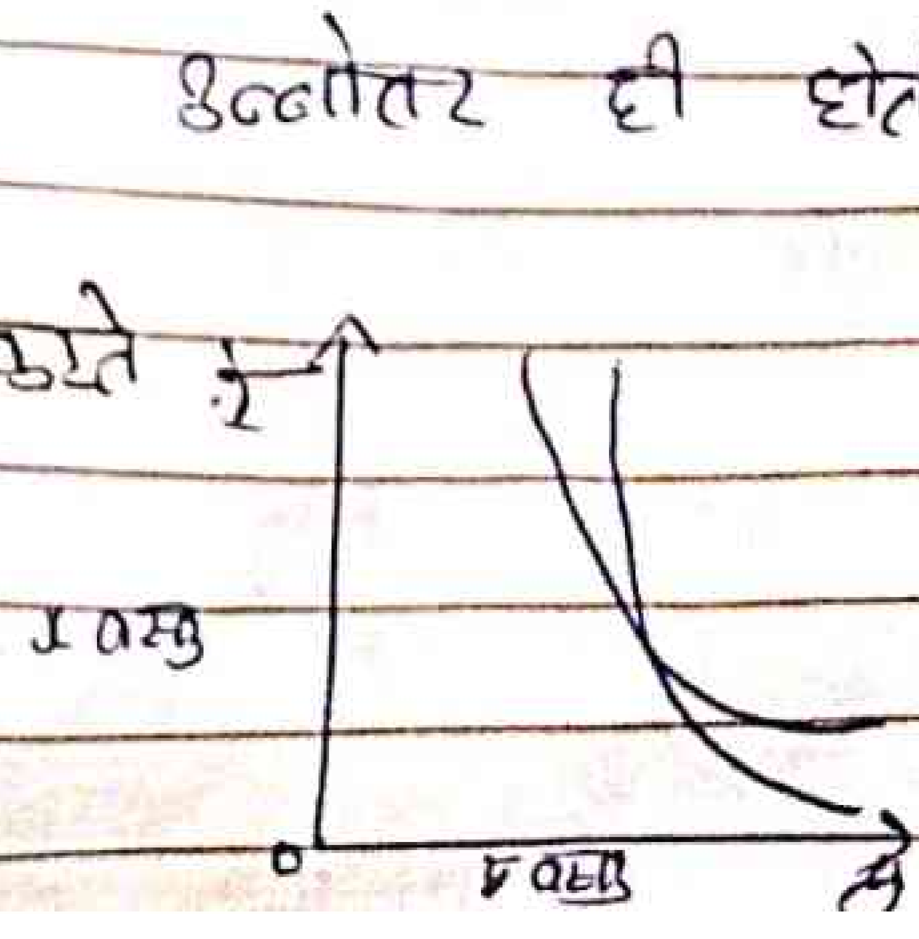

Explain :— उदासीनता वक्र कभी भी एक दूसरे को नही काटते है यदि दो या अधिक उदासीनता वक्र एक दूसरे को काटते है तो मान्यता टूट जाती है की उदासीनता वक्र के सभी बिन्दु समान (सन्तुष्टि) को बताते है।

(vi) उदासीन वक्र कभी, भी अपने अक्ष को स्पर्श नही करता :-

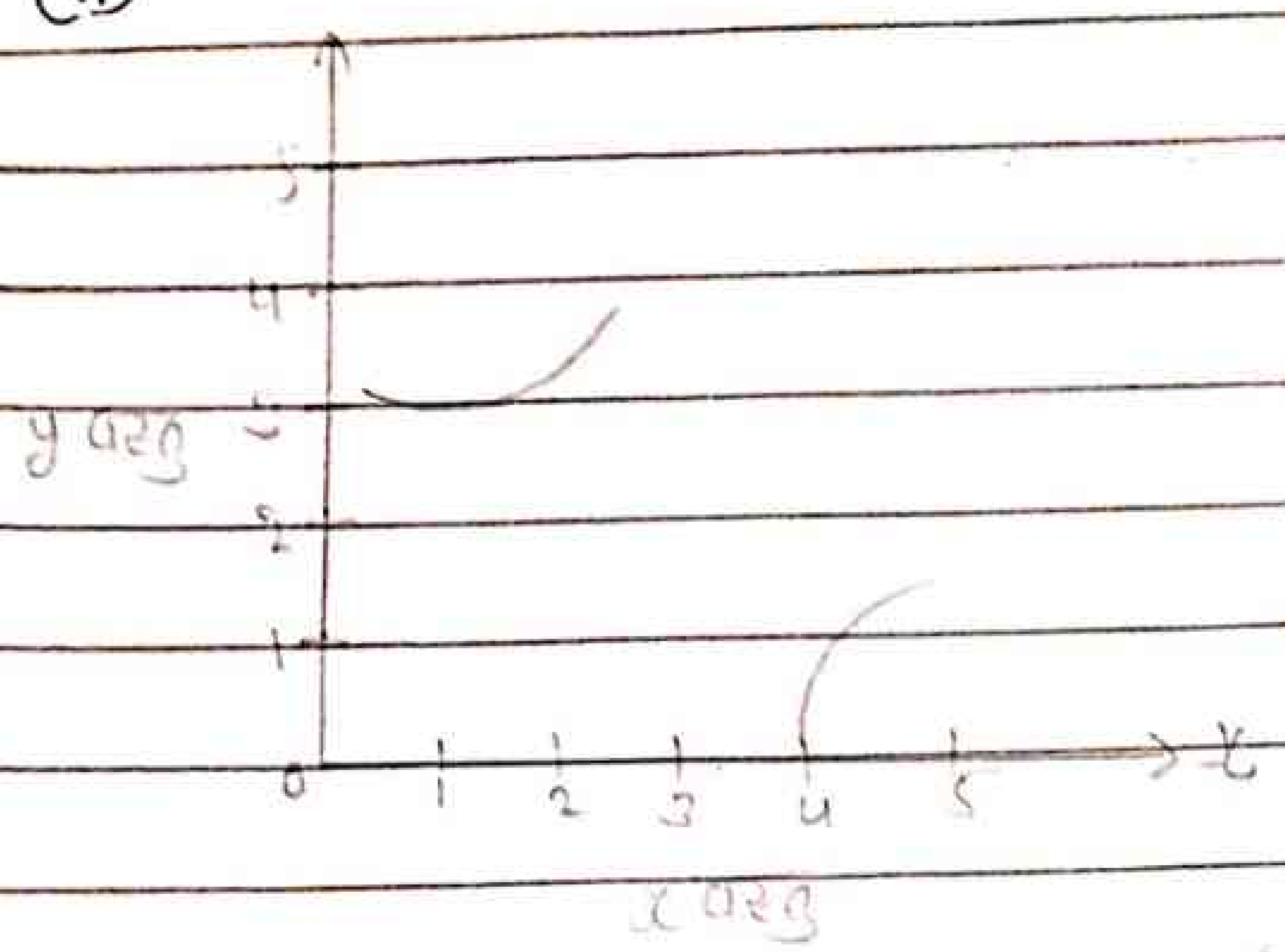

उदासीनता वक्र की परिभाषा देते हुए बताया गया था कि उदासीनता वक्र वह रेखा है जो दो या दो से अधिक वस्तुओ के इन विभिन्न संयोगो को बताती है जिससे उपभोक्ता को समान सन्तुष्टि प्राप्त होती है। यदि कोई उदासीनता वक्र ox या oy को स्पर्श करता है तो उपभोक्ता
तो उपभोक्ता केवल एक ही वस्तु का उपभोग कर पाता है जो उदासीनता वक्र की परिभाषाओं को गलत ठहराती है। अत: उदासीनता वक्र कभी भी अपने अक्ष को स्पर्श नही करता है।

(vii) यह आवश्यक नही है कि उदासीनता वक्र एक दूसरे के समान्तर है।

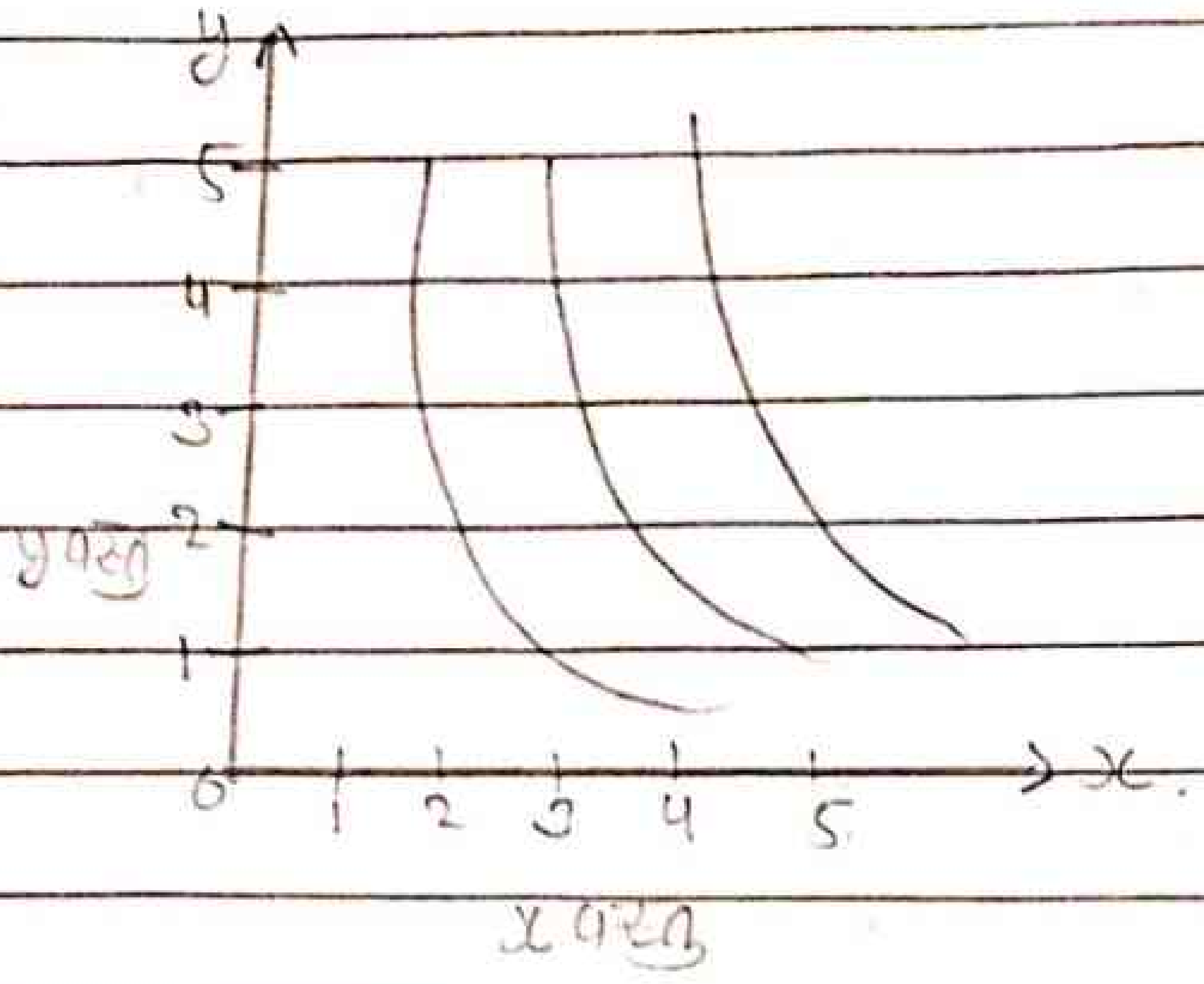

सभी उदासीनता वक्र एक दूसरे के समानान्तर नहीं होते हैं किन्तु सभी उदासीनता वक्रों का ढाल ऋणात्मक होता है अत: यह ऊपर से नीचे दायीं ओर झुके होते हैं परन्तु सभी उदासीनता वक्रों अवनति गिरने की दर समान हो यह आवश्यक नहीं। अत: उदासीनता वक्र एक दूसरे के समानान्तर हो यह आवश्यक

DATE: / /

Q. सीमान्त उपयोगिता नियम क्या है कुल उपयोगिता और सीमान्त उ० मे अन्तर बताते हुए सिद्ध कीजिए कि कुल उपयोगिता उस समय अधिकतम होती है जब सी० उ० शून्य होती है।

① Utility :- उपयोगिता
किसी वस्तु अथवा सेवा द्वारा मानवीय आवश्यकता को सन्तुष्ट करने की शक्ति अथवा क्षमता को उपयोगिता कहते है जब तक किसी वस्तु अथवा सेवा मे मनुष्य की आवश्यकता को सन्तुष्ट करने की शक्ति रहती है तब तक उस वस्तु मे उपयोगिता का निवास रहता है जैसे रोटी मे भूख मिटाने की क्षमता होती है तो वह रोटी की उपयोगिता है। अतः वस्तु व सेवा की उपयोगिता उसके लाभदायक अथवा हानिकारक होने पर निर्भर नही होती बल्कि मानविय आवश्यकता की सन्तुष्टि पर निर्भर करती है।

① सीमान्त उपयोगिता
② कुल उपयोगिता
③ औसत उपयोगिता

① Marginal Utility :- (सीमान्त उपयोगिता)
किसी निश्चित समय मे उपभोग की गई इकाईयो मे से अंतिम इकाई को सीमान्त इकाई कहते है और सीमान्त इकाई से प्राप्त उपयोगिता को सीमान्त उपयोगिता कहते है अर्थात उपभोक्ता किसी वस्तु की विभिन्न इकाईयो का उपयोग एक के बाद दूसरी दूसरी के बाद तीसरी, तीसरी के बाद चौथी और आगे भी इसी क्रम मे करता रहता है अतः उस वस्तु की एक अतिरिक्त इकाई के उपभोग करने पर

PAGE NO.:
DATE: / /

जो अतिरिक्त उपयोगिता प्राप्त होती है। वह सीमान्त उपयोगिता कहलाती है।

(2) Total Utility :- (कुल उपयोगिता)
उपभोक्ता द्वारा किसी वस्तु की उपभोग की गई समस्त इकाईयों से प्राप्त उपयोगिता का योग ही कुल उपयोगिता कहलाती है कुल उपयोगिता में सी० उ० का योग होता है।

(3) Average Utility :- औसत उपयोगीता
उपभोक्ता द्वारा किसी वस्तु की उपभोग की गई समस्त इकाईयों में प्राप्त कुल उपयोगिता में कुल इकाईयों का भाग देने पर औसत उ० प्राप्त हो।

(1) कुल उपयोगिता किसी वस्तु की विभिन्न इकाइयों के उपभोग से उपयोगिताओं का योग होता है जबकि सीमान्त उपयोगिता कहलाती किसी वस्तु की एक अधिक इकाई के उपभोग करने से कुल उपयोगिता में होने वाला परिवर्तन

(2) कुल उपयोगिता का आकलन किसी वस्तु की विभिन्न इकाईयों से प्राप्त सी० उ० के योग से किया जा सकता है।

$$TU = \Sigma MU$$

जबकी सीमान्त उपयोगिता का आकलन कुल उपयोगिता मे परिवर्तन हो, वस्तु की मात्रा मे हुए परिवर्तन का भाग देकर ज्ञात करते है

$$MU = \frac{\Delta TU}{\Delta Q}$$

PAGE NO
DATE / /

③ किसी वस्तु की अतिरिक्त इकाईयों का जैसे जैसे अधिक उपभोग किया जाता है तो उससे मिलने वाली सी० उ० घटती जाती है परन्तु कुल उपयोगिता वस्तु के प्रत्येक अतिरिक्त इकाई के उपभोग से तब तक बढ़ती रहती है जब तक उपभोक्ता पूर्ण सन्तुष्टि बिन्दु तक न पहुँच जाए। अर्थात जिस बिन्दु पर सि० उ० शुन्य हो न जाए

④ कुल उपयोगिता हमेशा धनात्मक होती है जबकि सी० उ० धनात्मक शुन्य एवं ऋणात्मक भी हो सकती है।

⑤ जब सी० उ० शुन्य होती है तब कुल उ० सर्वाधिक या अधिक होती है।

⑥ सी० उ० ही कुल उ० की दर का निर्धारण करती है

किसी निश्चित समय मे जब किसी वस्तु की अतिरिक्त इकाई का प्रयोग किया जाता है तो वस्तु की प्रत्येक आली इकाई से मिलने वाली उपयोगिता अन्य बाते स्थिर रहने पर पिछली इकाई से कम हो जाती है इस घटती हुई सी० उ० का प्रवृति को ही सीमा० उ० ह्रास नियम कहते है।

" जब किसी वस्तु की मात्रा बढ़ती है तो उससे प्रत्येक आने वाली इकाई से घटती हुई दर से उ० प्राप्त होती है अन्य बाते स्थिर रहने पर यह नियम लागू होता है।

PAGE NO. :
DATE : / /

उपर्युक्त परिभाषा के आधार पर निष्कर्ष के रूप मे यह कहा जा सकता है की एक व्यक्ति जब किसी निश्चित समय मे इकाई का उपभोग करता है तो प्रत्येक अतिरिक्त इकाई से मिलने वाली सी० उ० घटती हुई होती है। जो प्रारम्भ मे धनात्मक फिर शुन्य तथा अन्त मे ऋणात्मक हो जाती है।

माना राम की आय अपनी आय का उपभोग करता है जिससे उसे जो उपयोगिता मिलती है वो निरन्तर घटती हुई रहती है जिसे निम्न तालिका से स्पष्ट किया जा सकता है।

राम द्वारा आम के उपभोग से प्राप्त उपयोगिता

1	6	धनात्मक
2	4	
3	2	
4	0	शुन्य
5	-2	ऋणात्मक

उपभोक्ता को आम से प्रत्येक अगली इकाई से प्राप्त होने वाली उपयोगिता घटती रहती है प्रथम इकाई से प्राप्त सी० उ० 6 तथा द्वितीय इकाई से प्राप्त सी० उ० 4 व तीसरी इकाई से प्राप्त सी० उ० 2 यदि इसके बाद भी राम द्वारा और अधिक इकाइयों का उपभोग किया जाता है तो

PAGE NO. :
DATE : / /

इसकी उपयोगिता शून्य हो जायेगी तथा इसके पश्चात भी अतिरिक्त इकाई का उपभोग करता है तो इसकी सी० उ० ऋणात्मक हो जायेगी जैसे की अनुतालिका मे दर्शाया गया है।

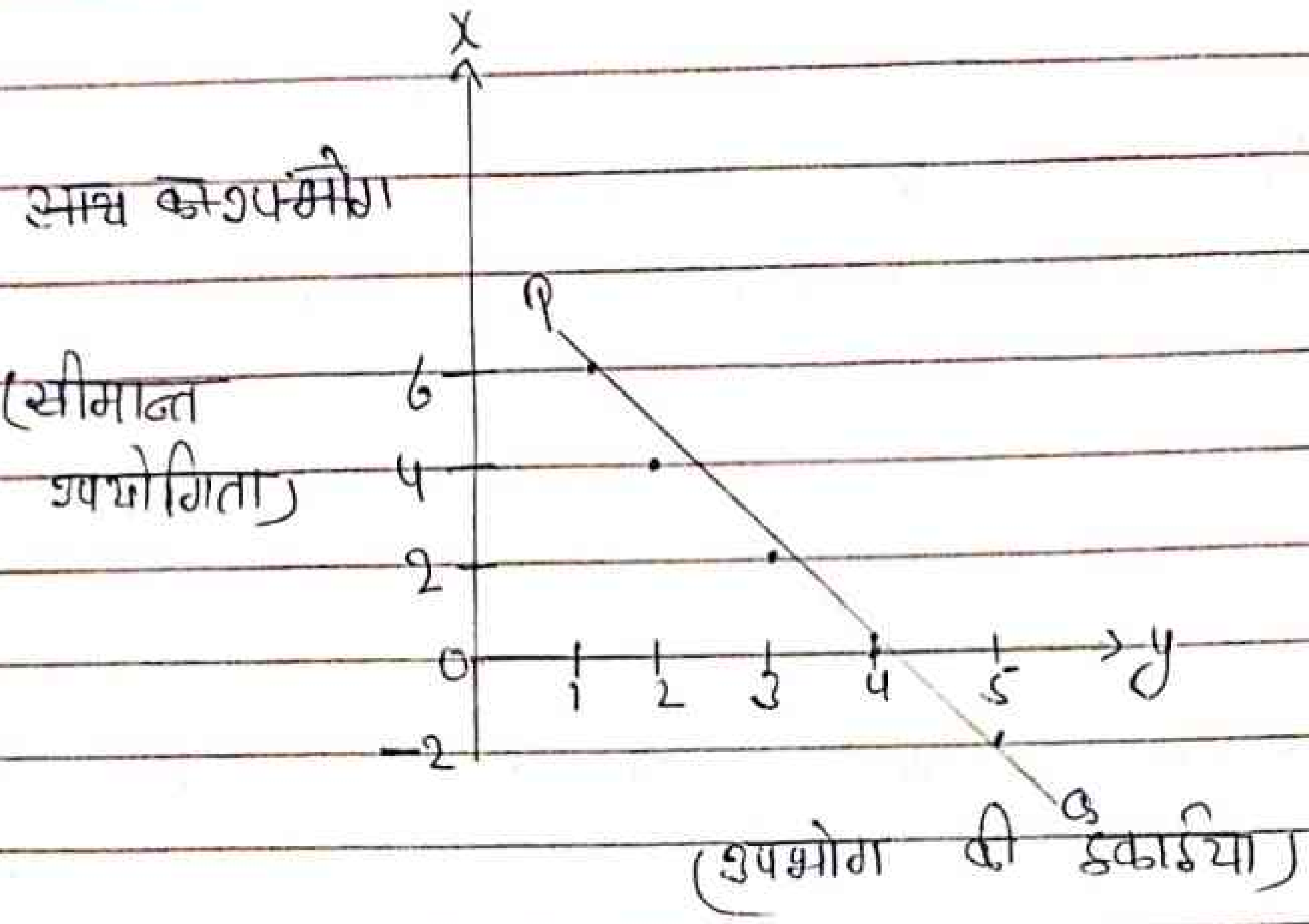

उपरोक्त रेखाचित्र मे O,X अक्ष पर आम की इकाईया या संख्या तथा O,Y अक्ष पर विभिन्न इकाईयों से प्राप्त सी० उ० दी गई है यदि कोई उपभोक्ता आम की एक इकाई का उपभोग करता है। तो उसकी सी० उ० 6 होगी और यदि आम की दो इकाई का उपभोग करता है तो सी० उ० 4 होगी इसी प्रकार यदि आम की तीसरी इकाई का उपभोग करता है तो सी० उ० घटकर दो रह जायेगी और इसके बाद भी आमों की संख्या का उपभोग बढ़ाकर 4 किया जाता है तो सी० उ० शून्य हो जायेगी। और यदि आम की इकाई को और बढ़ते है तो सी० उ० ऋणात्मक हो जायेगी। इसी प्रकार हमे एक P,Q रेखा प्राप्त होती है जो सी० उ० की घटती हुई दर को प्रदर्शित करती है।

Q. सी० उ० ह्रास नियम लागू होने के कारण बताते हुए इस नियम के महत्व पर भी प्रकाश डालिए।

Ans. सी० उ० ह्रास नियम लागू होने के कारण :—

(I) Decrease in intensity of need :- (आवश्यकता की तिव्रता मे कमी) :—

उपयोगिता आवश्यकता की तीव्रता पर निर्भर करती है अत: जैसे जैसे वस्तु की इकाईयां बढती जाती है आवश्यकता की तीव्रता कम होती जाती है और इसलिए प्रतेक अगली इकाई से प्राप्त उपयोगिता भी कम हो जाती है।

(ii) Things are not perfect substitutes for each other :- (वस्तुएँ एक दूसरे ~~एक दूसरे~~ की पूर्ण स्थानापन्न नही हो)

वस्तुएँ एक दूसरे की पूर्ण स्थानापन्न नही होती इसी कारण जब एक उपभोक्ता किसी एक वस्तु की अतिरिक्त इकाई का उपभोग करता है तो उसकी सी० उ० घटती जाती है। इसलिए यह नियम लागू होता है।

(iii) Satisfaction of need :— (आवश्यकता की सन्तुष्टि)

किसी वस्तु की आवश्यकता कितनी भी तीव्र क्यो ना हो उसकी सन्तुष्टि की जा सकती है। यही कारण है की हमारे द्वारा उस वस्तु की इकाईयो मे वृद्धि करने के साथ साथ उसका महत्व कम होता जाता है। इसलिए प्रत्येक आगे की इकाई की सी० उ० घटती जाती है। पूर्ण सन्तुष्टि हो जाती है।

(iv) Importance of Law of Diminishing M.U. :- सी० उ० ह्रास नियम के महत्व

(1) सेधान्तिक महत्व

PAGE NO
DATE / /

(2) व्यावहारिक महत्व

Semantic importance :— (सैद्धान्तिक महत्व) :— इस नियम का उपयोग अर्थशास्त्र के अन्य नियमों का प्रतिपादन करने के लिए किया जाता है।

*(i) Rule of Demand :— (मांग का नियम) इस नियम के अनुसार यदि एक उपभोक्ता किसी एक वस्तु की अधिक इकाईयों का उपभोग करता है तो उसे कम उपयोगिता प्राप्त होती है अतः उस वस्तु की अधिक इकाइयाँ कम मूल्य पर प्राप्त करनी चाहिए। इसके विपरीत अगर वह कम इकाईयों का उपभोग करता है तो उसे अधिक उपयोगिता मिलती है अतः वह उन वस्तुओं को अधिक मूल्य पर प्राप्त करने के लिए तैयार हो जाए।

(ii) Law of Equi Marginal Utility :— (सम सीमान्त उपयोगिता नियम) सम सीमान्त उपयोगिता नियम भी इसी पर आधारित है। सम सीमान्त उपयोगिता नियम यह बताता है की एक उपभोक्ता अपने सीमित आय से अधिकतम सन्तुष्टि प्राप्त करना चाहता है। वह ऐसा तभी कर सकता है। जब वह किसी एक वस्तु की अधिक इकाइयों के उपभोग से सीमान्त उपयोगिता घटती हुई प्राप्त होती है। अतः वह एक वस्तु की अधिक इकाईयाँ खरीदने के बजाए दूसरी वस्तु की अधिक इकाईयों का उपभोग करता है। जिससे उसे अधिक उपयोगिता मिलती है अतः वह विभिन्न वस्तुओं का ऐसा संयोग बनाता है जिससे

PAGE NO.
DATE

प्रत्येक वस्तु की अन्तिम इकाई से समान सन्तुष्टि प्राप्त होती है।

(iii) Savings of Consumer :— (उपभोक्ता की बचत)
उपभोक्ता की बचत के विचार का आधार यह भी एक तथ्य है की उपभोक्ता सभी इकाईयों के लिए प्रति इकाई मुल्य सि० उ० से प्राप्त उपयोगिता से अधिक नहीं दे सकता। उसे सी० इकाई के पूर्व की इकाई से अपेक्षाकृत अधिक उ० प्राप्त होती है

(1) Principles of price :— (मुल्य सिद्धान्त) किसी वस्तु की पूर्ती अधिक होने पर उसकी सी० उ० गिरती चली जाती है। अतः उसका विक्रय मुल्य भी गिरता जाता है इस प्रकार यह नियम मुल्य सिद्धान्त पर आधारित है।

(2) Practical importance :— (व्यवहारिक महत्व)
(1) Base of production :— (उत्पादन का आधार)
इस नियम के द्वारा विभिन्न वस्तुओ का उत्पादन करने के लिए प्रेरित होता है किसी एक वस्तु का अधिक उत्पादन होने से उपभोक्ता को उस वस्तु से मिलने वाली उपयोगिता कम हो जाती है। इस कारण उस वस्तु की कम मात्रा खरीदेंगे और उत्पादक को उस वस्तु के उत्पादक से कम लाभ मिलता इस कारण वह नयी-नयी वस्तुओं का उत्पादन करता है

⑧ The basis of the tax system (कर प्रणाली का आधार)
धनी व्यक्तियों के लिए मुद्रा की सी० उ० कम होती है जबकी गरीब व्यक्तियों के लिए मुद्रा की सी० उ० अधिक होती है। अतः इस प्रकार आधार पर सरकार प्रगतिशील कर प्रणाली का उपयोग करती है।

⑨ Redistribution of wealth :— (धन का पुनः वितरण)
धनी व्यक्तियों के लिए धन की सी० उ० कम होती है। अतः सरकार द्वारा उनसे कर के रूप मे धन लेकर निर्धन वर्ग को दिया जाना चाहिए। क्युकि निर्धन वर्ग के लिए धन की उपयोगिता अधिक होती है।

Third unit

Q.2 पूर्ण प्रतियोगिता से आप क्या समझते है? पूर्ण प्रतियोगिता की विशेषताओं का वर्णन किजिए। तथा उपयुक्त रेखचित्र की सहायता से पूर्ण प्रतियोगिता के अन्तर्गत अल्पकाल व दिर्घकाल से फर्म का साम्य सन्तुलन समझाईये।
[अलपकाल व दिर्घकाल मे कीमत व उत्पादन का निर्धारण]

* Perfect camptition :— (पूर्ण प्रतियोगिता)
पूर्ण प्रतियोगिता वह बाजार की स्थिति होती है जिसमे अनेक क्रेता तथा अनेक विक्रेता होते है पूर्ण प्रतियोगिता मे समान एवं समरूप वस्तुएं पाई जाती है।

→ परिभाषा :— श्रीमती जो रोबींसन के अनुसार पूर्ण प्रतियोगिता की स्थिती मे तब पाई जाती है

PAGE NO. :
DATE : / /

जब प्रत्येक उत्पत्ति की मांग प्रकृति लोचदार होती है। इसके अन्तर्गत विक्रेताओ की संख्या बहुत अधिक होती है तथा एक विक्रेता कुल उत्पादन का बहुत कम माल उत्पादक करता है।

(2) Features of perfect competition :- (पूर्ण प्रतियोगिता की विशेषताएँ)

(1) पूर्ण प्रतियोगिता बाजार मे अनेक क्रेता तथा अनेक विक्रेता होते है (2) समान एवं समरूप वस्तुएँ पाई जाती है।
(3) क्रेता और विक्रेता को बाजार की पूर्ण जानकारी होती है।
(4) बाजार मे साधनो की पूर्ण गतीशिलता
(5) क्रेता और विक्रेता मे क्रय विक्रय की पूर्ण प्रतिस्पर्धा
(6) सम्पूर्ण बाजार मे समरूप वस्तुओ का एक समान मूल्य रहने की प्रबल प्रवृति
(7) बाजार मे फर्मो का प्रवेश व बहिर गमन की पूर्ण स्वतंत्रता
(8) दिर्घ काल मे केवल सामान्य लाभों की स्थिति।
(9) परिवहन लागतो का अभाव।
(10) बाजार मे $P = AR = AC = MR$

(3) Equilibrium or price determination of a firm in the short run under per. com. पूर्ण प्रतियोगिता मे अल्पकाल मे फर्म का साम्य सन्तुलन या कीमत निर्धारण

बाजार मे मूल्य का निर्धारण सभी फर्मो के द्वारा की जाने वाली सामुहिक पूर्ति तथा सम्पूर्ण बाजार की मांग की पारस्परिक शक्तियों के सन्तुलन से होता है।

PAGE NO. :
DATE : / /

सभी व्यक्तिगत फर्में मिलकर उद्योग कहलाती है अतः बाजार मे मुल्य का निर्धारण उद्योग की कुल पूर्ति तथा बाजार की कुल मांग की शक्तियों के साम्य से ऐसे बिन्दु से होता है जहाँ वस्तुओं की पूर्ति व मांग बराबर होती है अतः इससे स्पष्ट होता है की वस्तु का मुल्य निर्धारण उद्योग द्वारा होता है अल्पकाल मे फर्म के पास इतना समय नाही होता है की इसमे मांग के अनुसार पूर्ति मे परिवर्तन किया जा सके। केवल विद्यमान साधनों की सहायता से पूर्ति मे कुछ परिवर्तन किया जा सकता है। एक फर्म को अल्पकाल मे असामान्य लाभ व हानी या सामान्य लाभ हो सकता है।

* Assumptions regarding equilibrium state of the firm :— (फर्म की साम्य अवस्था की मान्यताऐं)

1. प्रत्येक फर्म का उद्देश्य अपने लाभों को अधिकतम करना होता है।
2. प्रत्येक फर्म या उत्पादक लागतो को न्यूनतम करने के लिए प्रयत्नशील है।
3. साधनो की सभी इकाइयां समरूप होती है
4. विभिन्न साधनों की कीमत का पूर्ण ज्ञान
5. कोई भी फर्म वर्तमान मुल्यो पर किसी भी साधन की जितनी इकाइयाँ चाहे उपयोग कर सकती है।

(8)

* Metho Price and output determination policies under perfect competition पूर्ण प्रतीयोगिता के अन्तर्गत कीमत एवं उत्पादन निर्धारण की नीतियाँ :—

PAGE NO.
DATE / /

(1) सीमान्त लागत व सी० आगम रीति
(2) कुल आय व कुल लागत रीति

(i) Mar. cost and Mar. revenue method :— (सी० लागत व सी० आगम रीति) इस रीति के अन्तर्गत फर्मों को तीन अवस्थाएँ प्राप्त होती है।
(1) लाभ की स्थिति (असामान्य लाभ)
(2) हानी की स्थिति
(3) सामान्य लाभ की स्थिति (न लाभ न हानी)

(i) Profitable situation :— (लाभ की स्थिति)

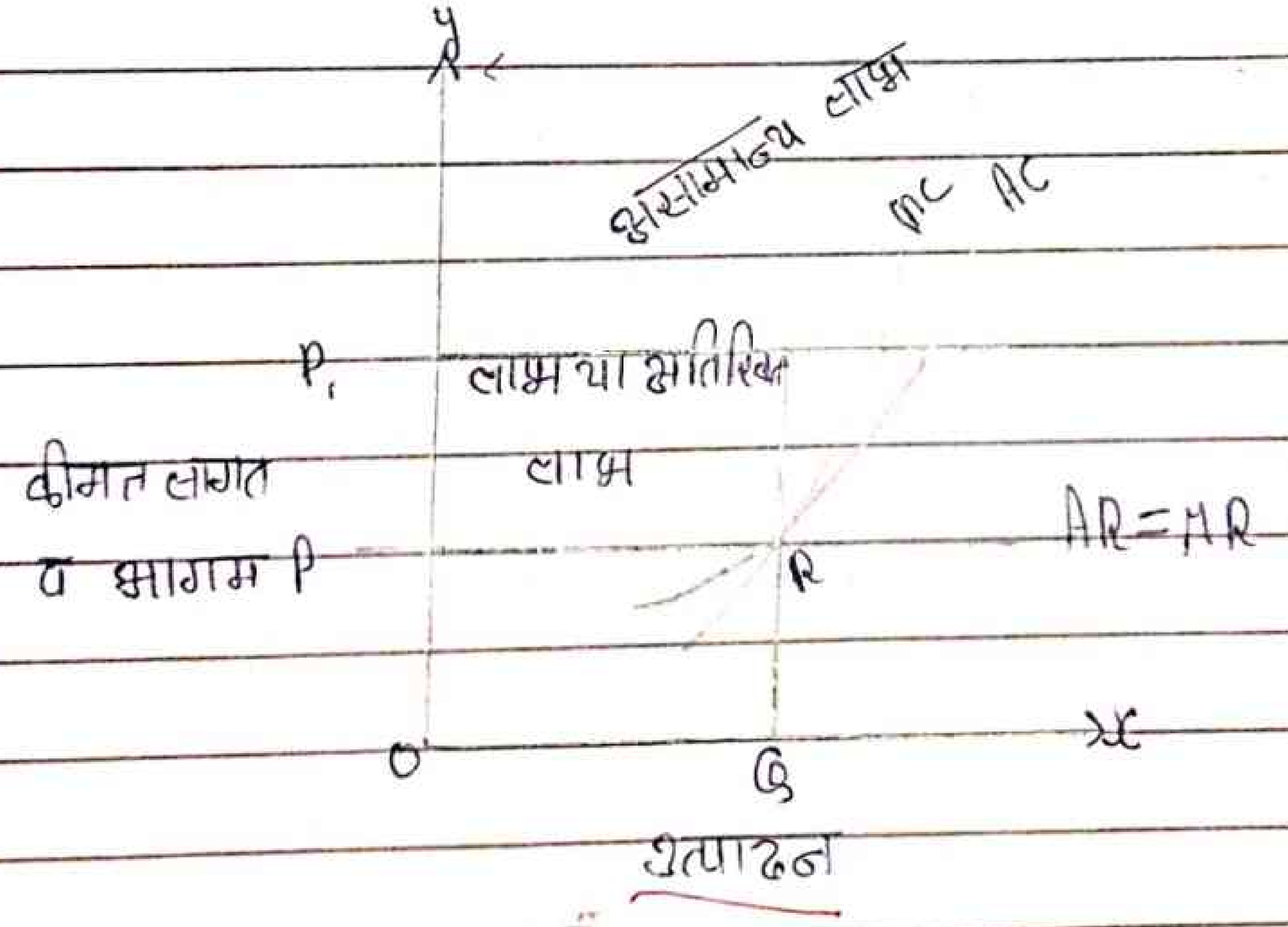

इस रेखाचित्र मे Ox अक्ष पर उत्पादन मात्रा व O,y अक्ष पर कीमत लागत व आगम दि गई है जिसमे AR=MR वक्र है। तथा MR आगम वक्र है तथा Ac. वक्र के न्यूनतम बिन्दु को काटता हुआ है जहां पर MC वक्र निकलता है यहाँ लागत का निर्धारित होगा तथा O,P S,Q आगम है व P, P₁ तथा S,R लागत है अतिरिक्त लाभ या लाभ है तथा Q,R, RQ लागत है।

(ii) Condition of loss. (हानि की स्थिति)

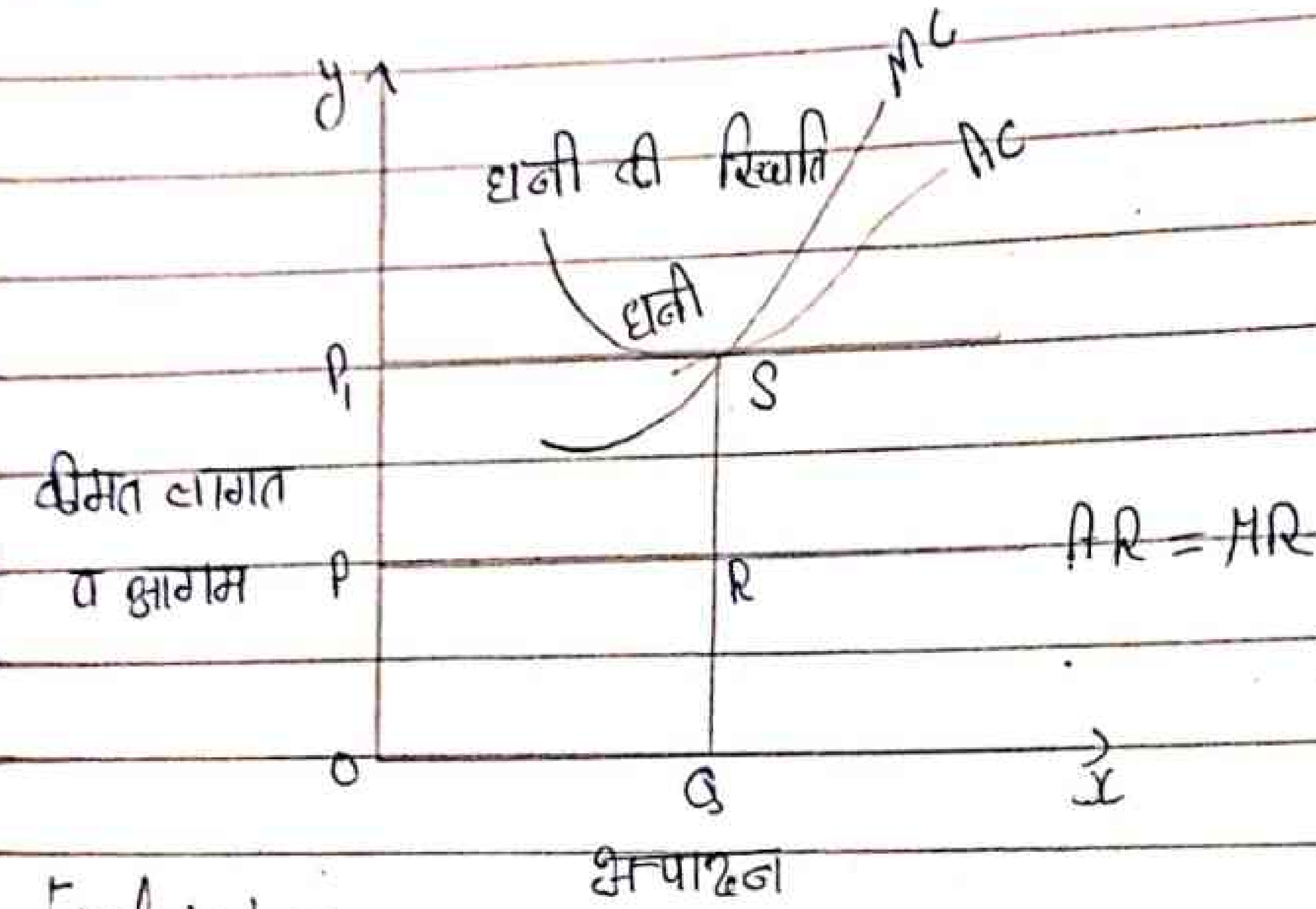

Explain :—

रेखाचित्र मे OX अक्ष पर उत्पादन मात्रा व OY अक्ष पर कीमत आगम व कीमत लागत है जिसमे AR = MR है आगम वक्र है तथा AC वक्र के न्यूनतम बिन्दु को काटता हुआ MC वक्र ऊपर की ओर बढता है जहां पर AC वक्र को MC वक्र काटता है वहीं लागत का निर्धारण होता है। रेखाचित्र मे OP, RQ आगम है। तथा OP1, SQ लागत है तथा PP1, SR हानी है।

(iii) Normal profit situation :— (सामान्य लाभ की स्थिति)

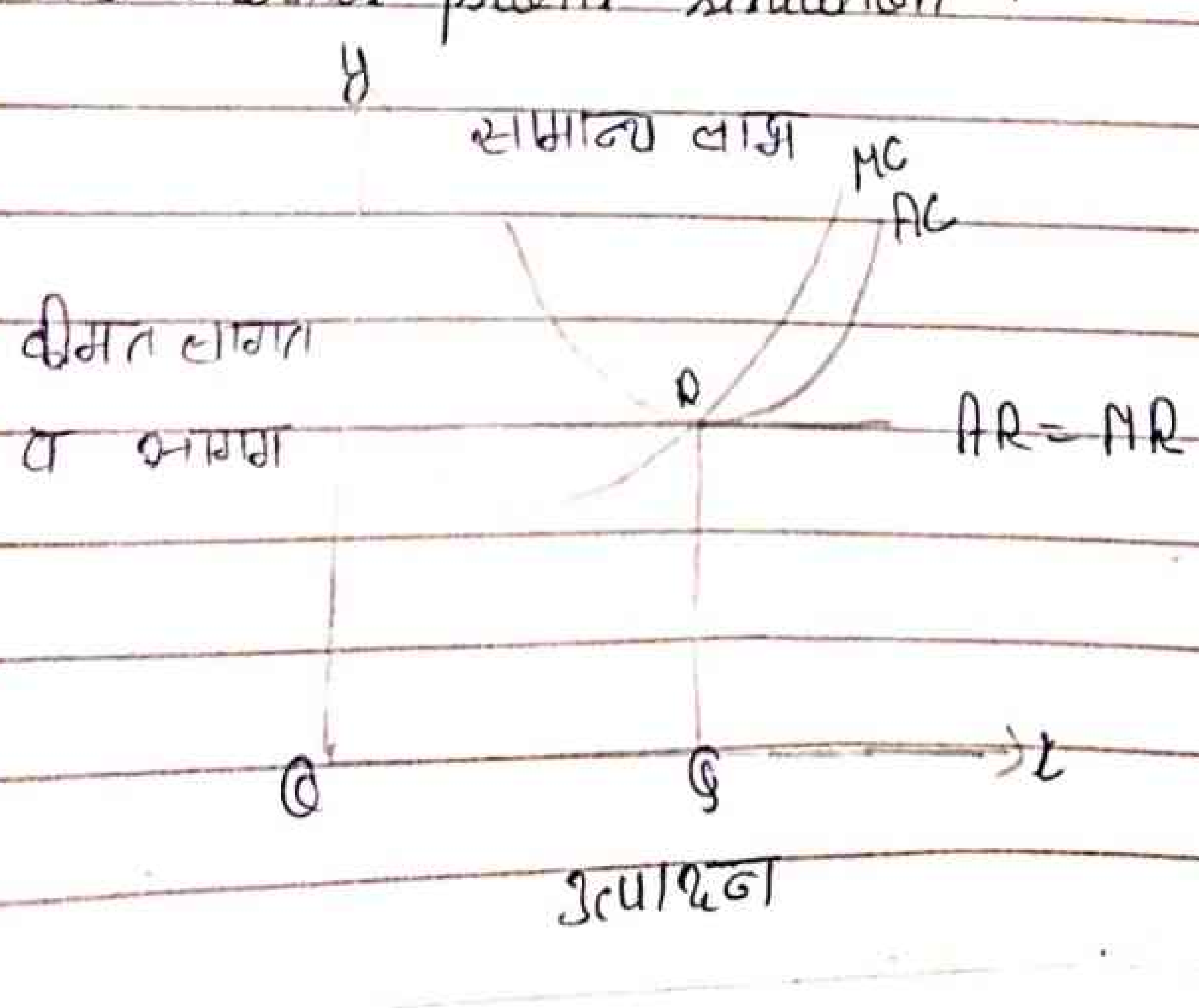

PAGE NO. :
DATE : / /

Explain :— रेखाचित्र मे OX अक्ष पर उत्पादन मात्रा व OY अक्ष पर कीमत लागत दी गई है जिसमे AR = MR वक्र है तथा AC वक्र के न्यूनतम बिन्दु को काटता हुआ MC वक्र ऊपर की ओर बढ रहा है जहाँ पर AC वक्र को MC वक्र काटता है वहाँ लागत का निर्धारण होता है रेखाचित्र मे OP, RQ लागत है व OP, RQ ही आगम है अतः इसमे आगम व लागत दोनो बराबर है इस स्थिति मे फर्म को सामान्य लाभ या न लाभ न हानी की स्थिति प्राप्त होती है।

(1) Total income and total cost method (कुल आय व कुल लागत विधी)

Units	Market price	TR	FC	VC	TC	MC	TR − TC
1	5	5	15	3	18	3	−13
2	5	10	15	5	20	2	−10
3	5	15	15	6	21	1	−6
4	5	20	15	6	21	0	−1
5	5	25	15	7	22	1	3
6	5	30	15	9	24	2	6
7	5	35	15	13	28	4	7
8	5	40	15	18	33	5	7
9	5	45	15	24	39	8	6
10	5	50	15	32	47	8	3

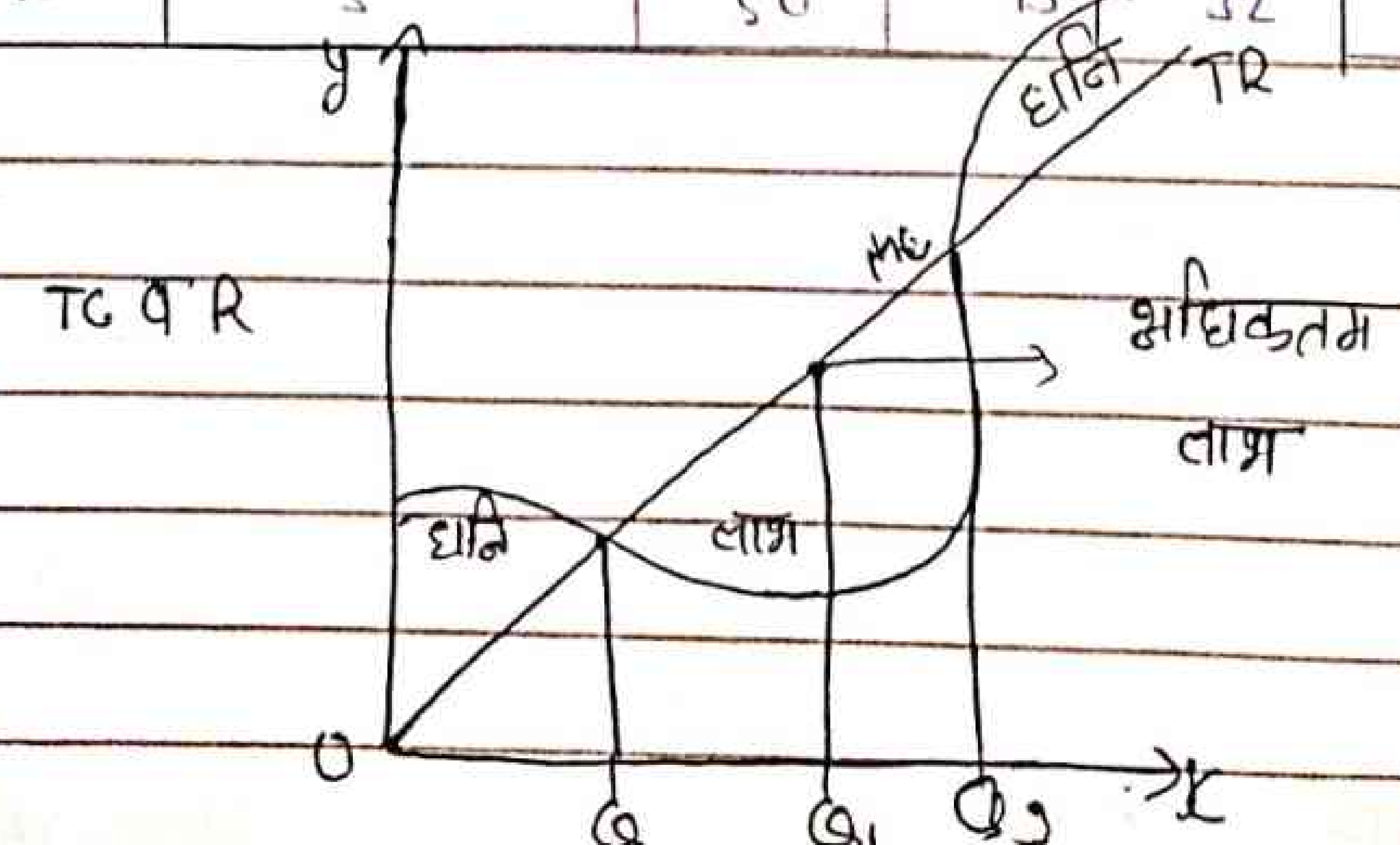

PAGE NO. :
DATE : / /

Explain :- फर्म का साम्य ज्ञात करने के लिए रेखाचित्र द्वारा स्पष्ट है की TR आगम रेखा है जबकी TC कुल लागत रेखा है दोनो के बीच मे बिन्दु A, L, व M तक का क्षेत्र जो लाभ का है इस फर्म का उत्पादन O से Q_2 तक इकाइयो पर साम्य अवस्था मे जहाँ A बिन्दु पर लाभ सर्वाधिक है। O, Q_1 से तथा औO, Q_3 मात्राओं पर कुल लागत तथा कुल आगम बराबर है। अतः L तथा M को समविच्छेद बिन्दु कहा जाता है।

Land Equilibrium of a firm in the long run under perfect camptition :-

पूर्ण प्रतियोगिता मे दिर्घकाल मे फर्म का साम्य :-

दिर्घकाल एक लम्बा समय होता है जिसमे फर्म अपने आकार को घटा या बढाकर उत्पादन की मात्रा को माँग के अनुसार कर सकती है अर्थात यदि माँग बढती है तो प्रति को भी बढाया जा सकता है दिर्घकाल मे उत्पादन के संयन्त्र तथा तकनीक मे भी परिवर्तन किया जा सकता है इससे उद्योग या फर्मों को दिर्घकाल मे केवल सामान्य लाभ प्राप्त होता है।

दिर्घकाल मे स्थिर लागतें तथा परिवर्तनशील लागतो का अन्तर समाप्त होकर सभी लागते परिवर्तनशील हो जाती है क्योकि फर्म के आकार तथा उत्पादन पैमाने मे परिवर्तन करने से सभी लागतें बदल जाती है।

दिर्घकाल मे फर्म साम्य अवस्था मे तब तक होती है। जब कीमत P = सीमान्त लागत (MC) = सिमान्त आगम (MR) = (AC) औसत लागत = (AR) औसत आगम. अर्थात P = MR = MC = AR = AC हो

PAGE NO.:
DATE: / /

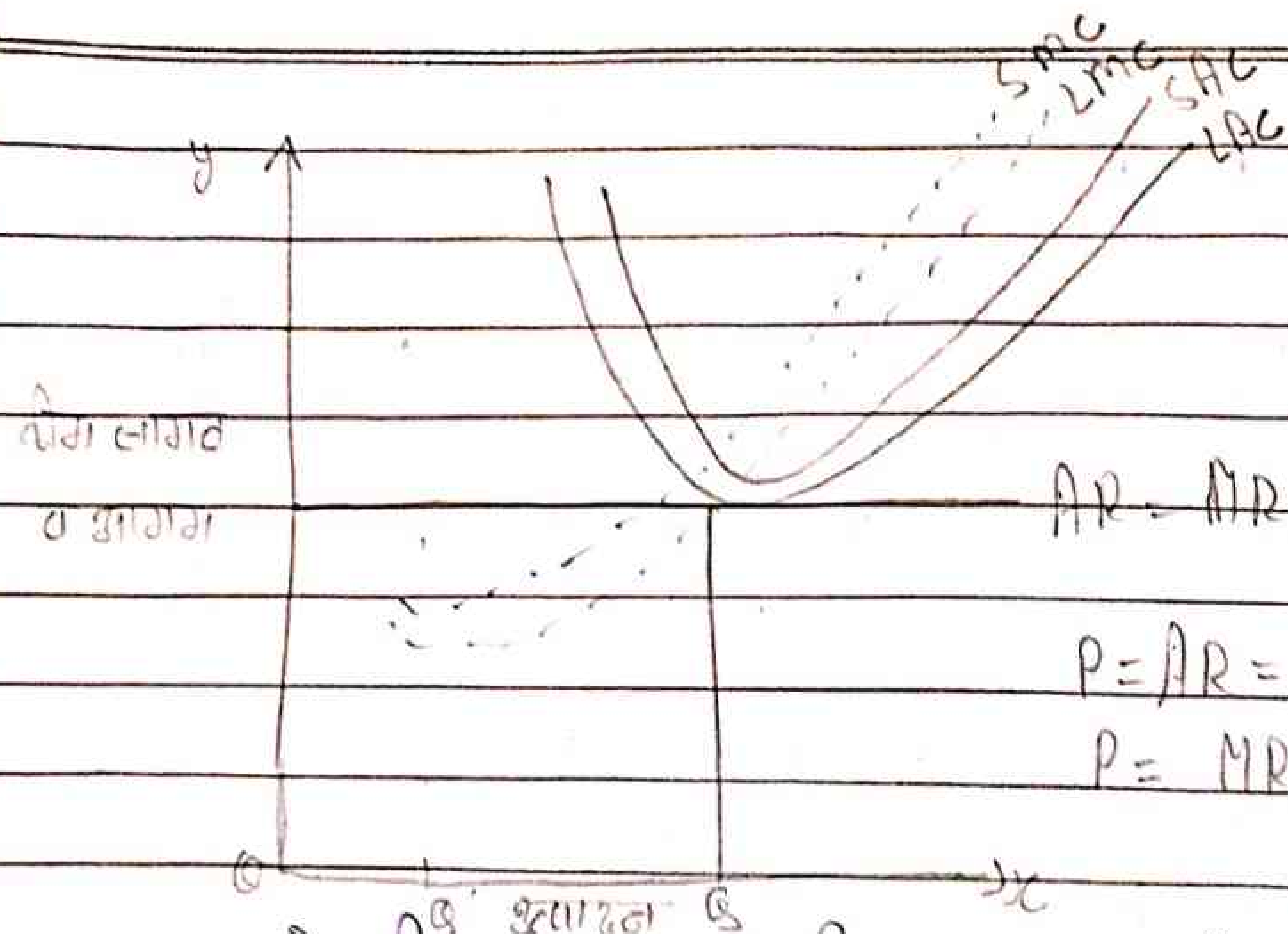

$P = AR = AC = MR = MC$

$P = MR = MC = AR = AC$

प्रयुक्त रेखाचित्र में फर्म को P बिन्दु पर साम्य की स्थिति में तथा उत्पादन की मात्रा O.Q है तथा प्रति इकाई मूल्य PQ तथा प्रति इकाई लागत PQ है अतः PQ − PQ = 0 सामान्य लाभ होगा क्योंकि सीमान्त लागत = सीमान्त आगम है AR = AC की दोनों वक्र एक साथ प्राप्त हो रही है।

Ques :— परिवर्तनशील अनुपातों के नियम को समझाइए। परिवर्तनशील अनुपातों के नियम की अवस्थाएँ बताइएँ तथा दूसरी अवस्था को आर्थिक अवस्था क्यो कहते है

अथवा

Q. उत्पादन की तीनों अवस्थाओं की व्याख्या कीजिए उत्पादन की दूसरी अवस्था मे साधनों का उपयोग करना उपयुक्त क्यों माना जाता है उचित रेखाचित्र का उपयोग करते हुए स्पष्ट कीजिए।

अथवा

उत्पत्ति ह्रास नियम कि व्याख्या कीजिए तथा इसकी तीनो अवस्थाओं को समझाइए।

PAGE NO.:
DATE: / /

5 Ans:- परिवर्तनशील अनुपातों का नियम :- उत्पादन विभिन्न उत्पत्ति के साधनों [भूमि, पूँजी, श्रम, संगठन, साहस] के संयोग से होता है उत्पत्ति के नियम उत्पादन कर्ता को अपने उद्देश्यों की प्राप्ति मे यह बताने मे मदद करता है की उत्पादन के किस बिन्दु पर उत्पत्ति के साधनों का अनुपात उचित है।

परिवर्तनशील अनुपातो के नियम को किसी भी एक उत्पत्ति के साधन को चाहे वो भूमि हो, श्रम हो, या संगठन हो को स्थिर रखकर अन्य उत्पत्ति के साधनों को बढाया जाता है तो एक सीमा के बाद उत्पादन गिरने लगता है तो इस अवस्था को उत्पत्ति ह्रास नियम या परिवर्तनशील अनुपातों का नियम कहते है।

श्रीमती जॉन रोबिसन के अनुसार — उत्पत्ति ह्रास नियम यह बताता है कि किसी एक उत्पत्ति के साधन की मात्रा को स्थिर रखा जाए तथा अन्य साधनो की मात्रा मे लगातार वृद्धि की जाए तो एक निश्चित बिन्दु के बाद उत्पादन की घटती हुई दर से वृद्धि हुई अर्थात एक निश्चित बिन्दु के बाद उत्पादकता मे कमी आयेगी या उत्पादन गिरने लगेगा।

(1) First stage of Production :- (उत्पादन की प्रथम अवस्था)
उत्पादन की प्रथम अवस्था मे परिवर्तनशील साधन श्रम की चार इकाईयों के प्रयोग तक है इस अवस्था मे जैसे - जैसे श्रम की इकाईयां बढाई जाती है तो स्थिर साधन अपेक्षाकृत अदृश्य होने से सी. उ॰ व औसः उ॰ दोनों बढते है तथा कुल उ॰ भी बढता है। सी॰ उ॰ जब तक उत्तोत्तर दर से बढता है तो कु॰ उ॰ भी तेजी से बढता है।

यही कारण है की जब सी० उ० उच्चतम बिन्दु पर पहुँचता है तो कुल० उ० मे तेज गती से वृद्दि होती है रेखाचित्र मे सी० उ० वक्र के A बिन्दु पर 8 ख तक से ऊपर तक कु० उ० वक्र ऊपर की और बढता है तथा E बिन्दु के बाद कु० उ० सी० उ० मे गिरावट के कारण घटती हुई दर से बढता है। तथा प्रथम अवस्था के अन्त में सी० उ० व औसत० उ० दोनो बराबर रहते है प्रथम अवस्था को " बढते औसत उत्पादन की अवस्था भी कहते है।

Time	T.P.	M.P	A.P
1	10	10	10
2	30	20	15
3	60	30	20
4	80	20	20
5	90	10	18
6	96	0	15
7	80	-10	11.42
8	60	-20	7.5

सारणी संख्या 3.1

PAGE NO.:
DATE: / /

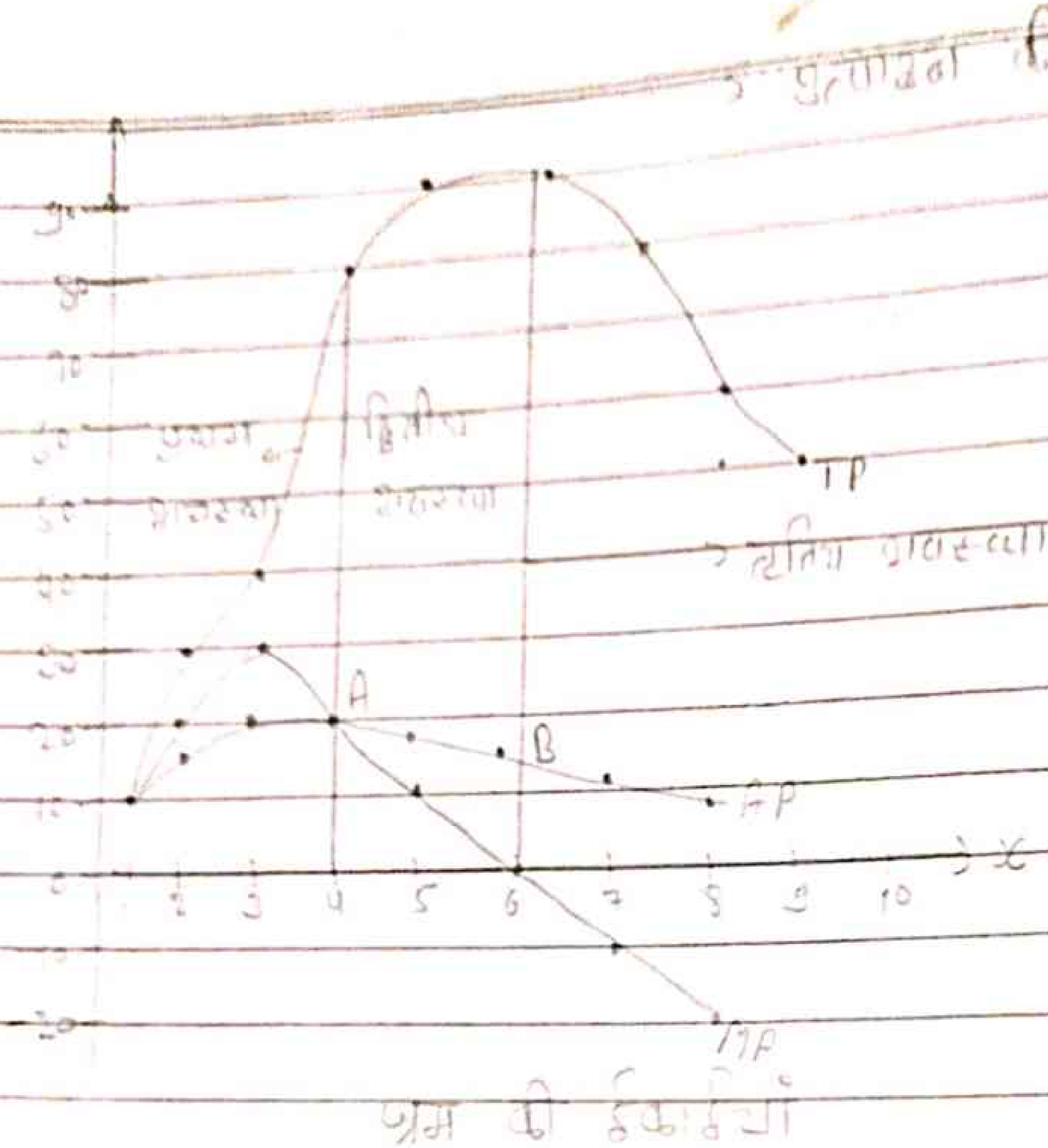

∴ उत्पादन की तीनो अवस्थाओं का चित्र द्वारा निरूपण

(2) Secound stage of production (द्वितीय अवस्था) — इस अवस्था मे सी० उ० व AP दोनो मे गिरावट होती है। तथा MP. AP की अपेक्षा तेज गती से गिरता है। इस अवस्था के अन्त मे MP शुन्य हो जाता है तो कुल उत्पादन अधिकतम हो जाता है। द्वितीय अवस्था मे सी० उ० धनात्मक रहता है तथा तेज गती से घटता है जिसके कारण कु उ० मे घटती हुई दर से बढता है। उपरोक्त रेखाचित्र से स्पष्ट है की श्रम की छटी इकाई पर MP. 0 हो जाता है तथा TP सर्वाधिक होकर 90 T हो जाता है अतः इस अवस्था को घटते प्रतिफल की अवस्था कहते है। क्योंकि इसमे MP व AP दोनो घटते रहते है

PAGE NO.:
DATE: / /

3) Third stage of Production:— यह वह अवस्था है जिसमे श्रम की सातवी इकाई का प्रयोग किया जाता है तो MP ऋणात्मक हो जाता है अतः श्रम की इकाईयों मे निरन्तर वृद्धि करने पर TP व AP दोनो मे कमी होती है जैसा की रेखाचित्र मे देखने पर स्पष्ट होता है कि श्रम की सातवी व आठवी इकाई का प्रयोग करने पर सी० पु० -10 तथा -20 टन है तथा इसी प्रकार कुल उत्पादन की भी पु० टन से होकर श्रम की नवी इकाई पर 50 टन ही रह जाता है तथा इसके बाद भी श्रम की 0 इकाईयों मे वृद्धि कि जाती है तो औसत उत्पादन व कुल उत्पादन दोनो मे तीव्र गती से गिरावट आयेगी। तृतीय अवस्था मे सी० पु० ऋणात्मक हो जाता है कुल पु० व औसत पु० मे कमी होती है।

* उत्पादन की द्वितीय अवस्था ही आर्थिक अवस्था सर्वाधिक प्रयुक्त अवस्था :— उपर्युक्त विवेचना मे स्पष्ट होता है कि उत्पादन विवेचन से र की दृष्टि से उत्पादन की प्रथम अवस्था व द्वितीय अवस्था की दोनो ही अनउपर्युक्त है। क्योंकि प्रथम अवस्था मे स्थिर साधनो की मात्रा बहुत अधिक है अनुपात मे होने के कारण स्थिर साधनो का पूरा पूरा उपयोग नही हो पाता। जबकि द्वितीय अवस्था मे स्थिर साधनो की मात्रा परिवर्तनशील साधनों की मात्रा से अधिक होने के कारण सी० पु० ऋणात्मक हो जाता है जिससे कुल उत्पादन व औसत उत्पादन मे कमी हो जाती है। अतः उत्पादन की द्वितीय अवस्था ही

अर्थात् दृष्टि से विवेकपूर्ण उत्पादन कि व्यवस्था है जिसमे उत्पादन पर साधनो की उतनी इकाइयाँ लगेगी कि प्रचलित साधन मूल्यो पर साधनों का अनुकूलतम प्रयोग कर अधिकतम लाभ तथा अधिकतम उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है

—*—*—*—*—

PAGE NO.:
DATE: / /

Unit - 2nd

Q. अधिमान वक्रों तथा / उदासीनता वक्रों की विशेषता बताते हुए अधिमान वक्रों से माँग वक्र की किस व्युत्पति कैसे होती है समझाइए।

Unit second का Q.1 का Ans.

→ उदासीनता वक्रों से माँग वक्र की व्युत्पति

Ans. माँग वक्र के ऋणात्मक ढाल के प्रतिस्थापन एवं आय प्रभाव के आधार पर ही समझाया जा सकता है। जो वस्तुओं की कीमतों मे परिवर्तन से क्रियाशील होते है।
उदासीनता वक्रों की सहायता से माँग वक्र की व्युत्पती को निम्न चित्र की सहायता से समझ सकते है।

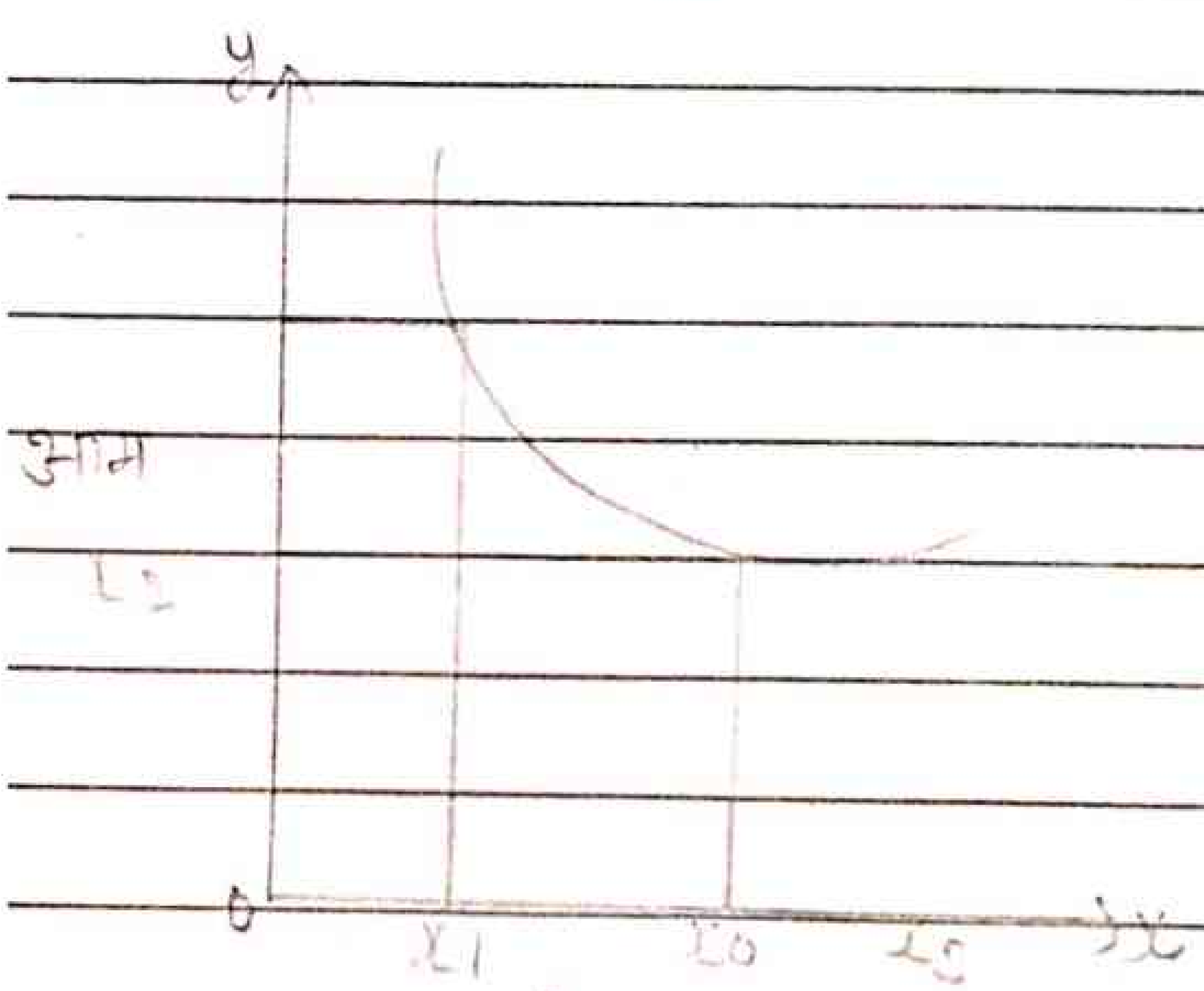

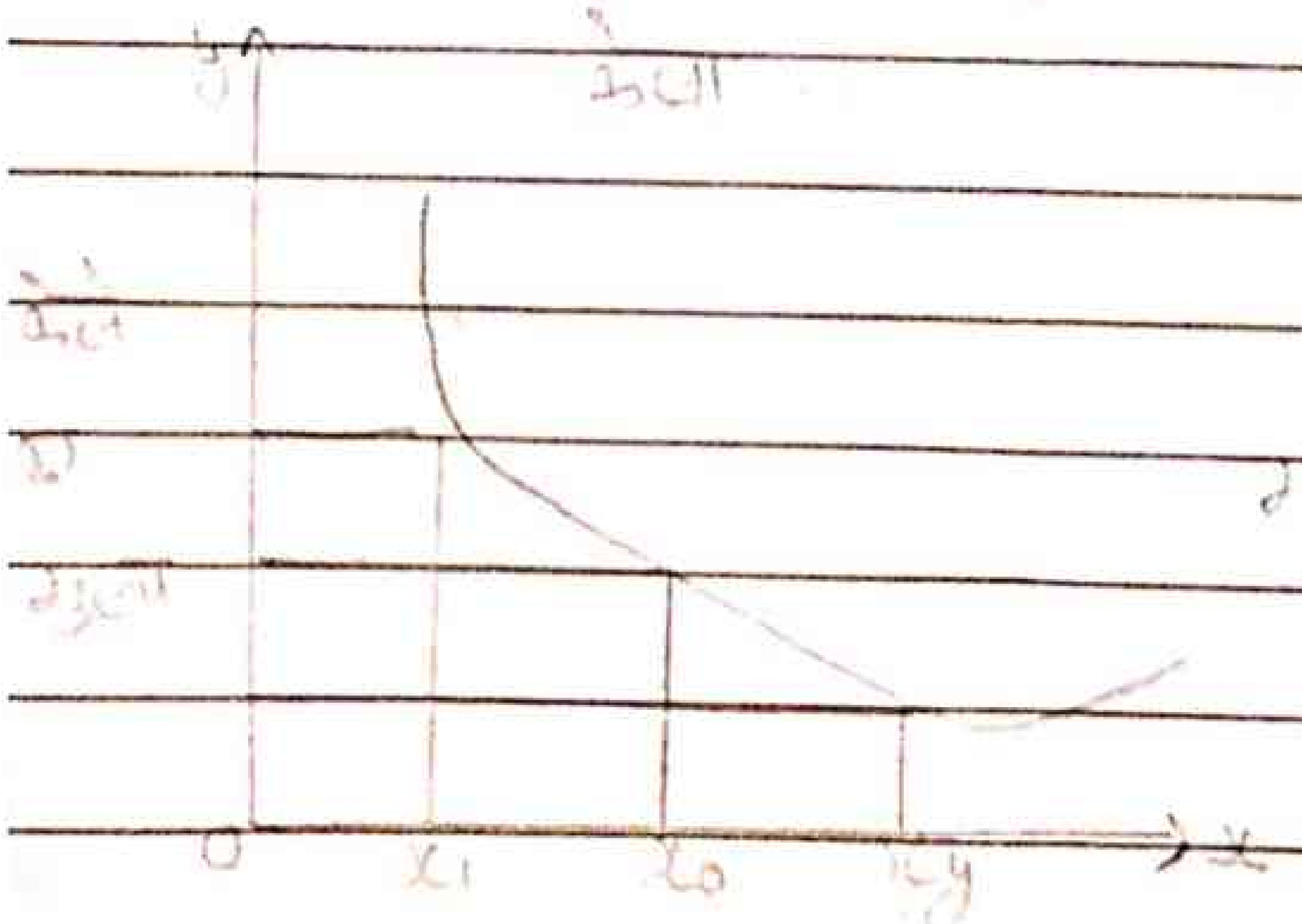

PAGE NO.
DATE : / /

Explain :— एक व्यक्ति जो केले तथा आम का उपभोग करता है जिसकी आय m है और केले तथा आम की बाजार कीमते क्रमशः P_1 और P_2 है C बिन्दु पर इसके उपयोग सन्तुलन को दिखाता है जब वह केले और आमो की क्रमशः x_1 तथा x_2 मात्राएँ खरीदता है। और चित्र संख्या हो के पैनल B पर हम P_1 को x_1 के साथ दिखाते है और x_1 के माँग वक्र पर प्रथम बिन्दु पर है। यदि x_1 की कीमत P_1 से गिर जाती है या कम हो जाती है और P_2 तथा m स्थिर रहता है। तो एक नया उपभोग सन्तुलन एक ऊँचे अधिमान वक्र D पर होता है जहाँ वह अधिक केले खरीदता है। इस प्रकार केलो की माँग बढ़ जाती है और इसकी कीमत गिर जाती है। चित्र संख्या 2 मे P_1 [P_1 की गिरी हुई कीमत] को x_1 के साथ दिखाते है तो हमको माँग वक्र पर दूसरा बिन्दु प्राप्त होता है। इसी तरह केलो की कीमत मे और अधिक कमी होने पर माँग वक्र का तीसरा बिन्दु प्राप्त होता है।

जब केले सस्ते हो जाते है तो उपभोक्ता अपने उपयोगिता को केलो के स्थान पर आमो का प्रतिस्थापन कर अधिकतम कर लेते है तथा उन्हे कीमत परिवर्तन से वही सन्तोष प्राप्त हो जाए फलस्वरूप केलो की माँग मे वृद्धि हो जाती है। इस विपरीत अतिरिक्त जब केलो की कीमत गिरती है उपभोक्ता की क्रय शक्ति बढ़ जाती है जो केले पर आमो की माँग को और बढ़ा देती है परिवर्तन का आय प्रभाव है जिसके फलस्वरूप केलो की माँग और बढ़ जाती है।

Unit - IV

PAGE NO.:
DATE: 28/8/2024

Q. एकाधिकारी फर्म का अल्पकालीन व दीर्घकालीन सन्तुलन रेखाचित्रों के माध्यम से स्पष्ट कीजिए।
अथवा
एकाधिकारी फर्म को परिभाषित कीजिए एकाधिकारी बाजार मे फर्म का अल्पकाल व दीर्घकाल मे वस्तु की कीमत व उत्पादन का निर्धारण किस प्रकार होता है।

Ans. Meaning of monopoly :— (एकाधिकार का अर्थ)
एकाधिकार बाजार की वह स्थिति है जिसमे किसी वस्तु विशेष का एक ही प्रतिकता उत्पादक व विक्रेता होता है और उसका पूर्ति पर पूर्ण नियंत्रण होता है। और उस फर्म द्वारा उत्पादित वस्तु की कोई निकटतम स्थानापन्न वस्तु नही होती है अर्थात उस वस्तु की माँग आडी या तिरछी लोच शून्य होती है।

* Features of monopoly :— (एकाधिकार की विशेषताएं)
अकेला उत्पादक या विक्रेता होता है।
(2) फर्म व उद्योग वस्तुत: एक ही होते है
(3) उत्पादक का वस्तु की पूर्ति व कीमत पर नियन्त्रण होता है
(4) कोई स्थानापन्न वस्तु नही होती है
(5) एकाधिकार मे कोई भी फर्म प्रवेश नही कर सकती
(6) बेलोचदार माँग होती है।
(7) एकाधिकार मे मूल्य विभेद पाया जाता है।
(8) एकाधिकारी अलग-अलग क्रेताओ से अलग बाजारो से भिन्न-भिन्न मूल्य ले सकता है।
(9) दिर्घकाल मे असामान्य या अतिरिक्त लाभ होगा

एकाधिकार मे अल्पकाल मे कीमत व उत्पादन निर्धारण

* अल्पकाल इतना कम समय होता है की इस अल्पकाल मे एकाधिकारियो की उत्पादन क्षमता अवधी मे एकाधिकारियो की उत्पादन के आकार मे स्थिर रहती है उत्पादन के परिवर्तन सम्भव नही होता किसी भी प्रकार का परिवर्तन सम्भव नही होता ऐसी अवस्था मे बाजार मे मुल्य निर्धारण पर माँग पक्ष का ही अधिक प्रभाव होता है। एकाधिकार मे अल्पकाल मे एकाधिकार के साम्य अथवा मुल्य एवं उत्पादन की मात्रा निर्धारण पर माँग पक्ष का प्रभाव अधिक होने से तीन अवस्थाएँ हो सकती है

1. एकाधिकारी का [असामान्य लाभ]
2. सामान्य लाभ [न लाभ न हानि]
3. एकाधिकारी हानि [हानि की अवस्था]

एकाधिकार मे अल्पकालीन साम्य की दो विधियाँ

(a) कुल आय - कुल लागत व कुल आगत रेखाओ की विधि
(b) औसत व सीमान्त रेखाओ की विधि

(a) ~~Total~~ Total Income ~~and~~ Total Revenue and total cost

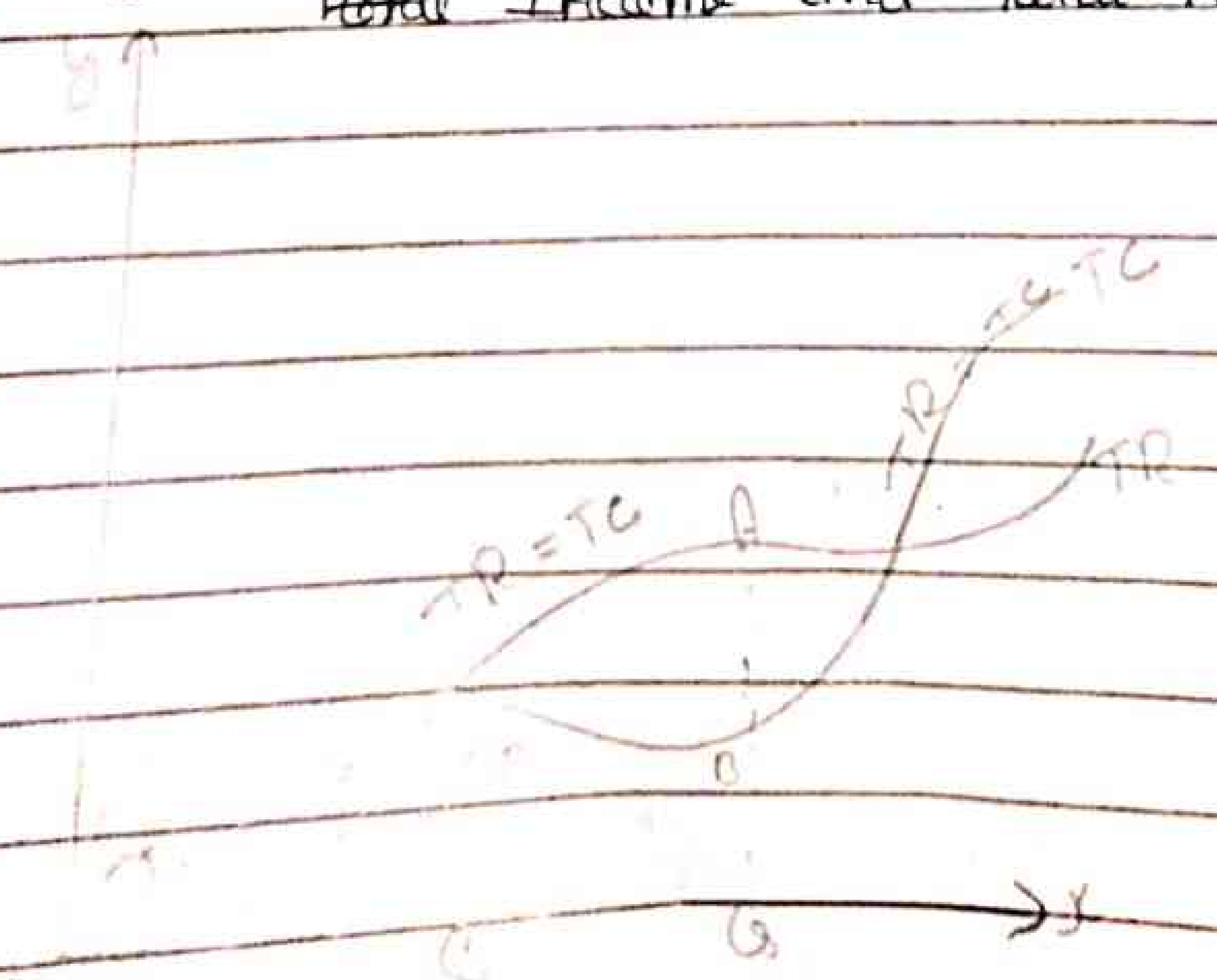

कुल लागत व कुल आगम

PAGE NO.:
DATE: / /

रेखाचित्र मे उत्पादन पर TR व TC रेखाओं के बीच लम्बवत दूरी अधिकतम है अतः यह एकाधिकारी को अधिकतम लाभ AB प्राप्त होता है व TR = TC है इसलिए यह साम्य लाभ स्थिति है। C बिन्दु से पहले व बिन्दु के बाद कुल आय की अपेक्षाकृत कुल लागत अधिक है इसलिए उत्पादन को हानि होती है।

(b) The average is in the marginal lines :- (औसत व सीमान्त रेखाओं मे)

इस रीति के अनुसार कीमत व उत्पादन निर्धारित है वह होता है जहाँ MR = MC तथा है। MP रेखा को रेखा नीचे से काटती है। इस साम्य पर MC जो कीमत व उत्पादन निर्धारित होता है उस कीमत व उत्पादन निर्धारित होता है उस बिन्दु पर लाभ हानि या सामान्य लाभ कोई भी स्थिति प्राप्त हो सकती है।

(1) Profitable situation :- लाभ की स्थिति

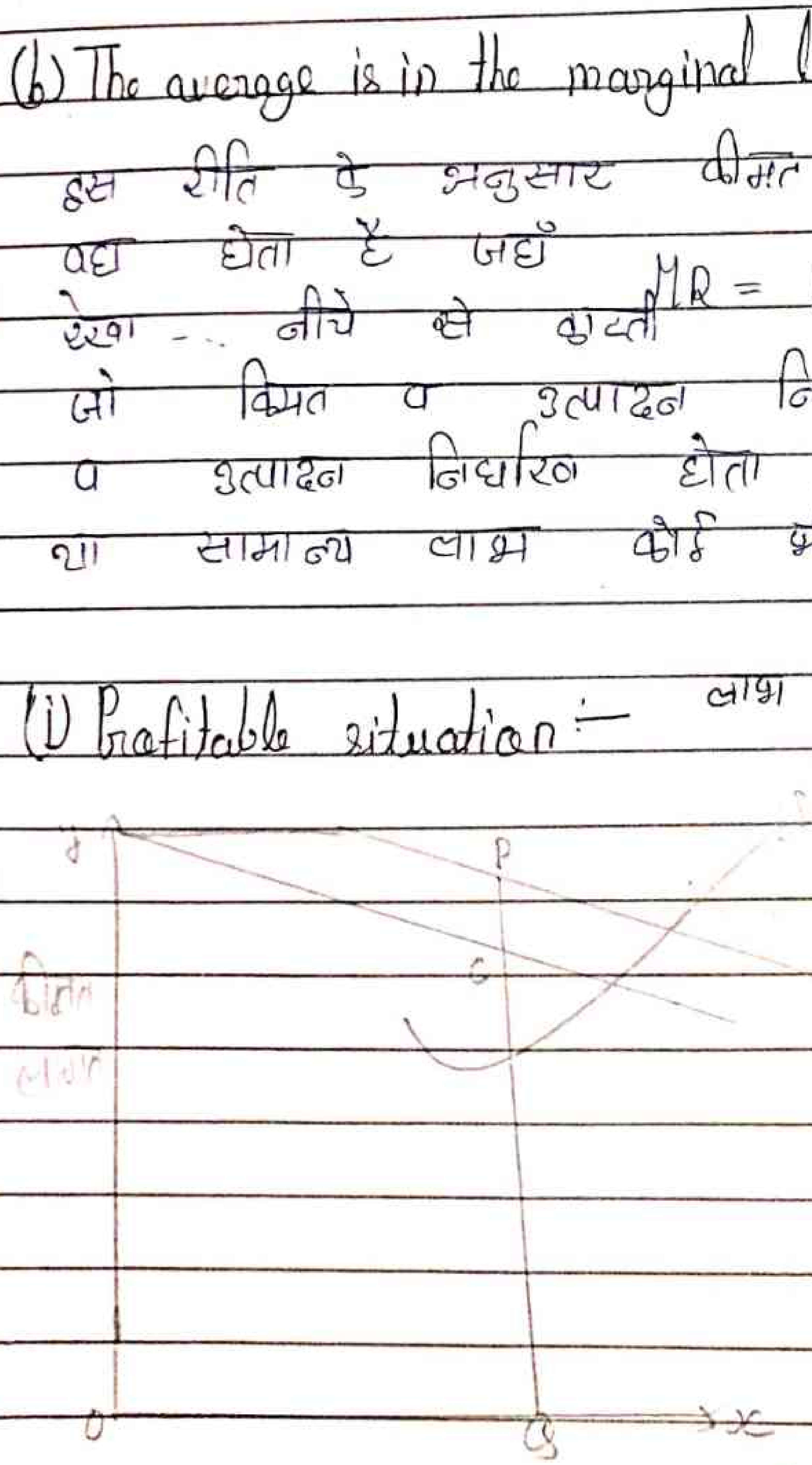

उत्पादन चित्र संख्या 1.0

(ii) Loss situation :- हानि की स्थिति

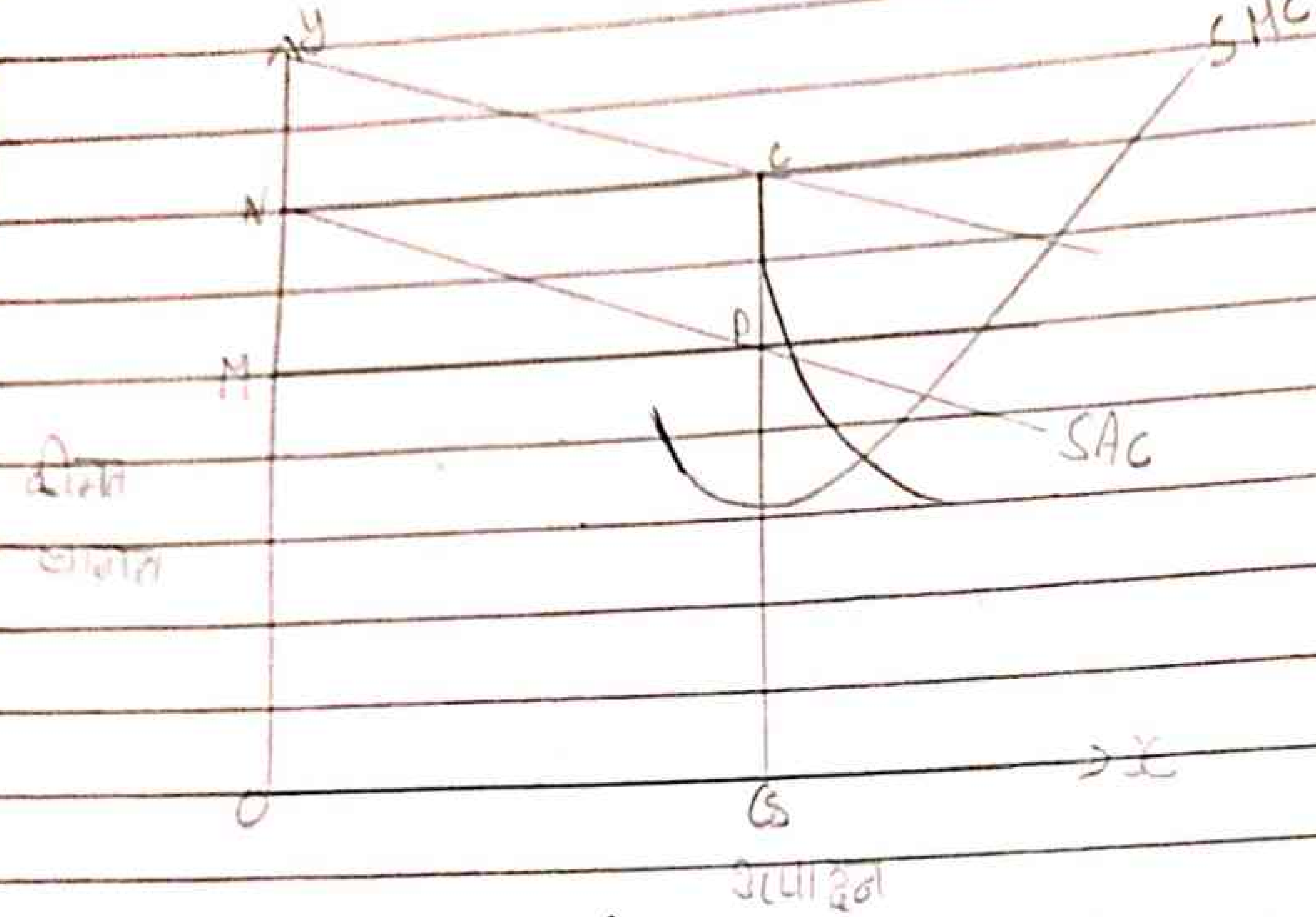

चित्र संख्या 1.1

रेखाचित्र P बिन्दु पर साम्य है उत्पादन की मात्रा Q है और प्रति इकाई कीमत PQ है प्रति इकाई लागत CQ है प्रति इकाई हानि CP है कुल हानि MNCP है।

(iii) Normal Condition :- (सामान्य स्थिति)

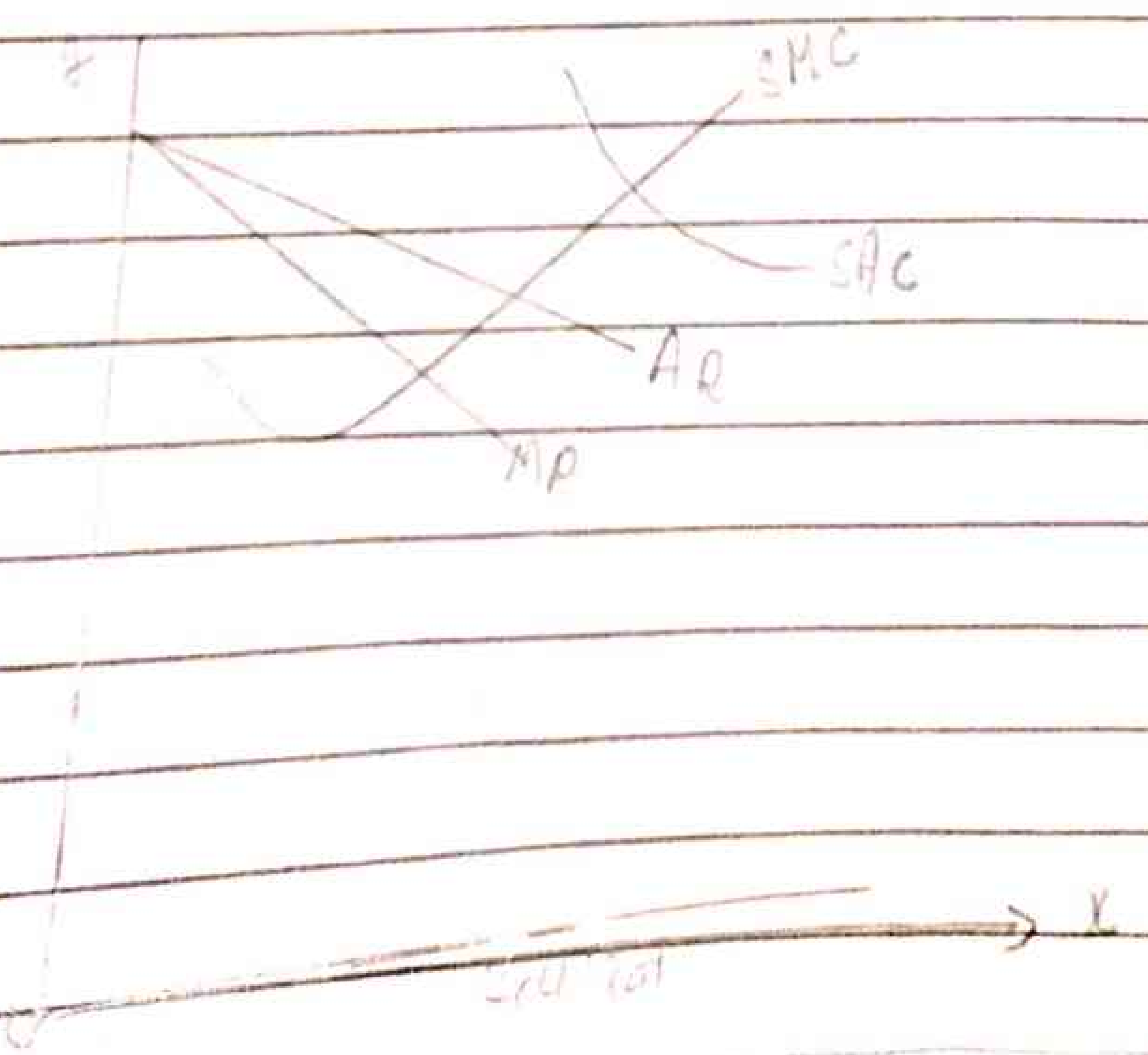

चित्र संख्या 1.0

PAGE NO.:
DATE 30/8/2024

* Long-term price and output determination under monophy :-

एकाधिकार मे दीर्घकालीन कीमत व उत्पादन निर्धारण :-

दिर्घकाल एक लम्बा समय होता है जिसमे माँग के अनुसार पूर्ति मे परिवर्तन किया जा सकता है अर्थात यदि माँग बढ़ जाती है तो पूर्ति को बढ़ाया जा सकता है तथा माँग कम होने पर पूर्ति को कम किया जा सकता है जहाँ तक की उत्पादन के संगठन व तकनीक मे परिवर्तन किया जाए। एकाधिकार मे दिर्घकाल समय वहाँ होता है। जहाँ MR = MC हो, तथा MR रेखा को MC रेखा नीचे काटती है इस समय पर जो कीमत निर्धारित होती है।

क्योंकि यदि दिर्घकाल मे हानि हो तो वह उत्पादन बन्द कर देता है। एकाधिकार मे नई फर्म प्रवेश नहीं करती है इसलिए फर्म को सामान्य लाभ भी नहीं होता। अतः दिर्घकाल मे एकाधिकार को लाभ की स्थिति ही प्राप्त होती है

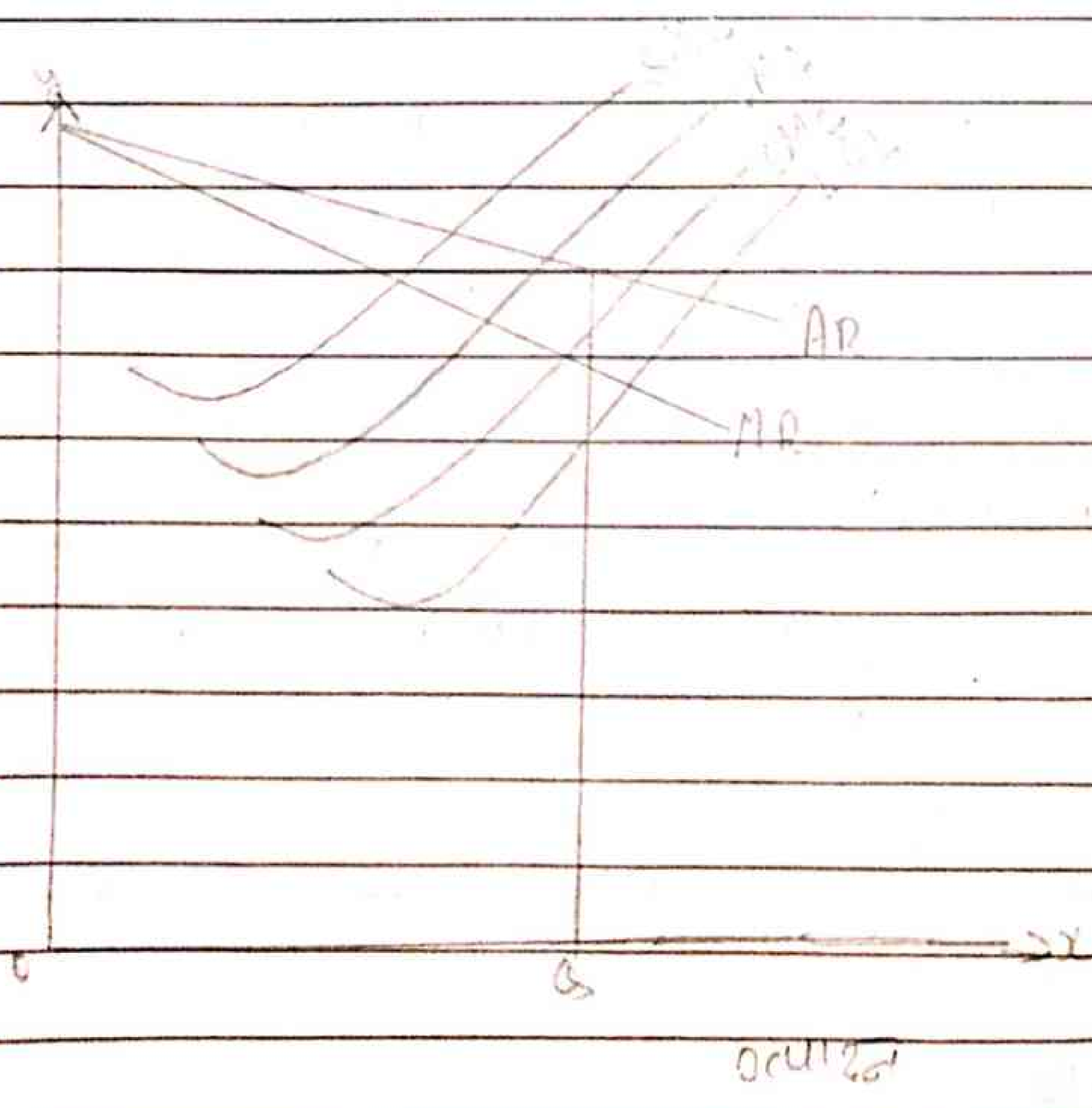

PAGE NO. :
DATE : 2/9/24

Q. उपभोक्ता की बचत से आप क्या समझते है? यह कैसे मापी जाती है और इसे मापने मे क्या कठिनाईयाँ आती है।
अथवा
उपभोक्ता की बचत की धारणा का मुख्य आधार क्या है इसकी मान्यताएं बताइये।

The Meaning and difinition of con. Savi :- उपभोक्ता की बचत का अर्थ एंव परिभा
उपभोक्ता की बचत को उपभोक्ता का बैसी / बचत / अतिरिक्त भी कहा जाता है। दैनिक जीवन का व्यवहारिक अनुभव यह बताता है की वस्तुओं या सेवाओं के क्रय के लिए जो कीमत हम देते है उससे कई अधिक उपयोगिता उन वस्तुओं व सेवाओं से हमे प्राप्त होती है। उदाहरण के लिए नमक अथवा, पानी, बिजली समाचार पत्र आदि यदि ये वस्तुएं उपलब्ध न हो तो हम जो वास्तविक मुल्य चुकाते है उससे कई अधिक मुल्य चुकाने पर तत्पर रहते है।
अतः सम्भावित किमत जो हम देने के लिए उदहत है और वास्तविक कीमत चुकाई जाती है दोनो के अन्तर को बचत (Surplus) कहते है।

* In the words of professor marshall :- प्रोफेसर मार्शल के शब्दो मे
किसी वस्तु के उपभोग से वंचित रहने की अपेक्षा उपभोक्ता जो कीमत देने के लिए तैयार है जो किमत वह वास्तव मे देता है। उसका अन्तर ही सन्तुष्टि की बचत का आर्थिक माप है। इससे उपभोक्ता की बचत कह सकते है।

प्रोफेसर मार्शल ने उपभोक्ता की बचत को अन्य शब्दों में व्यक्त किया है उपभोक्ता की बचत कीमत का वह आधिक्य है जो उपभोक्ता किसी वस्तु के उपयोग से वंचित रहने की अपेक्षा देने को प्रस्तुत है जो कीमत वह वास्तव में देता है।

* The basis of consumar savings (उपभोक्ता की बचत का आधार) उपभोक्ता की बचत की अवधारणा का मुख्य आधार सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम है। इस नियम के अनुसार ज्यों ज्यों किसी व्यक्ति के पास किसी वस्तु की इकाइयों में वृद्धि होती है। तो इकाइयों की [ऊपर वाली] की सीमान्त उपयोगिता अन्य बातें स्थिर रहने पर गिरती है।

* Consumers saving beliefs — (उपभोक्ता की बचत की मान्यताएँ) प्रोफेसर मार्शल ने उपभोक्ता की बचत की धारणा का प्रतिपादन निम्न मान्यताओं पर किया है। चुकि उपभोक्ता की बचत सी० उ० ह्रास नियम पर आधारित है।

(1) उपयोगिता को द्रव्य के रूप में मापा जा सकता है
(2) वस्तु विशेष की उ० इसकी पूर्ति पर निर्भर करती दूसरी वस्तु की पूर्ति से प्रभावित नहीं करती है
(3) उपभोक्ता की आय, रूची, फैशन आदि मे परिवर्तन नहीं होता है
(4) वस्तु की कोई स्थानापन्न वस्तु ना हो और अगर हो तो उन सबको एक ही वस्तु मान लेते है।
(5) "अन्य बाते स्थिर रहने पर की मान्यता भी इसी मे आ जाए।

PAGE NO.:
DATE: / /

* A measure of consumer saving :— (उपभोक्ता की बचत की माप) मार्शल के अनुसार उपयोगिता को द्रव्य रूपी पैमाने से मापा जाता है। इस प्रकार उपयोगिता एवं व्यक्तिगत एवं मनोवैज्ञानिक धारणा होने पर भी मापने मानी गई है इसके सूत्र निम्न प्रकार

31/07/2024

(1) उपभोक्ता की बचत = कुल उपयोगिता − [कीमत x खरीदी गई इकाइयाँ]

$$CS = TU - [P \times U]$$

अथवा

उपभोक्ता की बचत = कुल प्राप्त उपयोगिता − कुल किया गया त्याग

$$CS = TU - TS$$

(2) सम्पूर्ण बाजार की उपभोक्ता की बचत = माँग मूल्यों का योग − वास्तविक कीमत

इस सूत्र मे माँग मूल्य वह मूल्य है जिस पर व्यक्ति मूल्य देने के लिए तत्पर है यह वस्तु से प्राप्त उपयोगिता को अर्थात कीमत उस वस्तु को प्राप्त करने मे त्याग की क्षति है जबकि सूचक है। हिक्स ने को मापने 1800 मे तटस्थता वक्र रेखाओं का उपभोक्ता की बचत प्रयोग किया है।

* Difficulties in measuring consumer saving :— उपभोक्ता की बचत को मापने मे कठिनाइयाँ

PAGE NO. :
DATE : / /

सेद्धान्तिक अध्ययन से ऐसा लगता है की उपभोक्ता की बचत को मापना अत्यन्त सरल है पर इसे मापने मे अनेक कठिनाइयाँ आती है जो इस प्रकार है।

(1) माँग मुल्यो की पूरी सूची उपलब्ध नही होती है।
(2) उपभोक्ताओं की आर्थिक स्थिति मे भिन्नता
(3) स्थानापन्न वस्तुओं के कारण
(4) द्रव्य की सी० उ० समान नही रहती है।
(5) उपभोक्ता की रुची और fashion मे परिवर्तन
(6) प्रतिष्ठात्मक वस्तुएं
(7) उपयोगिता एक मनोवैज्ञानिक धारणा है।

(1) माँग मुल्यो की पूरी सूची उपलब्ध नही होती है।

उपभोक्ता की बचत को मापने के लिए हम यह मानकर चलते है की प्रत्येक व्यक्ति को इस बात का पूर्ण ज्ञान है। की वह किसी वस्तु की प्रत्येक इकाई के लिए क्या क्या कीमत दे सकता है। जबकि वह व्यवहार मे अनेक उपभोक्ता इस बात से अनभिज्ञ होते है तथा वे पहले भाव पूछते है और उसके आधार पर माँग मुल्य सूची तैयार करते है जो की पूर्णतया काल्पनिक या अनुमानित होती है।

(2) Differance in the economic state of consumers. :-

(2) उपभोक्ताओं की आर्थिक स्थिति मे भिन्नता :- समाज मे आर्थिक समानता न होने से कुछ व्यक्ति गरीब कुछ अमीर कुछ सामान्य होते है

PAGE NO
DATE

इसके कारण मांग तथा रुची पर प्रभाव पड़ता है। एक अमीर व्यक्ति किसी वस्तु के लिए गरीब व्यक्ति की अपेक्षा अधिक मुल्य चुकाने को तैयार रहता है अतः अमीर और गरीब के लिए द्रव्य की समान मात्रा की समान उपयोगिता न होने से उपभोक्ता की बचत का ठीक ठाक मापन नही हो सकता है।

(3) Because of the substitute object :-

(3) स्थानापन्न वस्तुओं के कारण :- स्थानापन्न वस्तुओं के सम्बन्ध
स्थानापन्न वस्तुओ के सम्बन्ध
के कारण उपभोक्ता एक वस्तु का जो मुल्य देने को तैयार होता है वो दुसरी वस्तु के मुल्य मे कमी के कारण नही दे पाता है तथा वह दुसरी वस्तु को खरीदकर सन्तुष्टि प्राप्त कर लेता है।

4/9/2024

(4) The marginal utility of money is not the same :-

(4) द्रव्य की सीमान्त उपयोगिता समान नही होती है :-

उपभोक्ता
की बचत की धारणा के अनुसार द्रव्य की सी० उ० को स्थिर माना है जबकी व्यवहार मे उपभोक्ता की बचत अधिक होती है तो द्रव्य की सी० उ० कम होती है जबकी जैसे-जैसे बचत मे कमी होती है द्रव्य की सी० उ० बढती जाती है। उ

(5) Changes in consumer taste and feashion.

(5) उपभोक्ता की रुची और fashion मे परिवर्तन :-

PAGE NO.:
DATE: / /

उपभोक्ता की बचत को मापने मे यह व्यवहारिक कठिनाइयां आती है की उपभोक्ता की रुची, fashion स्वभाव, इच्छा मे तीव्रता से परिवर्तन होता है जिसके कारण वह किसी वस्तु का अधिक मुल्य चुकाने के लिए तत्पर रहता है। और यदि इच्छा मे परिवर्तन नही होता तो वह उस वस्तु का कम मुल्य देने को तैयार रहता है।

(6) Prestige items. :-

(6) प्रतिष्ठात्मक वस्तुए :-

प्रतिष्ठात्मक वस्तुएँ जैसे हीरे, जवाहरात, सोना - चाँदी ऐसी वस्तुओं की उची कीमतो पर अधिक उपयोगिता महसूस होती है कम कीमतो पर सर्वसाधारण वस्तु व्यक्ति द्वारा उस वस्तु का उपयोग किये जाने पर प्रतिष्ठात्मकता समाप्त सी हो जाती है अतः उपभोक्ता की बचत ज्ञात करना कठिन है।

(7) Consumer is a psychological concept:- उपयोगिता एक मनोवैज्ञानिक धारणा उपभोक्ता की बचत को मापने मे एक कठिनाई यह भी आती है की उपयोगि एक मानोवैज्ञानिक धारणा है प्रत्येक व्यक्ति की उपयोगिता हर वस्तु के लिए अलग अलग होती है अतः बचत का निर्धारण करने मे कठिनाइयाँ आ है।

Unit - 2nd

* संक्षिप्त पर टिप्पणी कीजिए

(1) Indifference curve Effect :— प्रतिस्थापन प्रभाव
(2) Income Effect :— आय प्रभाव
(3) Price Effect :— कीमत प्रभाव

Ans Indifference curve Effect :— प्रतिस्थापन प्रभाव :—

जब उपभोक्ता की आय मे परिवर्तन न हो पर वस्तुओं की सापेक्षिक कीमतों मे परिवर्तन हो जाए पर वस्तुओ की सापेक्षिक कीमतों मे तो उपभोक्ता अपनी सन्तुष्टि पूर्वत बनाए रखने के लिए अपने उपभोग मे महगी वस्तुओ को सस्ती वस्तुओं से प्रतिस्थापित करता है और इस प्रकार वस्तुओ के क्रय को सापेक्षित कीमतों के अनुसार बदल देता है। इसे ही प्रतिस्थापन प्रभाव कहते है

दुसरे शब्दो मे जब उपभोक्ता एक ही तटस्था वक्र पर नया सन्तुलन बिन्दु अपनाता है अर्थात एक सन्तुलन बिन्दु से दुसरे सन्तुलन बिन्दु तक चला जाता है तो इसे प्रतिस्थापन प्रभाव कहते है।

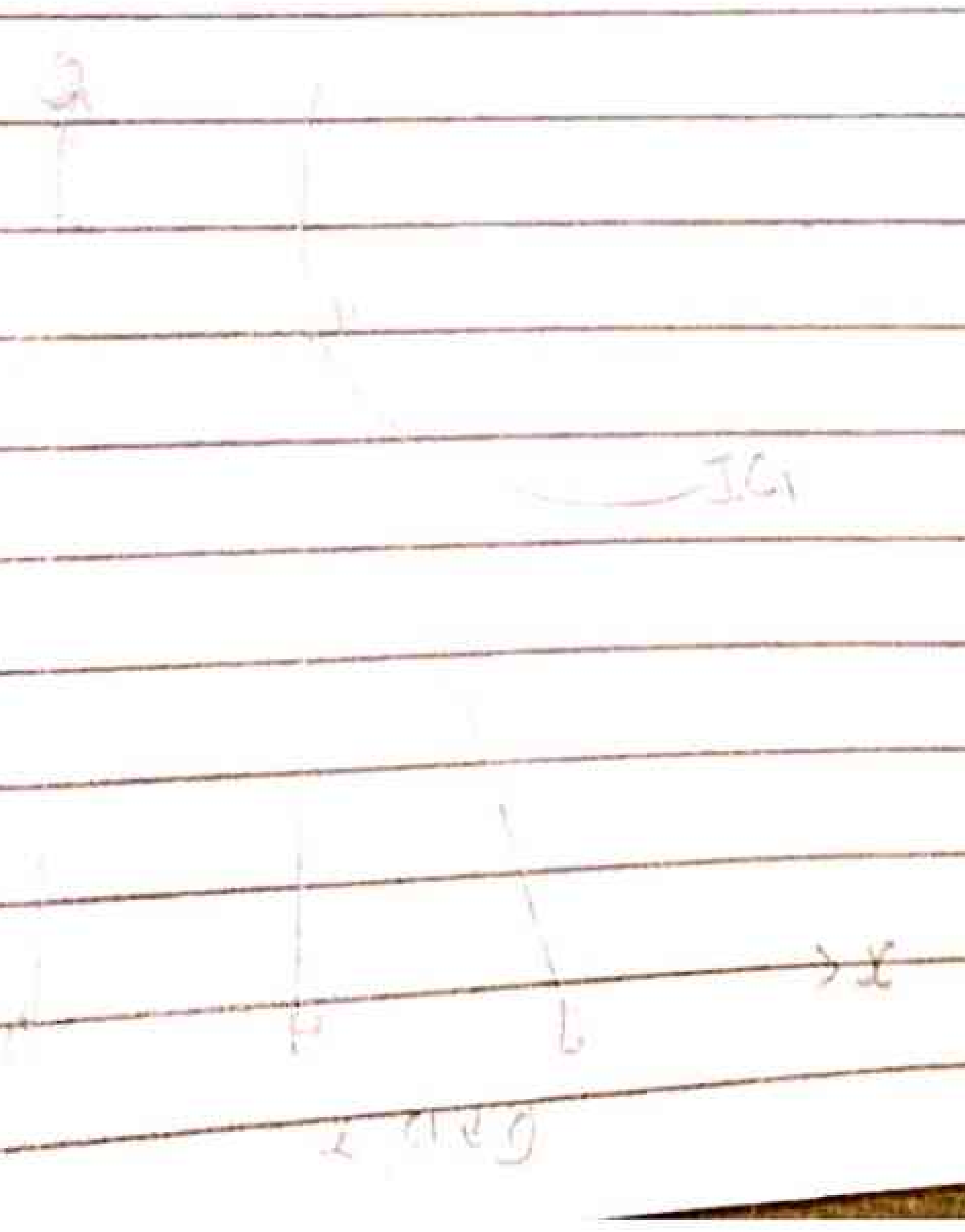

प्रतिस्थापन प्रभाव

Explain :— उदाहरण के लिए दो वस्तुओं मे से एक वस्तु की कीमत गिरती व दूसरी की कीमत बढ़ती है तो उपभोक्ता उनकी मात्रा मे क्रमशः वृद्धि व कमी करके अपनी सन्तुष्टि को पूर्ववत बनाए रखता है जैसा की चित्र मे दिखाया गया है एक उपभोक्ता कीमत रेखा Ab के m बिन्दु पर जहाँ तटस्था वक्र कीमत रेखा को काटता है जहा वह प्याज की O.P मात्रा व टमाटर की Oq मात्रा खरीदता है प्याज की कीमत मे वृद्धि होने पर उपभोक्ता आय स्थिर होने के कारण प्याज की मात्रा घटाकर Oq_1 खरीदेगा तथा टमाटर की मात्रा Oq_1 Oq से बढ़ाकर Oq_1 खरीदे तथा नई कीमत रेखा $A_1 B_1$ होगी तथा उपभोक्ता का नया सन्तुलन बिन्दु N होगा

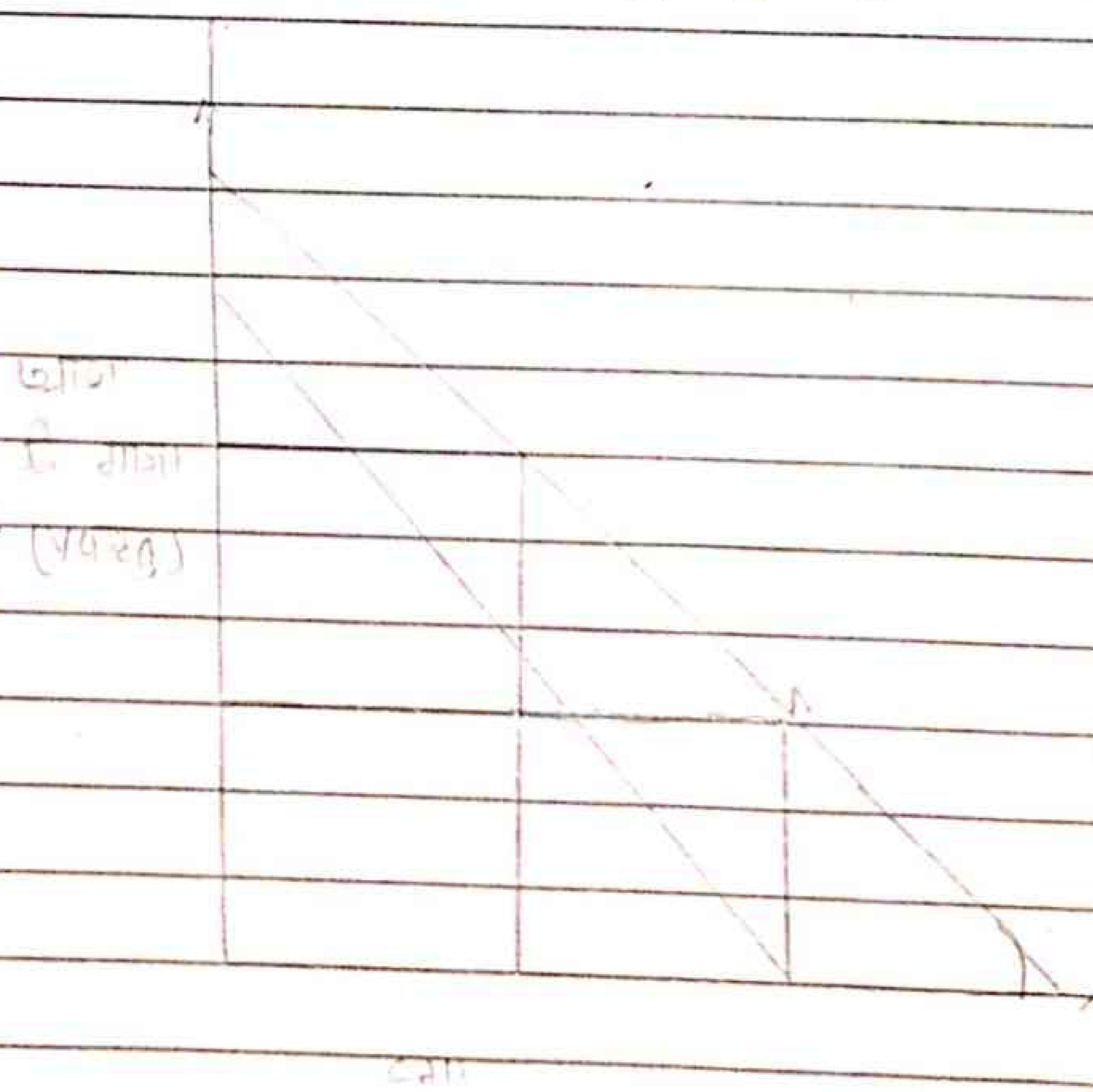

PAGE NO :
DATE : / /

* Assumptions of the substitution effect :- (प्रतिस्थापन प्रभाव की मान्यताएं)

(1) उपभोक्ता हेतु दो वस्तुओं के दो वस्तुओं के सापेक्षित मूल्य या कीमत बदल जाती है अत: एक वस्तु सस्ती तथा एक वस्तु महंगी हो जाती है उपभोक्ता की ५

(2) उपभोक्ता की आय मे कोई परिवर्तन नही होता।

(3) एक वस्तु के महंगे होने का प्रभाव दूसरी वस्तु के सस्ते होने से इस प्रकार अर्थात नष्ट हो जाता है की उपभोक्ता अपने पूर्वत सन्तुष्टि स्तर पर बना रहता है। अर्थात उसी पुरानी तटस्था वक्र रेखा पर नये सन्तुलन / साम्य की स्थिति पर पहुँचता है

* Price effect :— कीमत प्रभाव

जब उपभोक्ता की मौद्रिक आय मे कोई परिवर्तन नही होता है पर वस्तुओं की कीमत मे परिवर्तन होता है तो मूल्यों मे परिवर्तन के फलस्वरूप माँग मात्रा पर पड़ने वाले प्रभाव को मूल्य प्रभाव या कीमत प्रभाव कहा जाता है

दूसरे शब्दो मे कीमत प्रभाव उस प्रभाव को कहते है जिसमे उपभोक्ता की मौद्रिक आय स्थिर रहने पर एक वस्तु की कीमत मे परिवर्तन होने से उसकी मांग मात्रा परिवर्तित होती है उदाहरण - दो वस्तुओं x तथा y मे y की कीमत मे और उपभोक्ता की आय स्थिर रहती है और केवल x वस्तु की आय मे परिवर्तन होता है तो उपभोक्ता प्रत्येक कीमत परिवर्तन पर x वस्तु की माँग मात्रा मे परिवर्तन कर नया

PAGE NO. :
DATE : / /

सन्तुलन बिन्दु प्राप्त करेगा। इस प्रकार के साम्य बिन्दुओं को जोड़ने वाली रेखा मूल्य उपभोग वक्र [Price consumption curve] कहलाती है

9/9/2024

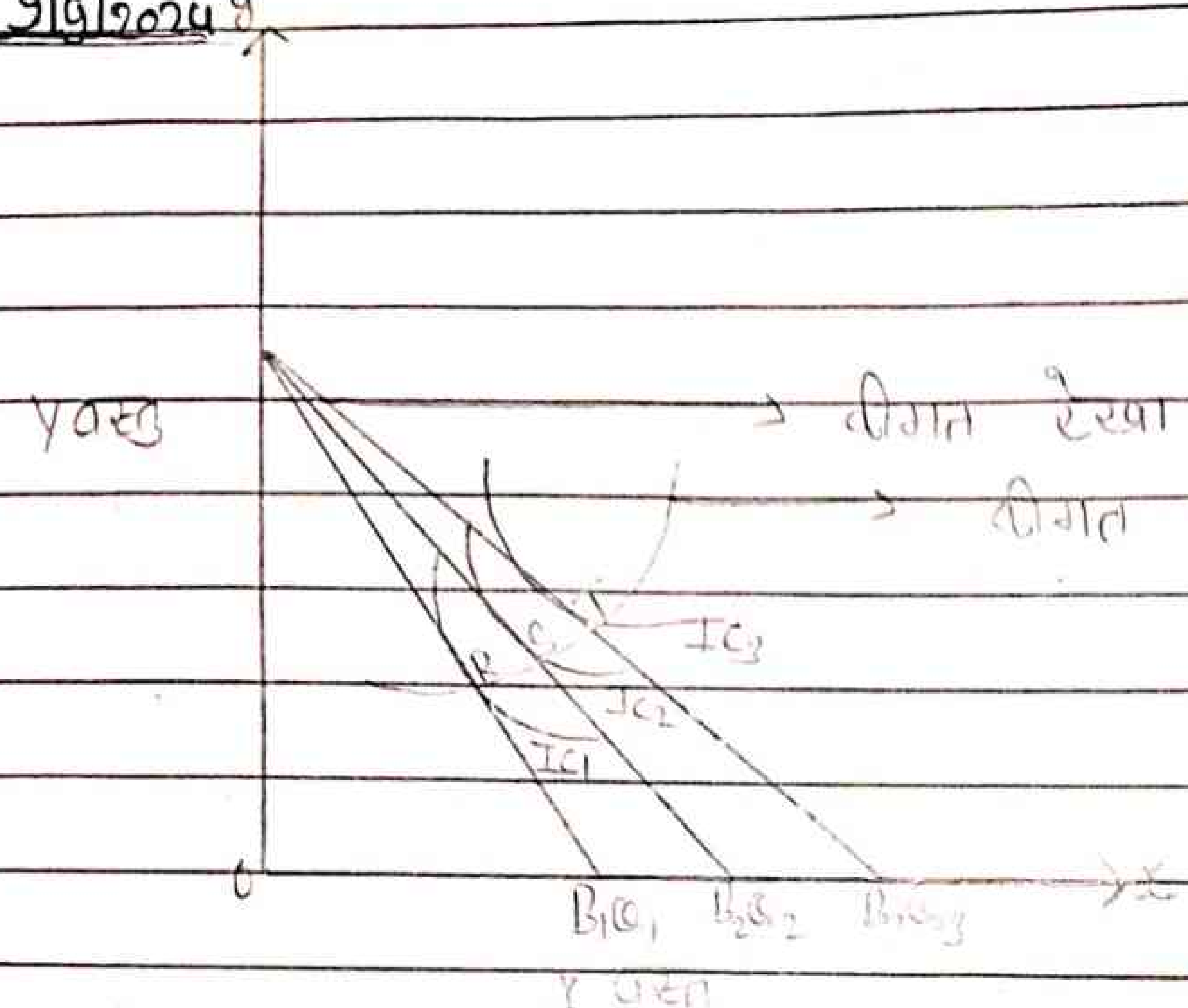

चित्र :- कीमत प्रभाव

Explain :- उपर्युक्त चित्र स्पष्ट है की उपभोक्ता की मौद्रिक तथा आय स्थिर है पर वस्तु x की कीमत गिरती है प्रारम्भिक कीमत रेखा AB_1 पर तटस्था वक्र रेखा IC_1 के आर बिन्दु पर उपभोक्ता वस्तु x की OQ_1 मात्रा खरीदता है पर कीमत गिरने से कीमत रेखा AB_2 हो जाती है तो उपभोक्ता IC_2 के S बिन्दु के सन्तुलन होने पर OQ_2 खरीदता है और जब कीमत और अधिक गिरती है तो AB_3 मूल्य पर तटस्था वक्र रेखा IC_3 के T बिन्दु पर सन्तुलन स्थापित करता है

I वस्तु की OB_3 मात्रा खरीदता है और इसके विपरीत वस्तु x की कीमत बढ़ने पर वस्तु x की कम इकाइयाँ खरीदने से निम्न सन्तुष्टि वक्र आ जायेगा।
वस्तु x की कीमत मे परिवर्तन से उपभोक्ता के नये सन्तुलन बिन्दुओं जो IC_1, IC_2 व IC_3 पर क्रमश: R, S, T बिन्दु है जिनको जोड़ने वाली रेखा कीमत उपभोग वक्र [PCC] कहलाती है

* Income Effect :- [आय प्रभाव]

अन्य बाते समान रहने पर यदि वस्तु की कीमत स्थिर रहे परन्तु उपभोक्ता की आय मे परिवर्तन हो जाए अर्थात उपभोक्ता की आय मे वृद्धि या कमी के फलस्वरूप उसकी माँग मे वृद्धि या कमी हो सकती है। इसे ही उपभोक्ता माँग पर आय प्रभाव कहते है उपभोक्ता की आय मे परिवर्तन मे फलस्वरूप उसकी माँग पर पड़ने वाले प्रभाव को आय प्रभाव कहते है

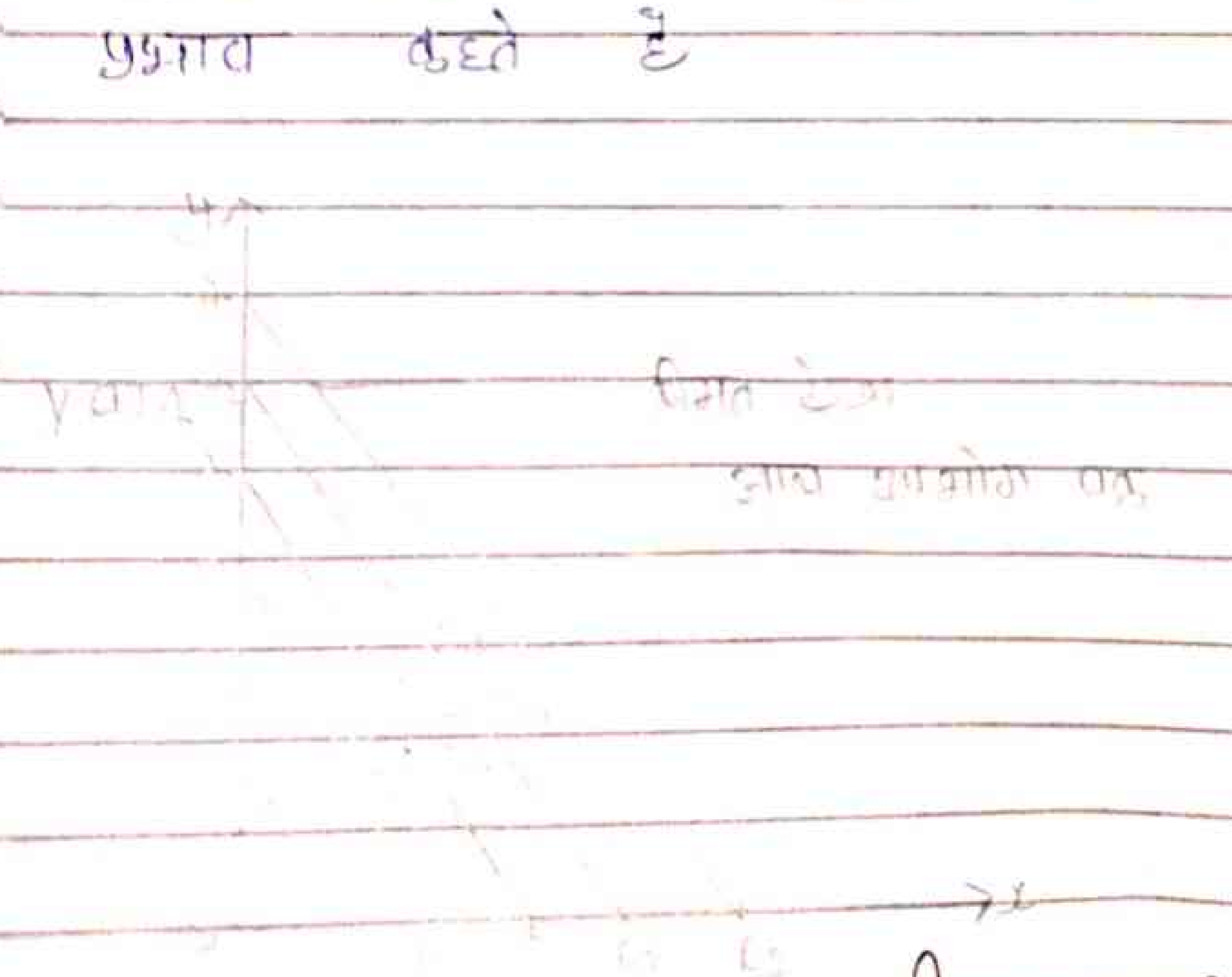

चित्र :- उपभोक्ता माँग पर आय प्रभाव

Explain :— उपभोक्ता की आय में कमी व वृद्धि होने पर मूल्य रेखाएं समानान्तर गिरती एवं बढ़ती है। उपभोक्ता की आय बढ़ने पर मूल्य रेखा ऊंचे तटस्थ वक्र की स्पर्श रेखा बनकर उपभोक्ता के अधिक सन्तुष्टि वाले नये सन्तुलन को व्यक्त करती है तथा उपभोक्ता की आय घटने पर मूल्य रेखा नीचे तटस्था वक्र की स्पर्श रेखा बनकर उपभोक्ता के कम सन्तुष्टि वाले नये सन्तुलन को व्यक्त करती है।

चित्र के अनुसार निश्चित आय व उपभोक्ता x व y वस्तु के दिये हुए मूल्यों पर तटस्था वक्र IC के E_1 बिन्दु पर सन्तुलन की स्थिती मे सन्तुलन बिन्दु पर q, x वस्तु की OQ मात्रा तथा y वस्तु OA मात्रा खरीदता है।
उपभोक्ता की आय मे वृद्धि होने से नई मूल्य रेखा A_2 व B_2 तटस्था वक्र IC_3 के E_2 बिन्दु पर स्पर्श रेखा है अतः नया सन्तुलन E_2 बिन्दु पर होगा और उपभोक्ता पहले की अपेक्षा अधिक सन्तुष्टि प्राप्त करेगा
अगर आय मे हुए परिवर्तन के फलस्वरूप उपभोक्ता के विभिन्न सन्तुलन बिन्दुओ को जोड़ लिया जाता है तो जो रेखा बनती है उसे आय उपभोग वक्र अथवा पयच उपभोग वक्र कहते है।

Unit - 3rd

Q. लागत अवधारणा को समझाईए। तथा लागते कितने प्रकार की होती है? बताइए।

Ans. Cost concepts :— (लागत अवधारणा) :—
बाजार मे किसी भी उत्पाद या वस्तु का मुल्य उसकी माग व पूर्ती की शक्तियों से होता है किसी भी उत्पाद की मात्रा जो बाजार मे बैची जाती है इसका निर्धारण उत्पाद की लागत के आधार पर निर्धारित किया जाता है। प्रमुख लागत अवधारणाए निम्नलिखित है

(1) मौद्रिक लागतें
(2) वास्तविक लागतें
(3) अवसर लागत
(4) वृद्विमान लागते एवं ह्रास लागते
(5) प्रत्यक्ष लागतें तथा अप्रत्यक्ष लागतें
(6) सामुहिक उत्पादन लागते
(7) रोकडी लागते तथा पुस्तकिय लागतें
(8) प्रतिस्थापन लागतें तथा ऐतिहासिक लागतें
(9) नियत्रंणिय लागते तथा अनियत्रंणिय लागते
(10) अत्या आवश्यक लागते तथा स्थगन लागते
(11) स्थाई लागते एवं परिवर्तनशील लागते
(12) अल्पकालीन लागते एवं दिर्घकालीन लागते
(13) कुल लागत, औसत लागत तथा सीमान्त लागत

(1) Many Cost :— मौद्रिक लागतें :—
एक फर्म अपने उत्पादन कार्यों पर जो व्यय करती है वह मौद्रिक लागत कहलाती है।

मौद्रिक लागतों मे सभी प्रकार के व्यय सम्मिलित होते है जैसे कच्चे माल का मूल्य श्रम की मजदूरी, पूँजी का ब्याज, भूमी का लगान, प्रबन्धकों के वैतन तथा प्रबन्धकों का सामान्य लाभ।

11/9/2024

* मौद्रिक लागते दो प्रकार की होती है।
(1) स्पष्ट लागते या व्यक्त लागतें
(2) अव्यक्त या अस्पष्ट लागतें

* Real cost वास्तविक लागते :—

वास्तविक लागत का तात्पर्य उन सब कष्टो, प्रयत्न तथा त्याग से है जो किसी वस्तु के उत्पादन करने मे उठाने पड़ते है इसलिए यह कहा जा सकता है कि x वस्तु के उत्पादन मे y वस्तु की तुलना मे तीन गुना कष्ट एवं त्याग करना पड़ता है। तो x वस्तु की वास्तविक लागत y वस्तु की तुलना मे 3 गुना होती है। मार्शल के अनुसार " किसी वस्तु के उत्पादन मे प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप मे लगने वाले विभिन्न प्रकार के श्रमिको का पारिश्रमिक तथा उसमे काम मे आने वाली पूंजी की बचत के लिए किया जाने वाला त्याग अथवा प्रतिक्षा वस्तु की वास्तविक लागत को बताते है।"

* Opportunity Cost अवसर लागत :—

अवसर लागत को अनेक नामों से पुकारा जाता है जैसे वैकल्पिक लागत, हस्तान्तरण आय, हस्तान्तरण लागत आदि है

PAGE NO.:
DATE: / /

आधुनिक अर्थशास्त्री अवसर लागत की धारणा को वास्तविक लागत के स्थान पर प्रयोग करते हैं। इस रूप मे किसी वस्तु के उत्पादन की वास्तविक लागत अर्थात अवसर लागत वह वस्तु है जिसका त्याग किया जाता है। बेनहम के अनुसार "किसी वस्तु की अवसर लागत का वह दूसरा श्रेष्ठ विकल्प है जिनको अपनी साधनों से या उनके समान उतनी ही मौद्रिक लागत के साधनों के समूह से उसकी बजाय उत्पादन किया जा सकता था"

(9) (परिवर्तनशील लागते तथा स्थिर लागते).
जब एक फर्म अपनी व्यवसायिक क्रियाओं स्थिल अथवा प्रकृति मे परिवर्तन करती है तब उससे जो अतिरिक्त लागते आति है उन्हे परिवर्तनशील लागते कहते है।

* (स्थिर लागते):—
स्थिर लागते वे लागतें होती है जिन पर व्यवसायिक क्रिया की प्रकृति अथवा स्तर मे परिवर्तन का कोई प्रभाव नही पडता। स्थिर लागतो का सबसे अच्छा उदाहरण ह्रास है

(9) Direct cost and Indirect cost (प्रत्यक्ष लागते अप्रत्यक्ष लागते):—

* Direct cost :— वे लागते वे होती जो किसी विभाग, प्रक्रिया या वस्तु के सम्बन्ध मे निर्विवाद होती है। ऐसी लागतों को सफलता पूर्वक पहचाना जा सकता है तथा इसमे विभाजन की समस्या ही नही उत्पन्न नही होती है क्योंकी ये किसी विभाग, प्रक्रिया

PAGE NO.:
DATE: / /

अथवा वस्तु के प्रत्यक्ष रूप से सम्बन्धित होती है।

* Indirect cost :— अप्रत्यक्ष लागतें वे लागतें होती है जो प्रत्यक्ष रूप से किसी विभाग, प्रक्रिया अथवा वस्तु से सम्बन्धित नही होती है बल्कि जिनको एक साथ चुकाया जाता है। अप्रत्यक्ष लागतों मे प्रबन्धकीय कार्यालय का खर्च अनेक वस्तुओ के सामुहिक विज्ञापन का खर्च आदि आते है।

11/5/2024

(6) २ (रोकड़ी लागतें तथा पुस्तकीय लागतें)

(i) (रोकड़ी लागतें) :— वे लागते जिनके लिए वर्तमान मे नगद अथवा रोकड़ी भुक्तान करना आवश्यक होता है रोकड़ी लागते अथवा जेब से लागते कहलाती है कच्चे माल का क्रय, मजदूरी का भुक्तान किराया आदि ऐसी लागतों के उदाहरण है।

(ii) Books cost :— पुस्तकिय लागते :— पुस्तकीय लागतें वे होती है जिनको करने के लिए नगद भुगतान की आवश्यकता नही होती उदाहरण के तौर पर ह्रास एक पुस्तकीय लागत है। पुस्तकीय लागतों को रोकड़ी लागतों मे बदला जा सकता है।

(7) fixed cost and variable cost :— [स्थाई लागते एवं परिवर्तनशील लागतें]

(i) fixed cost :— [स्थाई लागते] स्थाई अथवा स्थिर

PAGE NO.
DATE / /

लागतो को पूरक लागते, सामान्य लागते, अप्रत्यक्ष लागते अथवा ऊपरी लागते भी कहते है स्थाई लागते वे लागते भी होती है जो अल्पकाल मे फर्म के शून्य उत्पादन से लेकर अधिकतम उत्पादन तक स्थाई अथवा स्थिर रहती है। – भूमी का किराया.

(ii) Variable cost :– परिवर्तनशील लागते –

परिवर्तनशील लागतो को प्रमुख लागते अथवा प्रत्यक्ष लागते भी कहते है परिवर्तनशील लागतें वे लागते होती है जो उत्पादन की मात्रा के साथ साथ परिवर्तित होती रहती है उत्पादन बंद होने पर परिवर्तनशील लागते नही लगती है परिवर्तनशील लागतों मे कच्चे माल की लागत, प्रत्यक्ष मजदूरी, ईन्धन आदि का व्यय सम्मीलित होता है।

(8) Short time cost and Long Time cost (अल्पकालीन लागते एवं दिर्घकालीन लागते)

(i) Short period cost :– अल्पकालीन वे लागते होती है जो एक फर्म के अल्पकाल मे उत्पादन करने पर लगती है अल्पकालीन लागते दो प्रकार की होती है।

(1) स्थाई लागते
(2) परिवर्तनशील लागते

spelling/सफाई का ध्यान रखें।
उत्तर की लंबाई का ध्यान रखें।

(ii) Long period cast :– दिर्घकालीन लागते वे लागते है जो फर्म को दिर्घकाल मे उत्पादन करने पर व्यय करनी होती है दिर्घकाल मे कोई भी स्थाई लागत नही होती है सभी लागते परिवर्तनशील लागते होती है।

Yuvraj Kum
12/09/2

(9) Total cost, Average cost and Marginal cost :—

(1) Total cost :- किसी वस्तु के उत्पादन मे लगने वाली समस्त लागतो का योग कुल लागत होता है।

$$TC = TFC + TVC$$

TC – Total cost
TFC – Total fixed cost
TVC – Total Veriable cost

(2) Average cost :- कुल लागत मे वस्तु की इकाईयो की संख्या का भाग देने पर औसत लागत प्राप्त होती है

$$AC = \frac{TC}{Q}$$

AC = Average cost
Q · Quintil.

(3) Marginal cost :- किसी वस्तु की एक अतिरिक्त इकाई के उत्पादन करने से कुल लागत मे जो वृद्धि होती है। वह सीमान्त लागत कहलाती है।

$$MC = TC_{n+1} - TC_n$$

जहाँ MC = Margina cost
TC_n – इकाईयो के उत्पादन की कुल लागत
TC_{n+1} – n+1 इकाईयो के उत्पादन की लागत-

PAGE NO
DATE / /

14/9/2024

Q. अल्पकाल व दीर्घकाल मे लागत उत्पादन सम्बन्ध तथा लागत वक्र बताइए।

Ans. अल्पकाल मे फर्म उत्पादन के परिवर्तनशील साधनों की मात्रा मे उत्पादन की आवश्यकताओ के अनुसार परिवर्तन कर सकती है। तथा स्थाई साधनो की मात्रा मे परिवर्तन नही कर सकती फर्म की अल्पकालीन लागत वक्रो का अध्ययन दो प्रकार से किया जा सकता है

(1) अल्पकालीन कुल लागत
(2) अल्पकालीन इकाई लागत

(1) Short period total cost :- एक फर्म की अल्पकालीन कुल लागत निम्न प्रकार की होती है।
(1) कुल लागते। (2) कुल स्थिर लागते
(3) कुल परिवर्तनशील लागते।

(1) Total cost - अल्पकाल मे किसी वस्तु के उत्पादन मे जो कुल व्यय किया जाता है उसे कुल लागत कहते है।
यह कुल स्थाई लागते तथा कुल परिवर्तनशील लागतो का योग होता है

$$TC = TFC + TVC$$

PAGE NO.:
DATE / /

Table - 1.1

Short period Total production cost

उत्पादन की मात्रा की इकाईयां	TFC	TVC	TC
0	50	0	50
1	50	15	65
2	50	20	70
3	50	30	80
4	50	40	90
5	50	45	95

तालिका 1.1 से स्पष्ट होता है कि कुल उत्पादन शून्य उत्पादन पर 50 है जो कि स्थाई लागतो के बराबर है तथा इसके बाद उत्पादन के अनुसार लगातार बढती गई है। तथा यह वृद्धि केवल कुल परिवर्तनशील लागतो के अनुसार होती गई है।

(ii) Total fixed Cost :- (कुल स्थिर लागते)

वह लागते जो अल्पकाल मे फर्म के शून्य उत्पादन से लेकर अधिकतम सम्भव उत्पादन पर स्थिर रहती है कुल स्थिर लागते कहलाती है यह वे स्थाई लागते होती है जिन्हे प्रत्येक स्थिति मे व्यय करना ही होता है चाहे अल्पकाल मे फर्म द्वारा मशीन आदि का क्रय करने के लिए उधार ली गई पूंजी पर ब्याज।

कारखाना मकान का किराया, प्रबन्धको तथा स्थाई कर्मचारियो का वेतन आदि FC है।

PAGE NO.:
DATE: / /

" स्थाई लागतो को पूरक, लागते अप्रत्यक्ष लागते, तथा ऊपरिव्यय लागते, भी कहते है।

17/9/24

(ii) Total vairable cost :- कुल परिवर्तन लागते :-

कुल परिवर्तनशील लागते जो अल्पकाल मे उत्पादन की मात्रा के साथ - साथ प्रत्यक्ष रूप मे परिवर्तित होती रहती है। कुल परिवर्तनशील लागते कहलाती है। यह लागते उत्पादन की मात्रा पर निर्भर करती है उत्पादन बन्द होने पर यह लागते नही लगती है कुल परिवर्तनशील लागते शून्य उत्पादन पर शून्य होती है तथा उत्पादन की मात्रा के अनुसार घटती बढती रहती है।

(iii) Costs per unit :- प्रति इकाई लागते :-

अल्पकाल मे लागतो की प्रति इकाई लागतों के रूप मे निम्न वर्गो मे बाँट जा सकता है।

(i) औसत स्थिर लागत।
(ii) औसत परिवर्तनशील लागत।
(iii) औसत कुल लागत।

(i) Average fixed cost and product :-

कुल स्थाई लागत वस्तु की इकाईयों का भाग देने पर औसत स्थिर लागत प्राप्त होती है। औसत स्थाई लागत उत्पादन की मात्रा के विपरित दिशा मे परिवर्तित होती है अर्थात उत्पादन बढने पर यह घटती है। तथा उत्पादन घटने पर बढती है।

औसत स्थिर लागत को निम्न सूत्र द्वारा ज्ञात किया जा सकता है।

$$AFC = \frac{TFC}{Q}$$

AFC = Average fixed cost
TFC = Total fixed cost.

(ii) Averge vairable cost and product :—

कुल परिवर्तनशील लागत में उत्पादित वस्तुओं की इकाइयों का भाग देने पर औसत परिवर्तनशील लागत प्राप्त होती है। औसत परिवर्तनशील लागत उत्पत्ति के नियमों अथवा परिवर्तनशील अनुपातों के नियमो के अनुसार परिवर्तित होती है।

इसे निम्न सूत्र द्वारा प्राप्त किया जा सकता है।

$$AVC = \frac{TVC}{Q}$$

यहाँ AVC = Average Vairable cost
TVC = Total Vairable cost

(iii) Average Total cost and product :—

कुल लागत मे वस्तु की उत्पादित कुल इकाइयों का भाग देने पर औसत कुल लागत प्राप्त होती है।

$$ATC = \frac{TC}{Q}.$$

PAGE NO.:
DATE: / /

इसे एक अन्य सूत्र से भी ज्ञात किया जा सकता है।

$$ATC = AFC + AVC$$

Table :- 1.2 Cost production relations.

Q	TFC	TVC	TC	AFC	AVC	AC	MC
0	50	0	50	0	0	0	0
1	50	15	65	50	15	65	15
2	50	30	80	25	15	40	15
3	50	40	90	16.7	13.3	30	10
4	50	45	95	12.5	11.3	23.8	5

(iii) Marginal cost and production :- फर्म द्वारा वस्तु की एक पूर्ण इकाई का उत्पादन करने के कुल लागत मे जो वृद्धि होती है वह सीमान्त लागत कहलाती है। फर्म द्वारा एक और इकाई पर लागत ही परिवर्तित होती है अतः स्थिर लागत तथा सीमान्त लागत पर कोई प्रभाव नही पडता

$$MC = TC_{n+1} - TC_n$$

* दीर्घकालीन औसत लागत वक्रों तथा उत्पादन :-

दीर्घकालीन कुल लागत मे वस्तु के उत्पादन इकाईयो का भाग देने पर दीर्घकालीन औसत लागत प्राप्त होती है दीर्घकालीन औसत लागत वक्र उत्पादन की

PAGE NO. :
DATE : / /

Date | 19/9/2024

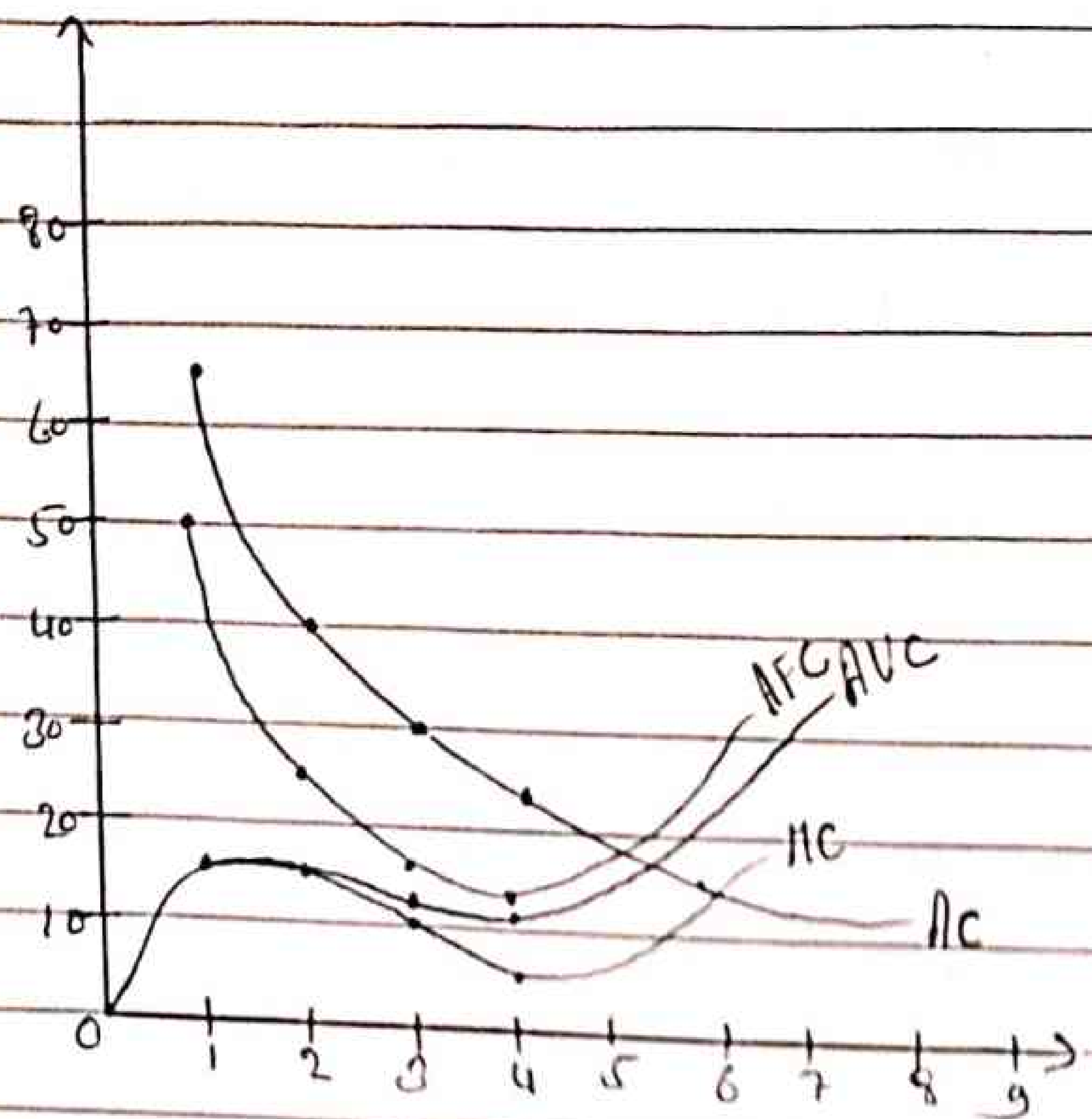

उत्पादन की इकाईयाँ

Sketch :— 1.1

सीमान्त लागत रेखा औसत लागत रेखा को न्यूनतम बिन्दुओं पर काटती है सीमान्त रेखा का न्यूनतम बिन्दु और लागत रेखा तथा औसत परिवर्तन लागत रेखा के न्यूनतम बिन्दुओं से पूर्व होता है

* विभिन्न प्रकार की लागत औसत लागतों मे सम्बन्ध :-

(1) उत्पादन के प्रत्येक स्तर पर कुल औसत लागत ATC = औसत परिवर्तनशील लागत [AVC + औसत स्थिर लागत AFC के होती है] अतः किसी भी बिन्दु पर ATC को AVC रेखा तथा AFC रेखा के योग के द्वारा प्राप्त किया जा सकता है।

ATC रेखा AVC रेखा से सदैव इतनी ही दूरी पर रहती है जितनी AFC रेखा आधार रेखा से दूर रहती है AFC रेखा कभी भी आधार रेखा को AFC करती है।

(2) जब AVC रेखा गिरती हुई होती है तब ATC रेखा भी गिरती हुई होती है. परन्तु जब AVC रेखा बढ़ने लगती है जब कुछ समय तक ATC रेखा AFC रेखा के गिरने के कारण गिरती हुई होती है अर्थात AVC रेखा का ऊपर उठने का बिन्दु ATC रेखा के ऊपर उठने के बिन्दु के बाद प्रारम्भ होता है।

(3) ATC रेखा तथा AVC रेखा दोनो एक दूसरे को कभी स्पर्श नहीं करती।

(4) AFC रेखा तथा AVC रेखा की आकृति अंग्रेजी वर्णमाला के U आकार की होती है।

* Long period Average cost and production :- दीर्घकालीन औसत लागत वक्र तथा उत्पादन

दीर्घकालीन कुल लागत मे वस्तु के उत्पादन की इकाईयों का भाग देने पर दीर्घकालीन औसत लागत लागत प्राप्त होती है। दीर्घकालीन औसत लागत वक्र उत्पादन की विभिन्न मात्राओ न्यूनतम सम्भव औसत लागत को व्यक्त करता है। फर्म की दीर्घकालीन औसत लागत वक्र को उदाहरण द्वारा समझाया जा सकता है।

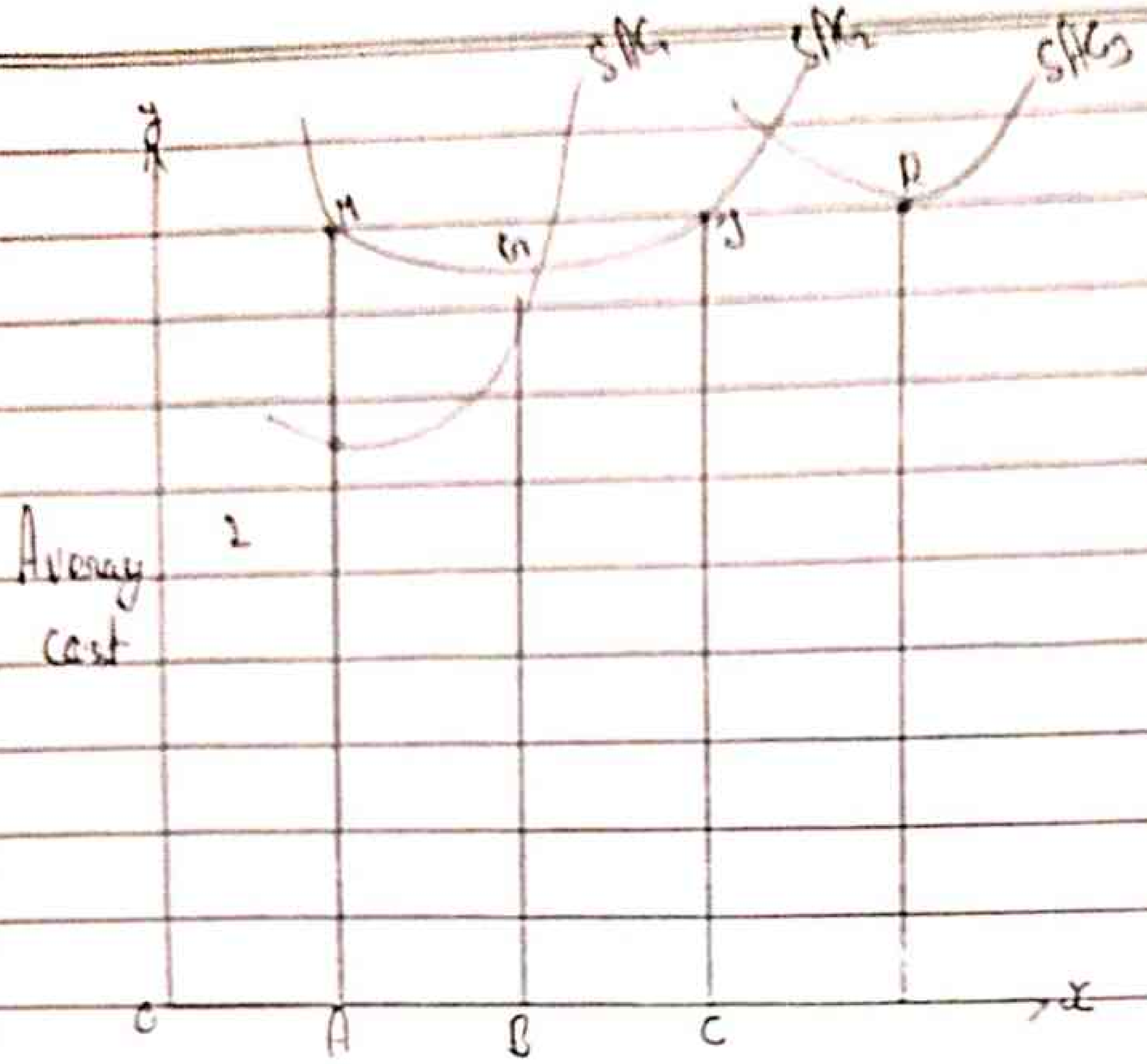

Production

Sketch – 2.1

इस रेखाचित्र को देखने से यह ज्ञात होता है कि फर्म को यदि OB मात्रा पर उत्पादन करना है तो वह छोटे आकार के पैमाने [SAC1] को जुड़े क्योंकि OB मात्रा तक न्यूनतम सम्भव लागत पर उत्पादन किया जा सकता है। उदाहरण के तौर पर OA मात्रा का उत्पादन फर्म के छोटे से यंत्र (SAC1) तथा मध्य आकार के संयंत्र SAC2 दोनों से कर सकती है। लेकिन वास्तव में फर्म छोटे से संयंत्र का ही चुनाव करे क्योंकि SAC1 पर उत्पादन करने पर औसत लागत AL1 आयेगी जबकि SAC2 पर उत्पादन करने पर AH आयेगी जो AL से अधिक है इस तरह OD से अधिक उत्पादन करने के लिए संयंत्र SACD को चुने

PAGE NO.:
DATE: / /

(i) दीर्घकालीन औसत लागत रेखा (LAC) सभी अल्पकालीन औसत लागत रेखाओ (SAC) को ढक लेती है। इसलिए इसे आवरण वक्र कहते है तथा LAC का निर्माण विभिन्न SAC रेखाओ से होता है

(ii) LAC सदैव SAC से कम होता है इसी कारण यह कभी भी SAC से ऊपर नही होता।

(iii) LAC रेखा SAC रेखाओ को केवल स्पर्श करती है। काटती नही है।

(iv) LAC रेखा भी SAC रेखाओ की तरह U आकार की होती है परन्तु यह SAC की अपेक्षा अधिक चपटी होती है।

(v) LAC रेखा के न्यूनतम बिन्दु उत्पादन की न्यूनतम लागत तथा फर्म के अनुकूलतम आकार को व्यक्त करता है

(vi) LAC रेखा फर्म के लिए न्यूनतम वक्र का कार्य करती है क्योकी यह रेखा फर्म के लिए लागत तथा उत्पादन सम्बन्धी सर्वश्रेष्ट सम्भावनाएँ व्यक्त करती है।

(vii) LAC रेखा दीर्घकाल मे प्रत्येक सम्भावित उत्पादन सम्बन्धी सर्वश्रेष्ट मात्रा के लिए न्यूनतम सम्बंधित लागत बतलाती है।

(viii) LAC रेखा SAC रेखाओं को सदैव न्यूनतम बिन्दुओ पर स्पर्श नही करती है।

LAC रेखा केवल एक LAC रेखा को अपने न्यूनतम बिन्दु पर स्पर्श करती है। इस बिन्दु के अतिरिक्त अन्य सभी अतिरिक्त अन्य सभी रेखा को यह इनके गिरते हुए भाग अथवा SAC उठते हुए भाग को स्पर्श करती है। LAC अपने न्यूनतम बिन्दुओं से पूर्व SAC रेखाओं के गिरते हुए भाग को तथा अपने न्यूनतम बिन्दु के बाद इनके उठते हुए भागों को स्पर्श करती है।

Unit — I

Q. पूर्ति के नियम को समझाइए तथा पूर्ति को प्रभावित करने वाले या पूर्ति के निर्धारक तत्व बताइए।

* पूर्ति का अर्थ :-

अर्थशास्त्र मे पूर्ति का अर्थ किसी वस्तु की उस मात्रा से लगाया जाता है जो कोई उत्पादक अथवा विक्रेता किसी दिये हुए मुल्य पर एक निश्चित समयावधि मे बेचने को तैयार हो जाता है।

* पूर्ति की परिभाषा :-

बेन्हम के अनुसार "पूर्ति का तात्पर्य वस्तु की मात्रा से लगाया जाता है जो प्रति समय, इकाई मे बिक्री के लिए उपलब्ध है।

* पूर्ति का नियम :-

पूर्ति का नियम वस्तु के मुल्य तथा उसकी बेची जाने वाली मात्रा मे प्रत्यक्ष सम्बन्ध को व्यक्त करता है। पूर्ति का नियम यह बताता है कि अन्य बातों को स्थिर

PAGE NO.:
DATE: / /

Unit-First

Topic → पूर्ती

Q. पूर्ती के नियम मूल्त को समझाइये तथा पूर्ती को प्रभावित करने वाले या पूर्ति के निर्धारक तत्व बताइए।

* Meaning of Supply :- पूर्ती का अर्थ :-

अर्थशास्त्र मे पूर्ति का अर्थ किसी वस्तु की उस मात्रा से लगाया जाता है जो कोई उत्पादक अथवा विक्रेता किसी दिये हुए मुल्य पर एक निश्चित समयावधि मे बैचने के तैयार होता है।

* Definition of Supply :- पूर्ति की परिभाषा :-

बेन्हम के अनुसार " पूर्ति का तात्पर्य वस्तु की उस मात्रा से लगाया जाता है जो प्रति समय इकाई मे बिक्रि के लिए उपलब्ध है।"

* Law of Supply :- पूर्ति का नियम :-

पूर्ति का नियम वस्तु के मुल्य तथा उसकी बैची जाने वाली मात्रा मे प्रत्यक्ष सम्बन्ध को व्यक्त करता है। पूर्ति का नियम यह बताता है की अन्य बातों के स्थिर रहने पर किसी वस्तु की पूर्ति मुल्य बढने पर बढती है तथा मुल्य घटने पर घटती है।

पूर्ती की तालिका

1. व्यक्तिगत प्रति तालिका
2. बाजार पूर्ति तालिका

PAGE NO.:
DATE: / /

* Personal Supply table :- इस तालिका से यह ज्ञात होता है की एक विशिष्ट विक्रेता एक निश्चित समयअवधी मे विभिन्न मुल्यों पर किसी वस्तु की कितनी कितनी मात्राए बैचने को तत्पर है

* Market Supply table एक वस्तु की बाजार की पूर्ति तालिका यह प्रदर्शित करती है की एक बाजार के किसी वस्तु के सभी विक्रेता विभिन्न मुल्यो पर कितनी कितनी मात्राएं निश्चित समय अवधि मे बैचने को तत्पर है।

* Assumptions of the Law of sup :- पूर्ति के नियम की मान्यताएं :- इस नियम की प्रमुख मान्यताएं निम्नलिखित है।

1. उत्पति के साधनो के मुल्य अपरिवर्तित रहने चाहिए।
2. क्रेताओं एवं विक्रेताओं की आय स्थिर रहनी चाहिए।
3. क्रेताओ एवं विक्रेताओं की रूचीयाँ एवं पसन्द स्थिर रहती है।
4. उत्पादको एव विक्रेताओं के तकनीकि ज्ञान मे वृद्धि नही होनी चाहिए।
5. वस्तु की कीमत मे और अधिक परिवर्तनो की आशंका नही होनी चाहिए।
6. वस्तु के मुल्य मे बहुत सूक्ष्म परिवर्तन भी पूर्ती मे परिवर्तन लाते है।

* पूर्ति को प्रभावित करने वाले या पूर्ति के निर्धारक तत्व

(1) वस्तु का मुल्य
(2) अन्य वस्तुओं का मुल्य
(3) वस्तु के उत्पादन साधनों का मुल्य
(4) उत्पादन तकनीक
(5) सरकार की नीति
(6) परिवहन एवं संचार साधन
(7) प्राकृतिक तत्व
(8) युद्ध तथा राजनीतिक बाते
(9) उत्पादको तथा विक्रेताओ की रुची
(10) उत्पादको एव विक्रेताओ के गठबन्धन
(11) देश मे प्रचलित प्रस्तुतियाँ

(1) Price of commodity :— वस्तु का मुल्य

वस्तु की पूर्ति को प्रभावित करने वाला प्रमुख तत्व मुल्य है। मुल्य मे वृद्धि होने पर सामान्यतः पूर्ति बढ जाती है। तथा मुल्य मे कमी होने पर पूर्ति घटती है। क्यूंकी मुल्य की मात्रा पर उत्पादक अथवा विक्रेता का लाभ निर्भर करता है।

(2) Prises of other commodities :— अन्य वस्तुओं का मुल्य

एक वस्तु से मिलती जुलती अन्य वस्तुओं के मुल्य मे परिवर्तन का रुप उस वस्तुओं की पूर्ति पर प्रभाव पडता है। जब अन्य वस्तुओं के मुल्य बढ जाते है तथा उस वस्तु का मुल्य अपरिवर्तित होता है तो उत्पादक अन्य वस्तुओ के उत्पादन मे एवं बिक्रि मे अधिक रुची लेते है अतः उन वस्तुओ की

PAGE NO.:
DATE: / /

पूर्ति घट जाती है जबकि इस वस्तु के मूल्य बढ़ने पर तथा अन्य वस्तुओं के मूल्य स्थिर रहने पर अन्य वस्तुओं की पूर्ति घट जाती है तथा इनकी पूर्ति बढ़ जाती है।

(iii) Price of factores of production वस्तु के उत्पादन साधनो का मूल्य एवं वस्तु के उत्पादन के लिए जिन साधनों [कच्चे माल, श्रम, पूंजी आदि] का प्रयोग किया जाता है उनके मूल्यो मे परिवर्तन का भी वस्तु की पूर्ति पर प्रभाव पड़ता है। वस्तु के मूल्य अपरिवर्तित रहते हुए यदि उत्पादन के साधनों का मूल्य घट जाता है दूसरी और उत्पादन के साधनों का मूल्य बढ़ जाने पर पूर्ती घट जाती है।

(iv) Production takenowledgy :- उत्पादन तकनीक :-
उत्पादन तकनीक मे सुधार होने पर वस्तु की लागत मे कमी होती है, उत्पादक को लाभ अधिक मिलने लगता है परिणाम स्वरूप वस्तु की पूर्ति बढ़ जाती है।

(v) Government policy :- सरकार की नीति :-
सामान्यत: सरकार जिन वस्तुओं पर कर कम लगाती है तथा उत्पादन मे वृद्धि के लिए अनुदान देती है उनका उत्पादन व पूर्ति बढ़ जाते हैं तथा सरकार जिन वस्तुओं पर ऊंचे करो द्वारा उत्पादन को हतोत्साहित करती है उनकी पूर्ति घट जाती है। क्योंकि अधिक कर वस्तु को महंगा बना देती है।

PAGE NO.:
DATE: / /

(vi) Means of transport and communication :- जिन क्षेत्रों में अच्छे, सुगम एवं पर्याप्त परिवहन साधनों का विकास होता है वहाँ अधिकांश वस्तुओं की पूर्ति में वृद्धि होती है जबकि इन साधनों के अभाव अथवा कमी की स्थिति में पूर्ति भी कम हो जाती है लेकिन आयात निर्यात व्यापार के अन्तर्गत परिवहन साधनों का उल्टा प्रभाव पड़ता है।

(vii) Natural factors :- प्राकृतिक तत्व :- प्राकृतिक साधनों के बहुमूल्य तथा अनुकूलतम प्रस्तुतियों में वस्तुओं की पूर्ति बढ़ती है तथा प्रतिकूल प्रस्तुतियों के कारण वस्तुओं की पूर्ति घट जाया करती है। कृषि उत्पत्ति की पूर्ति तो पूर्णतः प्राकृतिक तत्वों द्वारा प्रभावित होती है। अतिवृष्टि, अनावृष्टि, बाढ़, टिड्डी दल फसलों में लगने वाले रोग आदि बातें कृषि को बरबाद करके कृषिगत पदार्थों की पूर्ति कम कर देते है।

(viii) War and political Matters :- युद्ध एवं राजनैतिक बातें :- युद्ध के समय सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था अस्त व्यस्त होने से उत्पादन क्रियां, परिवहन एवं संचार, व्यापार, वाणिज्य आदि पर भारी प्रभाव पड़ने से पूर्ति घट जाती है। इसी प्रकार रा० उथल - पुथल भी सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था को प्रभावित करके पूर्ति को कम कर देती है।

(x) Interest in products and vendors उत्पादकों एवं विक्रेताओं की रूची

PAGE NO.:
DATE: / /

पूर्ति घट जाती है जबकि इस वस्तु के मूल्य बढ़ने पर तथा अन्य वस्तुओं के मूल्य स्थिर रहने पर अन्य वस्तुओं की पूर्ति घट जाती है तथा इनकी पूर्ति बढ़ जाती है।

(iii) Price of factores of production वस्तु के उत्पादन साधनों का मूल्य :- एक वस्तु के उत्पादन के लिए भिन्न साधनों [कच्चे माल, श्रम, पूंजी आदि] का प्रयोग किया जाता है इनके मूल्यों मे परिवर्तन का भी वस्तु की पूर्ति पर प्रभाव पड़ता है। वस्तु के मूल्य अपरिवर्तित रहते हुए यदि उत्पादन के साधनों का मूल्य घट जाता है दूसरी और उत्पादन के साधनों का मूल्य बढ़ जाने पर पूर्ती घट जाती है।

(iv) Production takenowlodgy :- उत्पादन तकनीक :-
उत्पादन तकनीक मे सुधार होने पर वस्तु की लागत मे कमी होती है, उत्पादक को लाभ अधिक मिलने लगता है परिणाम स्वरूप वस्तु की पूर्ति बढ़ जाती है।

(v) Government policy :- सरकार की नीति :-
सामान्यत: सरकार जिन वस्तुओं पर कर कम लगाती है तथा उत्पादन मे वृद्धि के लिए अनुदान देती है उनका उत्पादन व पूर्ति बढ़ जाते हैं तथा सरकार जिन वस्तुओं पर ऊंचे करो द्वारा उत्पादन को हतोत्साहित करती है उनकी पूर्ति घट जाती है। क्योंकि अधिक कर वस्तु को महंगा बना देती है।

PAGE NO.:
DATE: / /

(vi) Means of transport and communication :- जिन क्षेत्रों मे अच्छे, सुगम एवं पर्याप्त परिवहन साधनों का विकास होता है वहाँ अधिकांश वस्तुओं की पूर्ति मे वृद्धि होती है जबकि इन साधनों के अभाव अथवा कमी की स्थिति मे पूर्ति भी कम हो जाती है लेकिन आयात निर्यात व्यापार के अन्तर्गत परिवहन साधनों का उल्टा प्रभाव पड़ता है।

(vii) Natural factors :- प्राकृतिक तत्व :- प्राकृतिक साधनों के बहुमूल्य तथा अनुकूलतम प्रस्थितियों मे वस्तुओ की पूर्ति बढ़ती है तथा प्रतिकूल प्रस्थितियों के कारण वस्तुओं की पूर्ति घट जाया करती है। कृषि उत्पत्ति की पूर्ति को पूर्णतः प्रकृतिक तत्वों द्वारा प्रभावित होती है। अतिवृष्टि, अनावृष्टि, बाढ़, टिड्डी दल फसलों मे लगने वाले रोग आदि जाते कृषि को बरबाद करके कृषिगत पदार्थों की पूर्ति कम कर देते है।

(viii) War and political Matters :- युद्ध एवं राजनैतिक बाँते :- युद्ध के समय सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था अस्त व्यस्त होने से उत्पादन क्रियां, परिवहन एवं सचांर, व्यापार, वाणिज्य आदि पर भारी प्रभाव पड़ने से पूर्ति घट जाती है। इसी प्रकार रा० उथल - पुथल भी सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था को प्रभावित करके पूर्ति को कम कर देती है।

(x) Interest in products and vendors उत्पादकों एव विक्रेताओं की रूची

PAGE NO. :
DATE : / /

24/9/2024

जिन वस्तुओं के उत्पादन या विक्रय मे लाभ की अधिकता अथवा अन्य कारणो से उत्पादको एवं विक्रेताओ की रूची अधिक होती है, इन वस्तुओं के उत्पादन एवं पूर्ति मे वृद्धि होती है।

(xi) Alliances of producers and sellers: उत्पादको एवं विक्रेताओ के गठबन्धन

जब किसी वस्तु के उत्पादन अथवा विक्रेता एकाधिकार की स्थिती प्राप्त करने के लिए संगठन बना लेते है तो ऐसे समय मे वस्तुओं की पूर्ति घट जाती है।

(ii) Prevailing in the country :- देश मे प्रचलित परिस्थितिया

(iv) यदि देश मे समृद्धि की स्थिति है तो वस्तुओ की पूर्ति बढती है जबकी देश मे आर्थिक अवसादन की स्थिती है तो पूर्ति घट जाती है।

(v)

PAGE NO
DATE

24/9/2024

Q. पूर्ति की लोच को समझाते हुए इसकी लोच को प्रभावित करने वाले तत्व बताइए।

* Mean of ilasicity supply :- पूर्ति की लोच का अर्थ :-
पूर्ती की लोच का तात्पर्य किसी वस्तु के मुल्य परिवर्तन के कारण उस वस्तु की पूर्ती की मात्रा मे हुए परिवर्तनों की माप से होता है पूर्ति की लोच वह दर है जिसमे मुल्य परिवर्तनो के कारण पूर्ति की मात्रा मे परिवर्तन होता है
इसे सूत्र के रूप मे निम्न प्रकार से व्यक्ति कर सकते है

Es. [वस्तुओ की पूर्ती की लोच] = पूर्ति मे आनुपातिक परिवर्तन / मुल्य मे आनुपातिक परिवर्तन

* पूर्ती की लोच की श्रेणियाँ :-
पूर्ती की लोच की पाँच श्रेणियां होती है जो निम्नलिखित है।
(1) पूर्णी लोचदार पूर्ति
(2) अधिक लोचदार पूर्ति
(3) लोचदार या इकाई लोचदार
(4) बेलोचदार पूर्ती
(5) पूर्ण बेलोचदार पूर्ती

(1) Perfect Ilasiticity Supply :-
जब मुल्यो मे थोडी सी वृद्वि होने पर पूर्ती मे असिमित वृद्वि हो जाए तथा वृत मुल्य मे थोडी सी कमी होने पर पूर्ती घटकर शुन्य हो जाए तो पूर्ती पूर्ण लोचदार

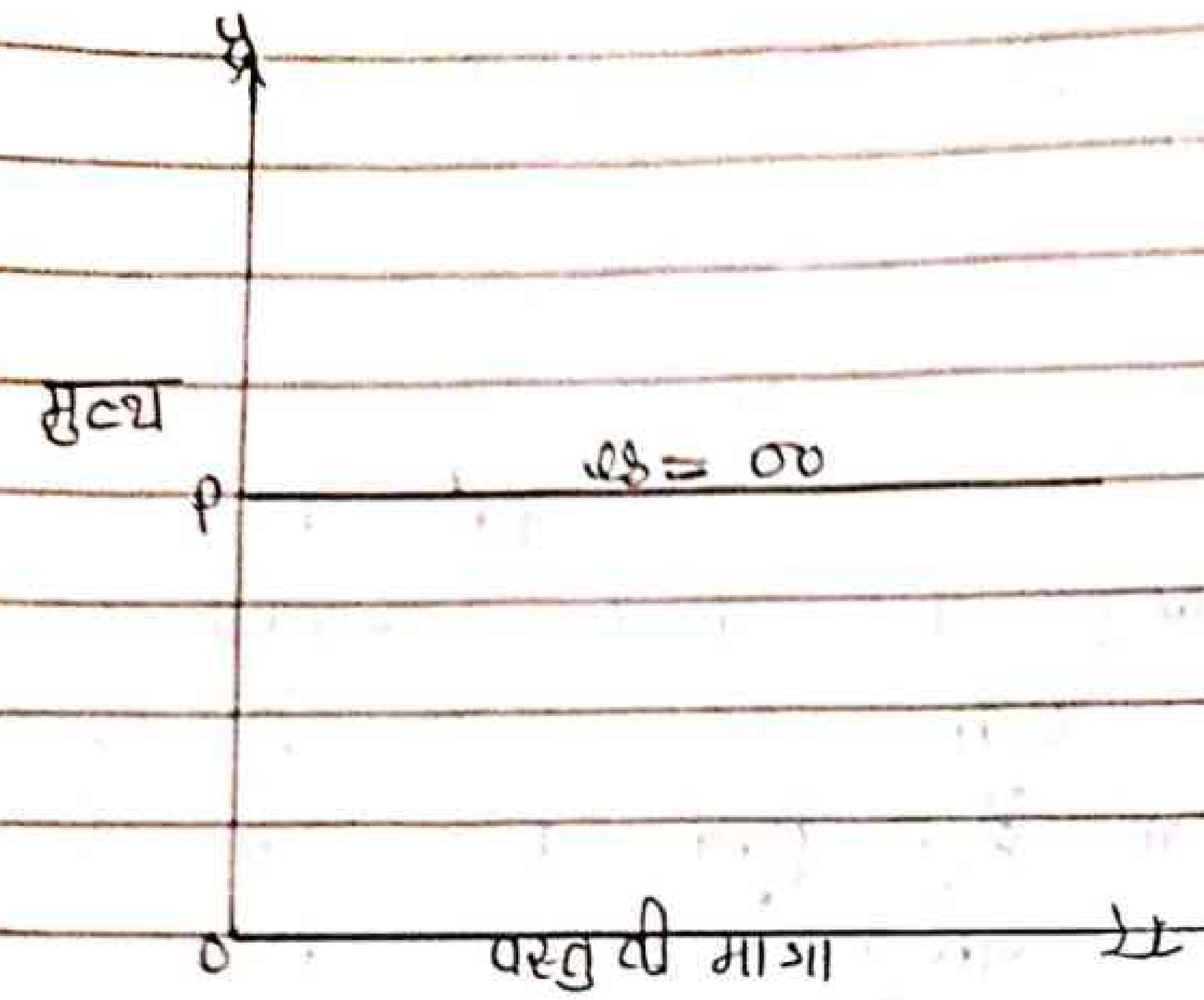

रेखाचित्र :- पूर्ण लोचदार पूर्ति

(2) More elastic supply :- अधिक लोचदार पूर्ति :-
जब वस्तु के मूल्य में थोड़ी सी वृद्धि होने पर पूर्ति में अपेक्षाकृत अधिक वृद्धि होती है तो यह अधिक लोचदार पूर्ति कहलाती है

उदाहरण :- मूल्य मे पाँच प्रतिशत वृद्धि होने पर पूर्ति मे 10 से 15% की वृद्धि हो जाये तो यह अधिक लोचदार पूर्ति होगी।

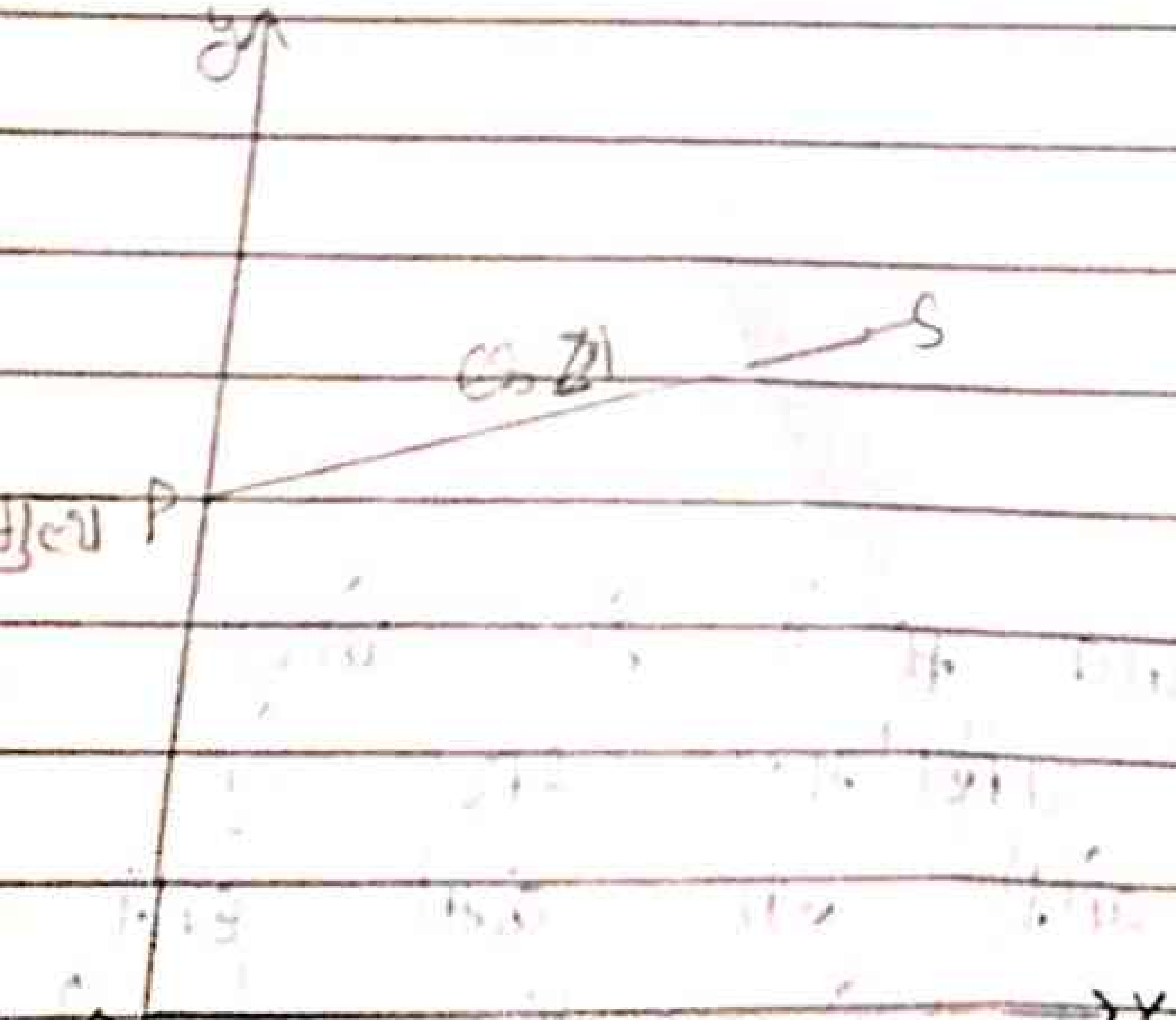

रेखाचित्र :- अधिक लोचदार पूर्ति

PAGE NO.:
DATE: / /

25/9/2024

(3) Unit elastic supply curve :— इकाई लोचदार पूर्ति वक्र :—

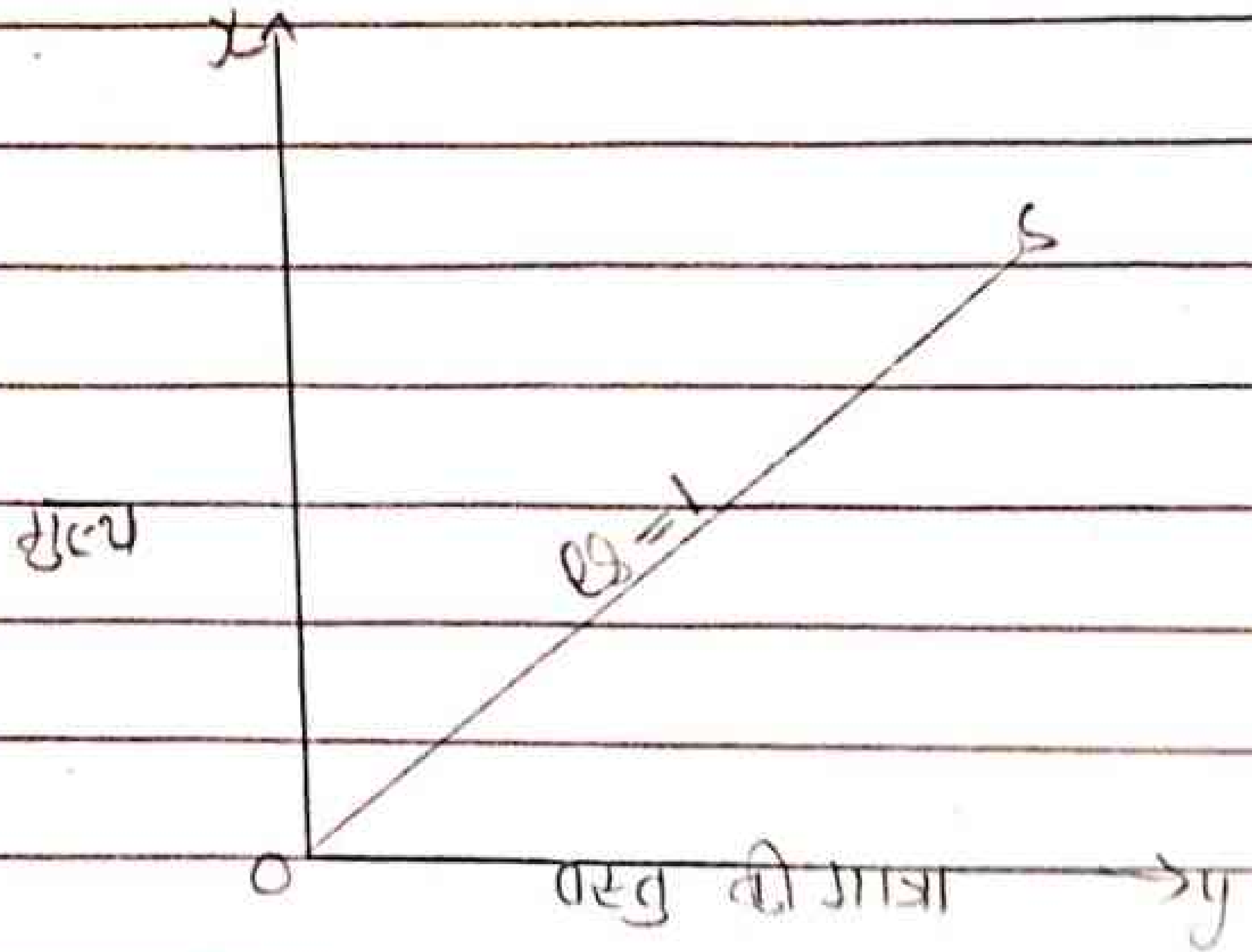

रेखाचित्र :— इकाई लोचदार पूर्ति वक्र

यदि किसी वस्तु के मूल्य मे जितनी वृद्धि अथवा कमी होती है इतनी ही पूर्ती मे वृद्धि या कमी हो जाए तो इसे इकाई लोचदार पूर्ती कहते है। जैसे 5% मूल्य वृद्धि होने पर वस्तु की पूर्ति भी 5% बढ़ जाए

(4) Elastic Supply :— बेलोचदार पूर्ति :— यदि किसी

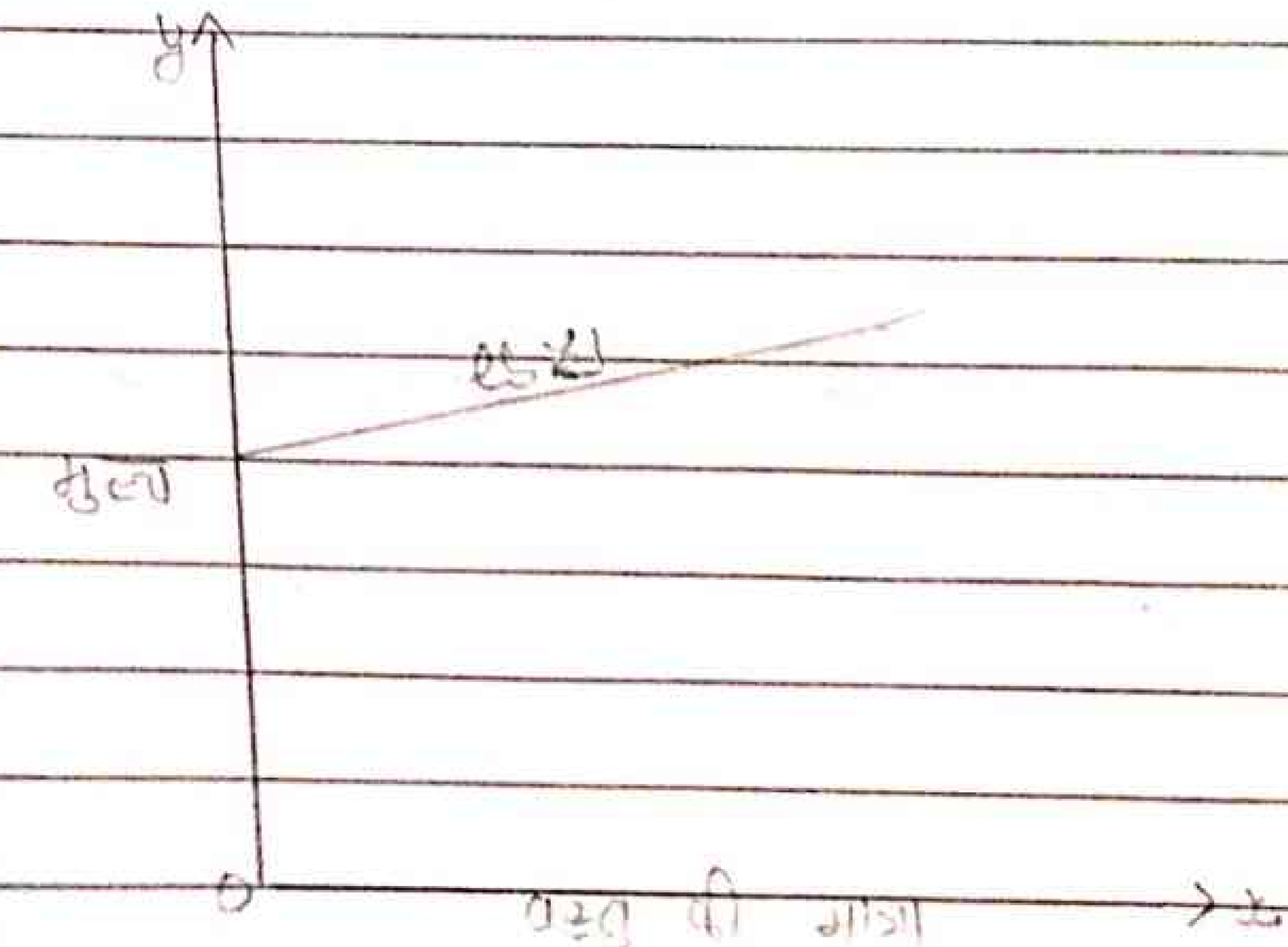

रेखाचित्र :— बेलोचदार पूर्ति वक्र

यदि किसी वस्तु के मुल्य मे परिवर्तन कि तुलना मे इसकी प्रूति मे कम दर से परिवर्तन होते है तो वस्तु की प्रूति बेलोचदार होती है।
उदाहरण के लिए :- मुल्य मे 10% वृद्धि होने पर प्रूति मे केवल 5% की वृद्धि होगी।

⑤ Perfectly inelastic supply :- पूर्ण बेलोचदार प्रूती :-

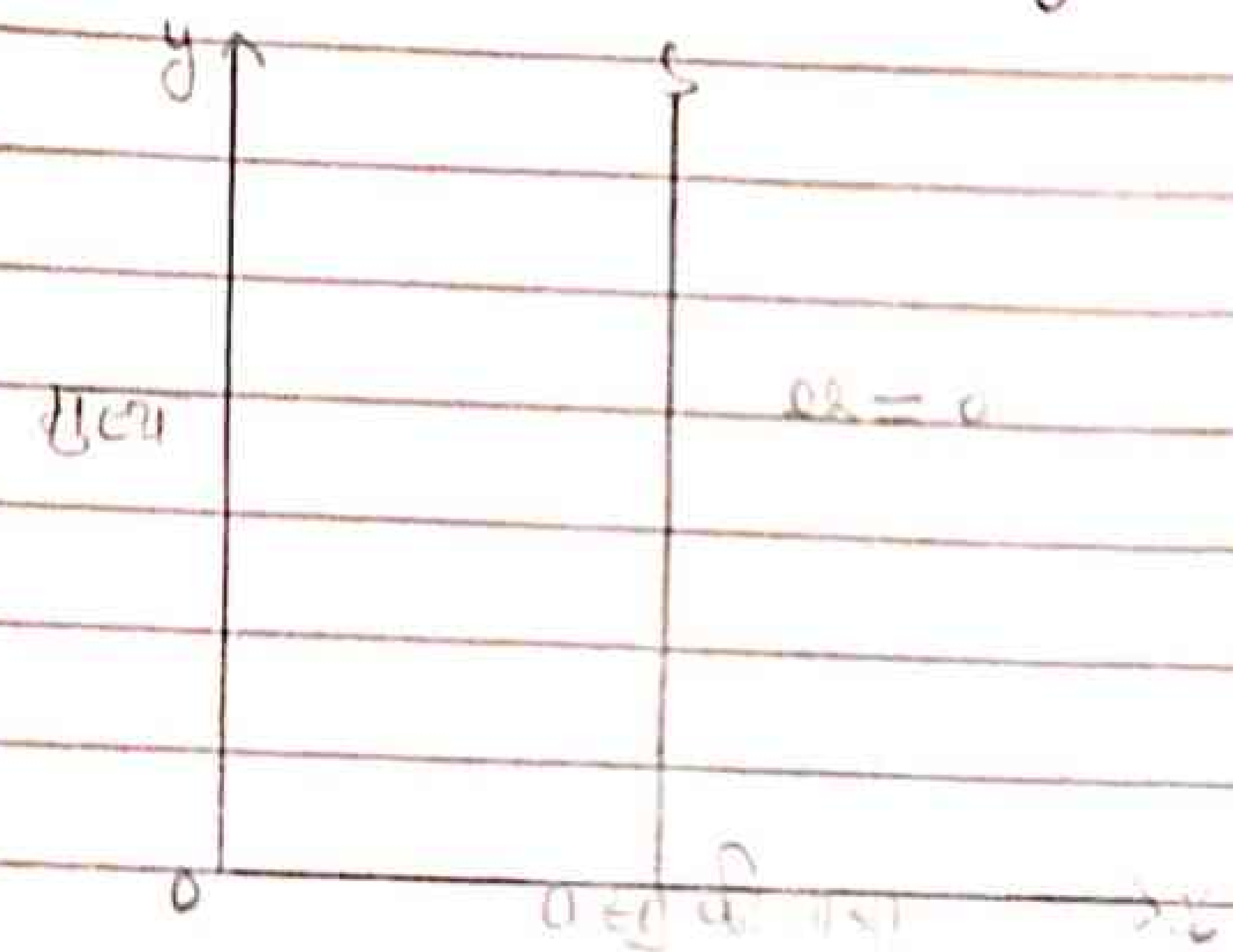

रेखाचित्र :- पूर्ण बेलोचदार प्रूति वक्र

जब वस्तु के मुल्य मे बहुत अधिक परिवर्तन होने पर भी वस्तु की प्रूति मे बिल्कुल परिवर्तन नही होता है तो इसे पूर्ण बेलोचदार प्रूती वक्र कहते है यह भी काल्पनिक होता है।

* factor affecting elasity of su. प्रूती की लोच को प्रभावित करने वाले तत्व

किसी वस्तु की प्रूति की लोच को निम्न तत्व प्रभावित करते है

वस्तु का स्वभाव / प्रकृति
उत्पादन प्रणाली तथा प्रयुक्त तकनीक

PAGE NO. :
DATE / /

(3) उत्पत्ति के नियम
(4) समय तत्व

(1) Natur of commodity :- शीघ्र नष्ट होने वाली वस्तुओं की पूर्ती बेलोचदार होती है क्योंकि मूल्य बढ़ने या घटने पर इनकी पूर्ति मे परिवर्तन सम्भव नही होते दुसरी और टिकाऊ वस्तुओं को उत्पन्न करके उन्हे लम्बे समय तक स्टॉक मे सुरक्षित रखा जा सकता है अत: उत्पादक या विक्रेता बढ़े हुए मुल्यों का लाभ उठाने के लिए पूर्ति बढ़ा देता है और मुल्य मे गिरावट आने पर पूर्ति बन्द कर देता है

(2) Methods and technique of pr. उत्पादन प्रणाली तथा प्रयुक्त तकनीक :-
अगर किसी वस्तु के उत्पादन मे किसी तकनीक ज्ञान के प्रयुक्त आवश्यकता नही पड़ती और न उत्पादन प्रणाली ही जटिल है तो ऐसी वस्तुओ की पूर्ती लोचदार होती है क्योंकि मुल्यो मे वृद्धि होने पर साधारण उत्पादक भी इसका उत्पादन करने लगते है और पूर्ती बढ़ा देते है दुसरी और ऐसी वस्तुओं जिनकी उत्पादन क्रिया जटिल होती है जिसमे किसी विशिष्ट तकनीक या तकनीक ज्ञान के प्रयोग की आवश्यकता पड़ती है तो इनकी माँग बेलोचदार होती है क्योंकि बढ़े हुए मुल्यो का लाभ उठाने के लिए उत्पादकों की सीमित संख्या ही आगे बढ़ती है

(3) Law of production :- उत्पत्ति के नियम :-
जिन वस्तुओ के उत्पादन मे उत्पत्ति ह्रास नियम लागू होता है

PAGE NO.:
DATE: / /

24/9/2024

इनका मूल्य बढ़ने पर भी इनकी उत्पत्ति बढ़ना लाभकारी न होने के कारण इनकी पूर्ति पूर्णतया बेलोचदार होती है। क्योंकि उत्पादन बढ़ाने पर लागत बढ़ने से लाभ की मात्रा कम हो जाती है। दूसरी ओर जिन वस्तुओं का उत्पादन उत्पत्ति वृद्धि नियम के अनुसार होता है तो इनका उत्पादन बढ़ने पर लागत घट जाती है अतः इनके मूल्यों मे वृद्धि इनकी पूर्ति मे बड़ी मात्रा मे
(5) वृद्धि का होती है अतः इनकी पूर्ति लोचदार होती है २

* Time aliment :— समय तत्र
पूर्ति की घट बढ़ी पर समय तत्व का बड़ा भारी प्रभाव पड़ता है। दिर्घकाल या अतिदिर्घकाल मे उत्पत्ति के पैमाने को चाहिए जिस मात्रा मे घटाया बढ़ाया जा सकता है इसके विपरीत अल्पकाल मे पूर्ति को घटाना बढ़ाना सम्भव नही होता है इस प्रकार दिर्घकाल मे पूर्ति की लोच अधिक होती है जबकी अल्पकाल मे पूर्ति बेलोचदार होती है

PAGE NO
DATE

26/9/2024

Unit – IV

Topic — अल्पाधिकार

Q. अल्पाधिकार का अर्थ बताते हुए इसकी विशेषताएँ बताइये तथा अल्पाधिकार के प्रकार बताइये।

Ans Meaning of Oligopoly :- अल्पाधिकार का अर्थ —

अल्पाधिकार बाजार की वह स्थिती होती है जिसमे वस्तु के अल्प अथवा थोडे से विक्रेता होते है वस्तु की कुल पूर्ती मे व्यक्तिगत विक्रेता का बडा भाग होता है अतः वह अपनी क्रियाओं द्वारा बाजार के अन्य विक्रेताओं की क्रियाओं तथा वस्तु के मूल्य को प्रभावित कर सकता है।

* मेयर्स के अनुसार :—

"अल्पाधिकार बाजार की इस अवस्था को कहते है जहाँ विक्रेताओ की संख्या इतनी कम होती है की प्रत्येक विक्रेता की पूर्ति का बाजार के मूल्य पर प्रभाव पडता है। तथा विक्रेता इस बात को जानता है"

Reachard a Bilass :—

रिचर्ड ए बिलास ने अल्पाधिकार को परिभाषित करते हुए लिखा है " इस बाजार प्रतिरूप की विशेषता यह है की बाजार मे कुछ विक्रेता ऐसी वस्तुएं बेचते है जो एक दूसरे के लिए अच्छे स्थानापन्न वस्तुऐ हो अर्थात जिनकी मांग अति लोच अत्यधिक हो इसके अतिरिक्त, एक फर्म द्वारा लिए गए कीमत निर्धारण सम्बंधि नितियों पर उद्योग की अन्य फर्मों द्वारा

PAGE NO. :
DATE : / /

किए गये विगत निर्धारित सम्बन्धित निर्णयों पर उद्योग की अन्य फर्मों द्वारा विचार किया जाना भी आवश्यक है।

* Features of oligopoly :- अल्पाधिकार की विशेषताएँ :- इसकी विशेषताएँ निम्नलिखित है।

(5)

(1) विक्रेताओं की थोड़ी संख्या
(2) प्रमापित अथवा विभेदित वस्तुएँ
(3) परस्पर निर्भरता
(4) विज्ञापन व विक्रय सम्वर्धन लागते
(5) प्रतियोगिता
(6) फर्मों के प्रवेश व बहिर्गमन मे कठिनाई
(7) फर्म का माँग वक्र

(1) Few Sellers :- विक्रेताओं की थोड़ी संख्या :- अल्पाधिकार मे विक्रेताओं की थोड़ी संख्या होती है। विक्रेताओं की थोड़ी संख्या से तात्पर्य यह है की प्रत्येक विक्रेता बाजार की कुल पूर्ति का एक बड़ा भाग नियंत्रित करता है तथा वह अपनी क्रियाओं द्वारा दूसरे विक्रेताओं की क्रियाओं तथा मूल्य को प्रभावित करता है।

(2) Qualified or requested goods : प्रमापित अथवा विभेदित वस्तुएँ :-

अल्पाधिकार मे विभिन्न उत्पादक समरूप प्रमापित वस्तु का उत्पादन व विक्रय कर सकते है।

PAGE NO
DATE

अथवा विशेष वस्तु का यदि वे समरूप वस्तु का उत्पादन करते हैं तो इस स्थिति को विशुद्ध अल्पाधिकार कहते हैं।

Not Index पूर्ण करो

Introduction

Reference

Remark/Total

Sh. Kash 26/09/2024

Sub. का नाम topic को अंडरलाइन करो महत्वपूर्ण बिन्दु अंडरलाइन करो

27/9/2024

(3) Interdependence परस्पर निर्भरता :—

अल्पाधिकार मे उत्पादन कार्य मे लगी हुई सभी फर्मे एक दूसरे पर निर्भर होती है अल्पाधिकार मे एक उत्पादक की नीतियाँ दूसरे उत्पादक को सीधी प्रभावित करती है क्योंकि विभिन्न विक्रेताओं द्वारा निकट स्थानापन्न वस्तुएँ उत्पन्न की जाती है एक विक्रेता की उत्पादन तथा मूल्य नीतियो का अध्ययन अन्य उत्पादकों द्वारा किया जाता है तथा वे उसकी नीतियों को विफल करने के लिए अपनी नई नीति लागू कर सके

(4) Advertising and sales promotion would be involved विज्ञापन एवं विक्रय सम्वर्धन लागतें :—

अल्पाधिकार मे विभिन्न उत्पादकों के परस्पर निर्भर होने के कारण विज्ञापन तथा विक्रय सम्वर्धन क्रियाएँ महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है यदि एक विक्रेता अपनी वस्तु के विज्ञापन पर

लगातार अधिक खर्चा करता रहता है तथा इसके अन्य प्रतिद्वंद्वी ऐसा नहीं करते तो इसका भार बढ़ जाता है तथा अन्य विक्रेताओं का घट जाता है अतः एक विक्रेता जब विज्ञापन करता है तथा अन्य विक्रेता तो दूसरे विक्रेताओं को भी अपनी वस्तुओं का विज्ञापन अपने बाजार भाग को बनाये रखने के लिए करना पड़ता है।

* Profeshor W. J. Bomal :- के अनुसार अल्पाधिकार मे विज्ञापन के महत्व को स्पष्ट करते हुए लिखा है। "अल्पाधिकार मे विज्ञापन जीवन मृत्यु का प्रश्न बन जाता है। क्योंकी फर्म अपने प्रतियोगियों के मुकाबले का विज्ञापन नहीं कर सकती कर सकती है तो इसके ग्राहक दूसरे उत्पादकों के पास जाने लगते है।"

* Competition :- प्रतियोगिता :- अल्पाधिकार बाजार मे कदचित विभिन्न उत्पादक अथवा विक्रेता आपस मे कड़ी प्रतिस्पर्धा करते है। अनेक बार इस कड़ी प्रतिस्पर्धा के कारण कुछ फर्मे एकाधिकारी संगठन बना लेती है।

(6) Difficulty in entry and exit of firms. फर्मों के प्रवेश व बहिर्गमन मे कठिनाई

अल्पाधिकार मे नई फर्मों मे प्रवेश मे पेटेन्ट, रॉयल्टी, ट्रेडमार्क आदि के कारण कठिनाई होती है तथा स्थाई सम्पतियों मे अधिक विनियोजन के कारण पुरानी फर्मों के बहिर्गमनो मे कठिनाई होती है।

(7) Demand curve of the firm :- अल्पाधिकार मे फर्म का माँग वक्र अनिश्चित होता है क्योंकि प्रत्येक फर्म का व्यवहार स्वतंत्र एवं निश्चित नहीं होता बल्कि यह अन्य फर्मों के व्यवहार पर निर्भर करता है। इसलिए अल्पाधिकार मे फर्म का सही सही माँग वक्र नहीं खींचा जा सकता। Hall which ने अल्पाधिकारी माँग वक्र के खींचने की कठिनाइयां बताते हुए लिखा है की एक अल्पाधिकारी फर्म मे समग्र माँग की कोई विशेष ख्याति नहीं पाई जाती है एवं अल्पाधिकारी बाजार मे विक्रेताओं की परस्पर निर्भरता किसी भी अकेले विक्रेता के माँग वक्र निर्धारण को जटिल बना देती है।

(8) Similar or similar products समान या विभेदित उत्पाद — इस सम्बन्ध मे प्रतिस्पर्धा जैसे कुछ अल्पाधिकार उद्योगो द्वारा समान उत्पादो का उत्पादन किया जाता है जबकि विभेदित उत्पाद दूसरो द्वारा उत्पादित किये जाते है जो स्वाधिकार प्रतिस्पर्धा के समान होते है

अल्पाधिकार के दो मुख्य प्रकार निम्नलिखित है

(1)

(1) Similar product oligopoly — समान उत्पाद अल्पाधिकार — इस प्रकार के अल्पाधिकार मे कच्चे माल को संशोधित किया जाता है या मध्यवर्ती वस्तुओं का उत्पादन किया जाता है तथा इनका उपयोग अन्य उद्योगो द्वारा इनपुट के

PAGE NO.
DATE / /

रूप मे किया जाता है उदाहरण के लिए स्टील, अल्युमीनिय, तथा पेट्रोलियम

(2) Distinguished product oligopoly विभेदित उत्पाद अल्पाधिकार :—

इस प्रकार के अल्पाधिकार मे कर मुख्य ध्यान व्यक्तिगत उपभोग के लिए विक्रय किये जाने वाले वस्तुओं पर होता है महत्वपूर्ण यह है कि व्यक्तियों की विभिन्न आवश्यकताएं तथा इच्छाएँ होती है जो उन्हे विविधता का लाभ प्रदान करती है उदाहरण के लिए घरेलू डिटरजेंट, आटे मोबाइल तथा Computer

* बडे फर्मो की अल्प संख्या :—

अल्पाधिकार बाजार की मुख्य विशेषता यह है की यह एक ऐसा उद्योग है जिसमे अल्प संख्या को बडी फर्मों का अस्तित्व होता है जिनमे से प्रत्येक समग्र बाजार के आकार की तुलना मे अपेक्षाकृत बडा होता है। यह विशिष्टता अपेक्षाकृत बडी फर्मो को प्रयाप्त बाजार नियंत्रण प्रदान करती है। प्रत्येक फर्म एकाधिकार के रूप मे अधिक नियंत्रण दर्शाती है। परन्तु एकाधिकृत प्रतिस्पर्धी फर्म की तुलना मे निश्चित रूप से अधिक है।

* Types of oligopoly :— अल्पाधिकार के प्रकार :—

अल्पाधिकार के उत्पादन विभेदन क्षमता तथा फर्म के कपटपूर्ण व्यवहार के आधार पर विभिन्न प्रकारो

PAGE NO.:
DATE: / /

मे विभक्त किया गया है।

1) Homogeneous or pure or perfect oligopoly :- [सजातीय या शुद्ध या पूर्ण अल्पाधिकार]

इस स्थिति मे फर्म, सीमेंट, ताम्बा, लोहा, स्टील तथा एल्यूमीनियम जैसे समरूप उत्पादों का उत्पादन करती है इसलिए उपभोक्ता द्वारा किसी फर्म की वस्तुएँ क्रय करने का निर्णय केवल कीमत प्रतिफल से प्रभावित होता है। इसमे से अधिकांश संगठनो मे प्रौद्योगिकी उन फर्मों की संख्या को सीमित करती है जो उद्योग मे क्रय कर सकती है।

(2) Heterogeneous or Imperfect or Differentiated oligopoly — विषम या अपूर्ण या विभेदित अल्पाधिकार :-

एक विभेदित अल्पाधिकार मे फर्म विभेदित उत्पादों का उत्पादन करती है। उत्पादों को उनकी कुछ विशेषताओं जैसे गाड़ी कार, छोटे रिक्शा, ट्रक आदि के आधार पर विभेदित किया जाता है। ऑटोमोबाइल उद्योग को उनकी उपयोगिता, वाहन के स्थान तथा अन्य विशेषताओं जैसे रूप रेखा आकार डिजाइन आदि के आधार पर भी विभेदित किया जाता है।

(3) Collusive Oligopoly :- सहयोग अल्पाधिकार :-

यदि फर्म मूल्य या उत्पादन या दोनो का निर्धारण करने मे एक दूसरे का सहयोग करती है। तो इस

PAGE NO :
DATE / /

सहयोगी या सहकारी अल्पाधिकार कहा जाता है।
उत्पादन संघ इस प्रकार के अल्पाधिकार मे आते है।

(4) Non-collusive oligopoly :— [गैर सहयोगी अल्पाधिकार]
यदि एक अल्पाधिकार बाजार मे फर्म एक दूसरे के साथ प्रतिस्पर्धा करती है, तो इसे गैर सहयोगी या गैर - सहकारी अल्पाधिकार कहा जाता है
उत्पादन संघ इस प्रकार के अल्पाधिकार के अन्तर्गत आते है। उदाहरण के लिए - इंटरनेट तथा दूरसंचार सेवाएँ प्रदान करने मे प्रतिद्वंद्वी फर्मों के मध्य गलाकाट प्रतिस्पर्धा होती है।

PAGE NO
DATE / /

20/9/2024

Topic :— Monopoly Comptition.

Q एकाधिकृत प्रतिस्पर्धा का अर्थ बताते हुए इसकी विशेषताएं बताइए तथा एकाधिकृत प्रतिस्पर्धा के अन्तर्गत साम्य एवं कीमत उत्पादन किस प्रकार होता है स्पष्ट कीजिए

* Meaning of an authorised comp. एकाधिकृत प्रतिस्पर्धा का अर्थ :—

एकाधिकृत प्रतिस्पर्धा का अर्थ बाजार की ऐसी स्थिती से है। जहां विभिन्न फर्मों द्वारा बाजार मे विभेदित उत्पाद विक्रय किये जाते है। "इसमे गहन प्रतिस्पर्धा होती है" जो बहुत ही समान उत्पादों का उत्पादन करने वाली फर्मों के लिए पूर्ण नही होती है।

एकाधिकार प्रतिस्पर्धा का अर्थ बड़ी संख्या मे विक्रेताओं के मध्य प्रतिस्पर्धा करने से है जो एक दूसरे के लिए निकट स्थानापन्न उत्पादित करते है जो पूर्ण रूप से स्थानापन्न नही होती है।

* Definition of monopolistic com. एकाधिकार परिभाषा :—

बेन्हम के अनुसार — " एकाधिकृत प्रतिस्पर्धा एक बाजार संरचना है जहां बड़ी संख्या मे लघु विक्रेता होते है जो विभेदित परन्तु स्थापन्न उत्पाद विक्रय करते है।"

अपूर्ण प्रतिस्पर्धा उस बाजार की स्थिति को संदर्भित करती है जिसमे पूर्ण प्रतिस्पर्धा की एक या अधिक शर्ते अनुपस्थित होती है अपूर्ण प्रतिस्पर्धा का मुख्य रूप एकाधिकृत प्रतिस्पर्धा का है।

उदाहरण के लिए :- हेयरड्रेसर, उपभोक्ता इलेक्ट्रोनिक्स ऐडिडास साड़ी जैसी वस्तुओं की स्थापना आदि।

* Characteristics of an authorised com. एकाधिकृत प्रतिस्पर्धा की विशेषताएँ :-

एकाधिकृत प्रतिस्पर्धा की मान्यताएँ निम्नलिखित है।

(1) विक्रेताओं की बड़ी संख्या
(2) उत्पाद विवेदन
(3) प्रवेश या बहिर्गमन की स्वतंत्रता
(4) स्वतंत्र व्यवहार
(5) उत्पाद समूह
(6) बिक्री लागत
(7) गैर मूल्य प्रतिस्पर्धा
(8) कीमत पर नियंत्रण

(1) Huge number of vendors - विक्रेताओं की बड़ी संख्या :-

एकाधिकृत रूप से प्रतिस्पर्धी बाजार मे विक्रेताओं की संख्या अधिक होती है जिनका व्यक्तिगत रूप से बाजार मे एक छोटा सा भाग है पूर्ण प्रतिस्पर्धा के विपरीत वो बड़ी फर्में पूर्ण विकल्प का उत्पादन नही करती है वे फर्म निकट स्थानापन्न वस्तुओं का उत्पादन एवं बिक्री करती है यह फर्मों के मध्य कठिन एवं वास्तविक प्रतिस्पर्धा का निर्माण करती है।

(2) Product Description :- उत्पाद विवेचन :-

विक्रेता के विभिन्न

PAGE NO.
DATE

उत्पादों को ब्रांड के आधार पर एकाधिकृत प्रतिस्पर्धी बाजार मे विभेदित किया जाता है। इस प्रकार के ब्रांड के विज्ञापन उतने अधिक होते है की ग्राहक निर्माता के ब्रांड के साथ जुड़े रहते है तथा ब्रांड के प्रति एक प्रकार की निष्ठा विकसित कर लेते है। प्रतिस्पर्धा मे उपस्थित उत्पाद पर उत्पादन के लिए उत्पाद विभेदन के कारण एकाधिकार तत्व उत्पन्न होता है।

(3) Freedom of entry or exit. प्रवेश या बहिर गमन की स्वतंत्रता

बाजार नई फर्मों को प्रवेश करने की स्वतंत्रता प्रदान करता है तथा विद्यमान फर्मों के बहिर्गमन की स्वतंत्रता भी प्रदान करता है

(4) Independent behavior :- स्वतंत्र व्यवहार :-

एकाधिकृत प्रतिस्पर्धा मे प्रत्येक फर्म की एक स्वतंत्र नीति होती है चुकि यहाँ विक्रेताओं की अधिक संख्या होती है कुल उत्पादन का एक बड़ा भाग इस किसी के द्वारा नियंत्रित नहीं किया जाता है। किमत उत्पादन नीति का अधपधन करके कोई भी विक्रेता दूसरे की बिक्रि पर कोई प्रत्यक्ष प्रभाव नहीं डाल सकता तथा नाही उन्हे प्रभावित कर सकता है

(5) Product group :- उत्पाद समूह :-

एकाधिकृत प्रतिस्पर्धा के अन्तर्गत कोई उद्योग नही

बल्कि फर्मों का समूह विद्यमान है जो एक समान उत्पाद का उत्पादन करते हैं प्रत्येक फर्म स्वयं मे एक उद्योग है। तथा पृथक उत्पाद का उत्पादन करती है। उदाहरण के लिए सिगरेट, कार आदि

⑥ Selling cost — बिक्री लागत :—

बिक्री अनिवार्य रूप से बिक्री लागत से बढ़ जाती है क्योंकि एकाधिकृत प्रतिस्पर्धा मे उत्पाद विभेदन विद्यमान होता है इसमे विक्रेता तथा विज्ञापन की लागत, विक्रेता के भत्ते निःशुल्क नमूना प्रीमियम उपहार तथा कूपन निःशुल्क सेवा आदि शामिल है।

⑦ Non-Price competition :— गैर मूल्य प्रतिस्पर्धा :—

एक फर्म बिना किसी मूल्य कटौती के एकाधिकार प्रतिस्पर्धा मे अपने उत्पादन के लाभ एवं बिक्री मे वृद्धि करती है। उत्पादों को एकाधिकार प्रतिस्पर्धा द्वारा या तो गुणवत्ता विभिन्नता पैकेजिंग भिन्नता या संवर्धन कार्यक्रमों आदि को अद्यतम करके परिवर्तित किया जा सकता है।

⑧ Control over price — कीमत नियंत्रण :—

कीमतों को कुछ सीमा तक फर्मों द्वारा नियंत्रण किया जाता है। उदाहरण के लिए कैफे रेस्तरां आदि। जैसे डोमेनर कीमत निर्माता है। यह भी कहा जा सकता है की उनकी कीमते उनके द्वारा प्रशासित हो सकती है एक कीमत जो फर्म के सचेत मूल्य द्वारा निर्धारित की जाती है प्रशासित कीमत कहलाती है इसके अतिरिक्त

PAGE NO.
DATE / /

फर्मों की कीमत परिवर्तित करने की आवृति निर्धारित करनी चाहिए।

* Enquilibrium and price - output Determination under Monopolistic competition :- एकाधिकृत प्रतिस्पर्धा के अन्तर्गत साम्य एवं कीमत उत्पादन निर्धारण :-

एकाधिकृत प्रतिस्पर्धा बाजार मे फर्मो के मध्य उत्पादन विभेदन होता है इसलिए फर्मों को अपने उत्पादों के लिए एक पूर्ण लोचदार माँग का सामना नही करना पड़ता। प्रत्येक फर्म अपने उत्पाद की कीमत निर्धारित करने मे सक्षम होती है. तथा इस प्रकार प्रत्येक फर्म को किमत निर्माता कहा जाता है सामान्य रूप से अपने उत्पादों के लिए फर्म का माँग वक्र नीचे की ओर झुका हुआ होता है। इसके साथ ही प्रतिस्पर्धियो की तुलना मे कम उत्पाद विभेद के साथ, वक्र मे अधिक लोच होती है।

[Short-Run Equilibrium and Price - Output Determination of a Firm]
* किसी फर्म का अल्पकालिन साम्य एवं कीमत - उत्पादन निर्धारण -

एकाधिकृत प्रतिस्पर्धा के अंतर्गत फर्म के अल्पावधि मे विश्लेषण कुछ मान्यताओ पर आधारित है। ये मान्यताएं निम्नलिखित है।

(1) इसमे विक्रेताओ की संख्या अधिक होती है। जो एक दूसरे से स्वतंत्र रूप से कार्य करते है ये विक्रेता अपने क्षेत्र मे एकाधिकारवादी होते है

(2) प्रत्येक विक्रेता के उत्पाद अन्य उत्पादों से भिन्नता दर्शाते है।
(3) फर्म द्वारा एक निर्धारित लोचदार माँग वक्र (AR) प्राप्त किया जाता है।
(4) प्रश्न योग्य उत्पाद के उत्पादन के लिए कारक सेवाओ की पूर्ण लोचदार आपूर्ति होती है
(5) प्रत्येक फर्म की अल्पकालीन वक्र - एक दूसरे से भिन्न होती है
(6) उद्योग मे नई फर्मों के प्रवेश पर प्रतिबंध होता है।

1) Super- Normal Profit - अधिसामान्य लाभ —

मे बिंदु E पर, SMC वक्र (अल्पकालीन सीमान्त लागत) वक्र MR वक्र को प्रतिच्छेदित करती है। यह बिंदु E उत्पादन को OQ तथा कीमत [QA = OP] को दर्शाता है। इसके परिणामस्वरूप, फर्म अधिसामान्य लाभ अर्जित करती है जिसे PABC क्षेत्र द्वारा दर्शाया गया है

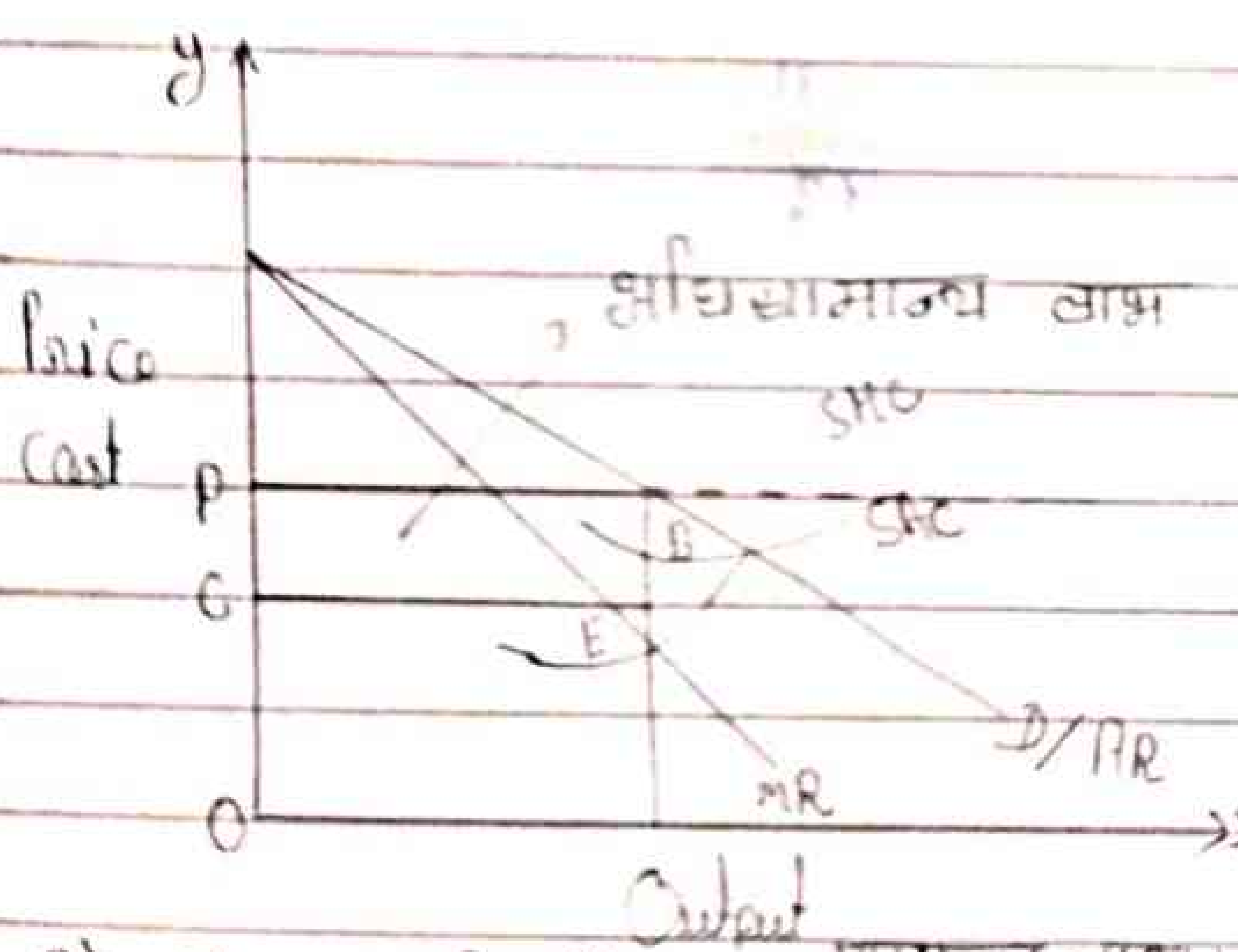

रेखाचित्र — 1.1

2) Normal Profit :- सामान्य लाभ :-

उत्पादन तथा कीमत के समान साम्य को दर्शाया है। परन्तु फर्म इस स्थिति मे केवल अल्पकालीन औसत इकाई लागत को पूरा करती है। जैसा की माँग वक्र - D की स्पर्शरेखा तथा अल्पकालीन औसत इकाई लागत वक्र द्वारा दर्शाया गया है जोकि A पर स्थित SAC है यह सामान्य लाभ अर्जित करता है।

Normal Profit (सामान्य लाभ)

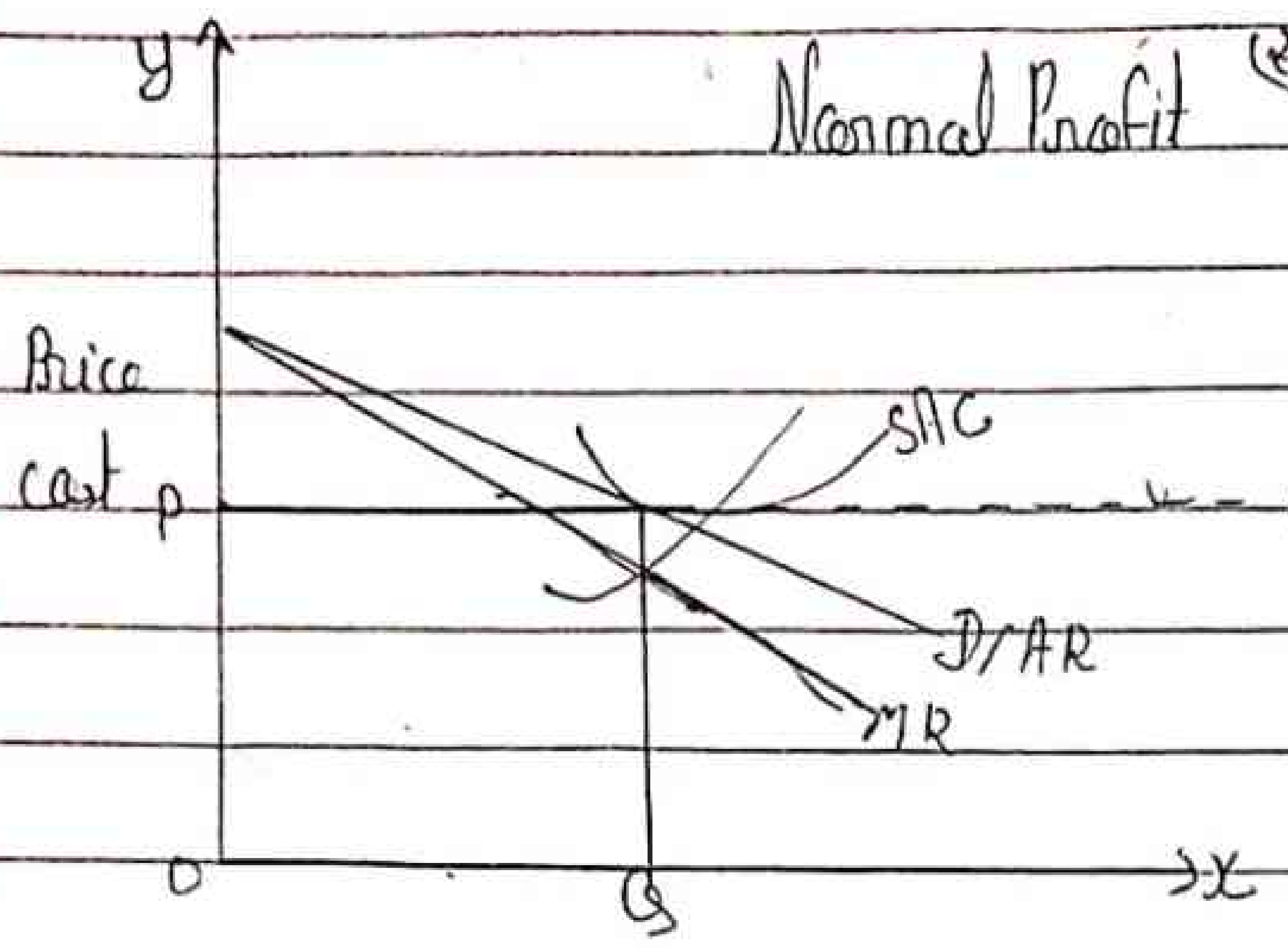

रेखाचित्र :— 1.2

(3) Minimum Loss :— न्यूनतम हानि :— एक ऐसी स्थिति का प्रतिनिधित्व करता है जहाँ फर्म अपनी अल्पकालीन औसत इकाई लागत को पूरा करने मे असमर्थ है तथा इस प्रकार हानि वहन करती है। MR तथा SMC वक्र की समानता बिन्दु E पर कीमत निर्धारित करने मे सहायक करती है तथा कीमत QA है जो केवल औसत परिवर्तनीय लागत को पूरा करती है। बिन्दु A, पर, AVC [औसत परिवर्तनीय लागत वक्र] तथा माँग वक्र D की स्पर्श रेखा इसे एक कार्य को बन्द करने की स्थिति बनाती है। जब फर्म द्वारा कीमत QA से कम की जाती है, तो फर्म आगे उत्पादन करना बंद कर देती है। हालांकि इस कीमत पर फर्म को हानि होगी जो कि दीर्घकालीन लागत कम होने की आशा मे अल्पावधि के दौरान CBAP क्षेत्र के बराबर है।

Minimum Loss [न्यूनतम हानि]

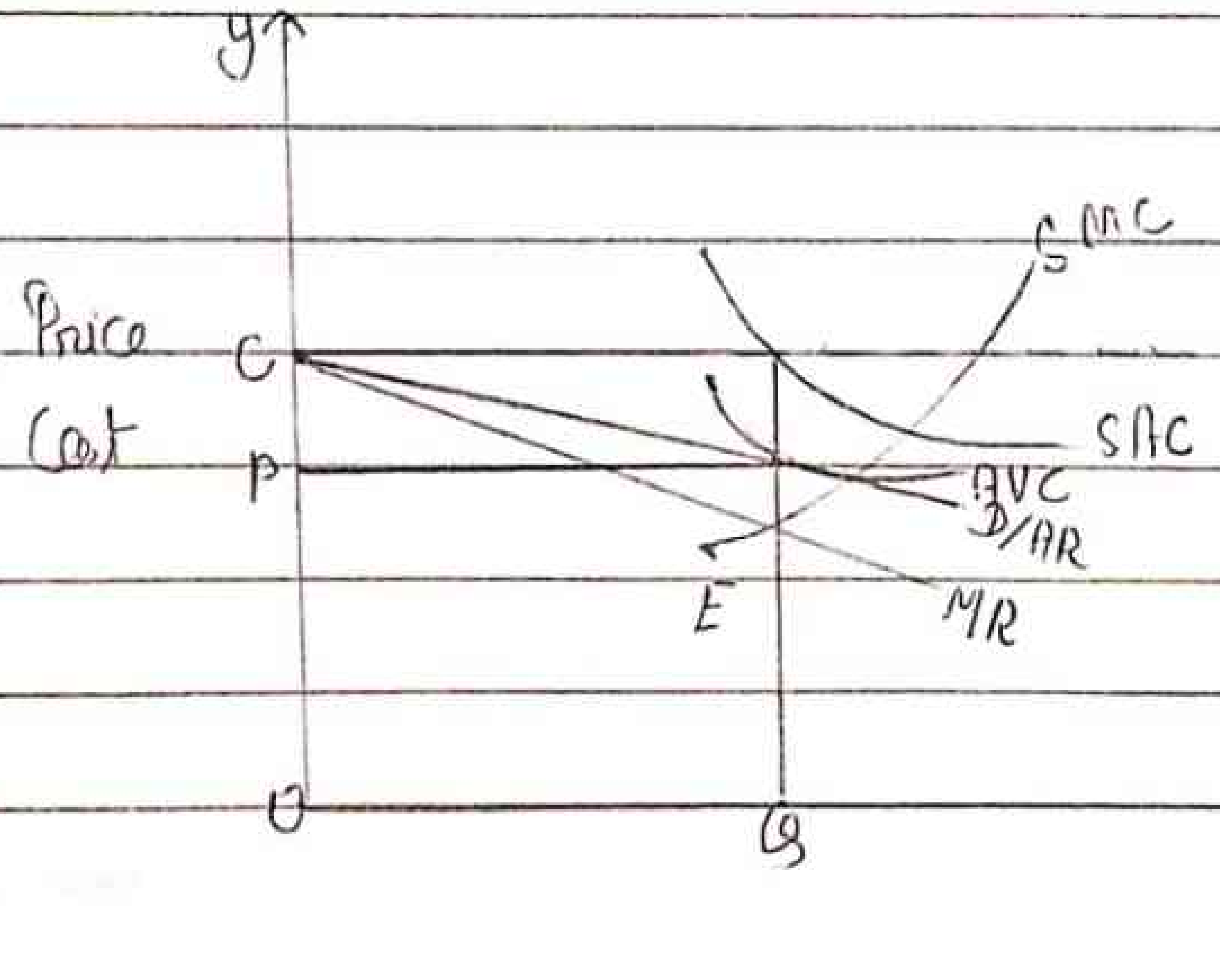

रेखाचित्र :— 1.3

PAGE NO
DATE / /

* किसी फर्म का दिर्घकालीन साम्य एवं कीमत निर्धारण :-

एकाधिकृत प्रतिस्पर्धी उद्योग मे दिर्घ अवधी मे फर्मों का बहिरगमन तथा प्रवेश होता है समायोजन की प्रक्रिया से केवल सामान्य लाभ ही होता है। दिर्घ अवधी मे यह एक पर्याप्त वादि धारणा है कि कोई भी फर्म न तो हानि वह करती तथा न ही अधिसामान्य लाभ अर्जित करती यह बाजार मे उपलब्ध समान उत्पादों के कारण होता है। एकाधिकृत प्रतिस्पर्धी उद्योग मे यदि फर्म अल्पावधि मे अधिसामान्य लाभ अर्जित करती है तो यह उद्योग मे नये फर्मों को प्रवेश करने के लिए प्रोत्साहित करती है। अधिक फर्मों के प्रवेश के साथ प्रति फर्मों का लाभ घटता रहता है। क्योंकि अधिक संख्या मे फर्मों के मध्य उत्पादन की माँग को साझा किया जाता है ऐसा तब होता है जब तक की सभी लाभ समाप्त नहीं हो जाते सभी फर्मों द्वारा सामान्य लाभ अर्जित किया जाता है।

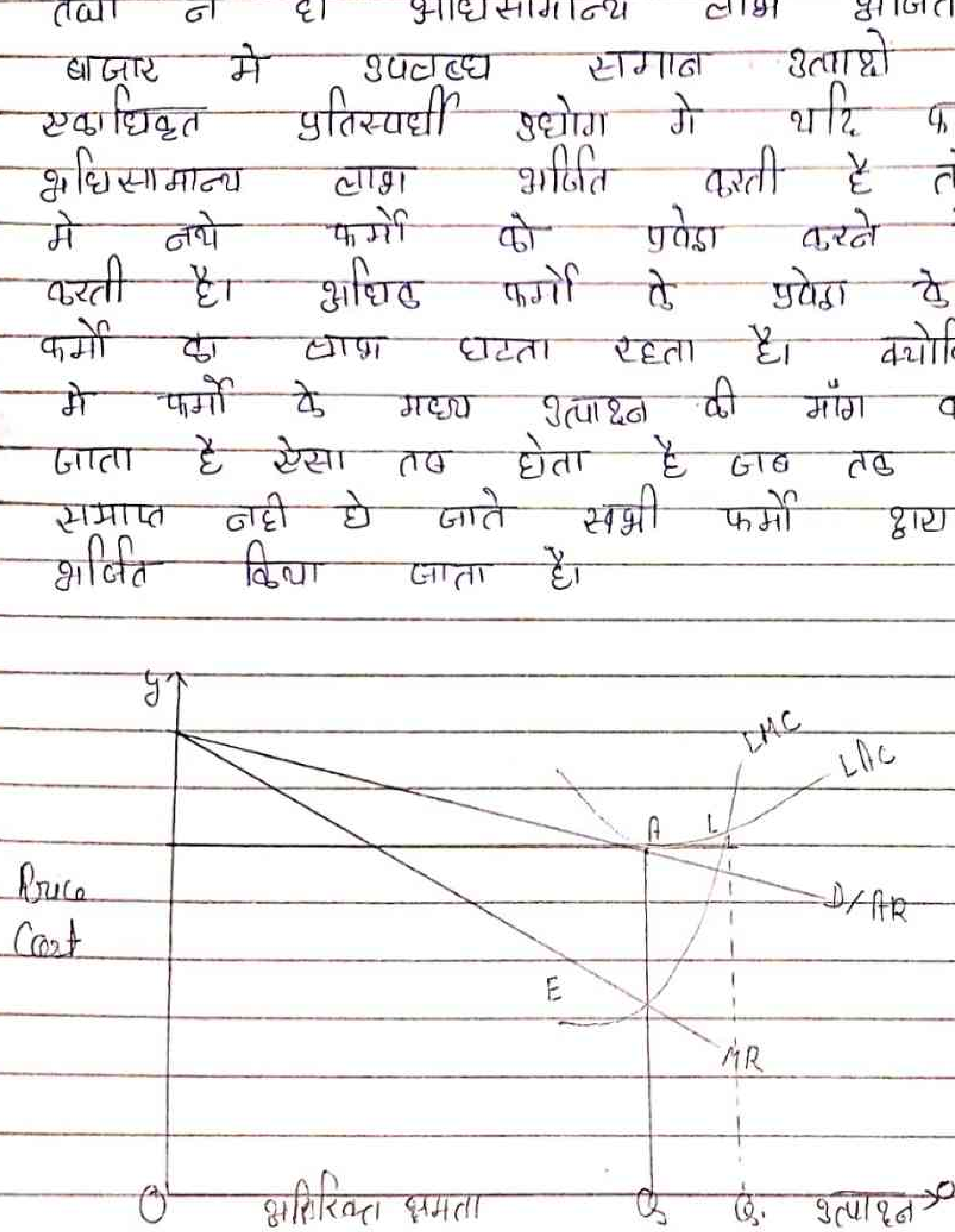

रेखाचित्र :- 2.1

PAGE NO.
DATE / /

Explain :— दीर्घकाल मे सभी फर्मे बिन्दु E पर साम्य है जहाँ LMC = MR तथा MR को LMC द्वारा नीचे से प्रतिछेदित किया जाता है। तथा वक्र LAC बिन्दु A पर D/AR वक्र पर स्पर्श रेखा है चूंकि बिन्दु A पर कीमत QA = LAC है प्रत्येक फर्म द्वारा सामान्य लाभ अर्जित किया जाता है तथा फर्म की उद्योग मे प्रवेश या बर्हिगमन करने की कोई प्रवर्ती नही होती है।

PAGE NO
DATE

3/10/2024

Unit – I

Topic :– आर्थिक समस्या [Economic Problem]

Q. आर्थिक समस्या [अर्थ व्यवस्था की केन्द्रिय समस्याएं] का अर्थ बताते हुए इसके पीछे के मूल कारण बताएं तथा आर्थिक प्रणाली की तीनों समस्याओं का वर्णन कीजिए

* Meaning of economic problem – आर्थिक समस्या का अर्थ –

उत्पादित की जाने वाली वस्तु, उत्पादित की जाने वाली वस्तु की मात्रा उत्पादन के लिए प्रयोग की जाने वाली किसी उत्पादित वस्तु के लिए लक्षित उपभोक्ताओं और आर्थिक वृद्धि प्राप्त करने की प्रक्रिया को आर्थिक समस्याओं के रूप मे जाना जाता है।

एक अर्थव्यवस्था मे सीमित संख्या मे साधन उपलब्ध होते है इस कारण से प्रत्येक नागरिक के लिए हर तरह की वस्तुओ को निर्मित करना सम्भव नही है।

* Definition of Economic problem – आर्थिक समस्या की परिभाषा –

रॉबर्ट ऐह के अनुसार " आर्थिक समस्या वह समस्या है। जो यह चुनने की आवश्यकता से सम्बन्धित है। की क्या कैसे एव किसके लिए उत्पादन किया जाये एव आर्थिक विकास कैसे प्राप्त किया जाए"

* The root causes behind the E.P. आर्थिक समस्या के पीछे के मूल कारण –

आर्थिक समस्याओ के मूल कारण निम्नलिखित है

PAGE NO

DATE

(1) कमी / सीमित या दुर्लभ साधनो की समस्या
(2) चयन या चुनाव की समस्या
(3) अवसर लागत
(4) असीमित आवश्यकताएं / इच्छायें

*A limited or scarce number of Sesources: कमी / सीमित या दुर्लभ साधनों की सम

संसाधन की कमी एक संसाधन की उपलब्धता तथा उसकी माँग के मध्य अन्तर है जो समान्यत: नकारात्मक होता है बहुउपयोगी संसाधनों की अत्यधिक मांग है जबकी उनकी प्रति सीमित है तथा इसलिए वे दुर्लभ है

$D > S$

इसका अर्थ है कि मांग [D] ज्यादा है प्रति(S) से ज्यादा या अधिक है।

मेकडोनेल के अनुसार :- " दुलर्भता एक ऐसी स्थिति है जिसमे सभी मानवीय आवश्यकताओ को पुरा करने के लिए प्रयाप्त ससांधन नही होते है।

* Problem of choice :- चयन या चुनाव की समस्या :-

दुलर्भ ससांधनो का उपयोग लोगो के द्वारा चुना जाता है कमी चयन के नेतृत्व मे है दुलर्भता से सम्बन्धित अर्थशास्त्र को चयनित या वेकल्पिक अध्ययन के रूप मे जाना जाता है। चयन की समस्या ससांधनो के मितव्यता की समस्या के कारण उत्पन्न होती है। ससाधनो की तुलना मे आवश्यकताएँ अधिक संख्या मे होती है जिसके कारण उपभोक्ताओ को अधिक आवश्यकताओं मे से

सबसे आवश्यक आवश्यकताओं का चयन करने की आवश्यकता होती है।

*** Opportunity Cost :-** अवसर लागत — संसाधनो की मुख्य विशेषता यह है की इनके वैकल्पिक उपयोग होते है उदाहरण के लिए स्टील का उपयोग फर्निचर या बर्तन या पाईप तथा नल भारी वस्तुएँ बनाने के लिए किया जाता है चयन की समस्या संसाधनो के वैकल्पिक उपयोग के कारण उत्पन्न होती है। चयन की यह समस्या एक आर्थिक समस्या है। अवसर लागत एक वैकल्पिक लागत है जिसे निश्चित कार्यवाही की अग्रीम वृद्धि हेतु त्याग दिया जाना चाहिए

*** Unlimited desires :-** असीमित इच्छाएं [आवश्यकताएँ] —

मानव की आवश्यकताएँ असीमित होती है कोई भी व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं को पूर्ण रूप से सन्तुष्ट नही कर सकता है। किसी भी समय एवं समुदाय मे असंख्य असन्तुष्ट आवश्यकताएँ उपस्थित होती है क्योंकि एक समाज अपने लोगो की सभी आवश्यकताओ को पूरा करने के लिए पर्याप्त वस्तुओं एवं सेवाओं का उत्पादन नही कर सकता है इसलिए इसे विकल्प चुनने पड़ते है।

PAGE NO.
DATE / /

10/10/2024

* Three problems of Economic System :- आर्थिक प्रणाली की तीन समस्याएँ

(1) किसका उत्पादन करना है?
(2) कैसे उत्पादन करना है?
(3) किसके लिए उत्पादन करना है?

(1) What do produce :- क्या उत्पादन करना है

व्यवसाय के व्यवहार्यता विश्लेषण इस बात का निर्णय करने के लिए किया जाता है। की किसी विशिष्ट बाजार मे कोई उत्पाद एवं सेवा लाभप्रद है अथवा नही निवेशक केवल पूर्ण वस्तुओं एवं सेवाओं का उत्पादन करना चाहते है जिससे उन्हे अच्छा लाभ प्राप्त होता है। यह एक साधारण बाजार अध्ययन एवं व्यवहार्यता अध्ययन के माध्यम से किया जाता है। सीमित संसाधनो के कारण इन सभी वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन करना सदैव सम्भव नही होता है। जिनकी व्यक्तियों को आवश्यकता होती है
उदाहरण के लिए - यदि तेल/ विद्युत जैसे इनपुट उपलब्ध नही है तो कारखाने वस्तुओं का उत्पादन नही कर सकते है यदि कच्चा माल उपलब्ध नही है। तो कारखाने मे कार्य नही हो सकता है।

उत्पादन कर्ता उत्पादन करते समय निम्न बाते को ध्यान मे रखना चाहिए -

(1) उपभोक्ताओं की रूची एवं पसन्द के अनुरूप उत्पादन
(2) अधिक लाभप्रद वस्तुओं का उत्पादन
(3) संसाधनो की उपलब्धता के अनुरूप उत्पादन
(4) उचित विकल्पो का चयन करना।

(2) How to produce :- कैसे उत्पादन करना है :-

उन्नत उत्पादन प्रोद्योगिकी एवं उत्पादन की पद्धतियों का चयन करना एक समस्या है। यह एक आधारभूत सिद्धान्त है की वस्तुओं एवं सेवाओं का उत्पादन कुशल तरीके से किया जाना चाहिए। इसका अर्थ है गुणवत्ता का त्याग किये बिना संसाधनों के सर्वोत्तम उपयोग करके अधिकतम उत्पादन करना है। विकासशील देशों मे वस्तुओं तथा सेवाओं का उत्पादन किया जाता है परन्तु वे यह नहीं जानते हैं की कुशलता से उत्पादन कैसे किया जाए। जबकी विकसित देश अपनी उत्पादन प्रक्रिया मे उन्नत तकनीकों का उपयोग करते है। उन्नत प्रोद्योगिकी के उपयोग से उत्पादन लागत कम होती है तथा उत्पादन बढ़ता है।

[illegible] Introduction [illegible] / Referance
Remark/total Sh. Kaish. 10/10/2024

यह उत्पादन क्षमता औद्योगिक देशों के उच्च जीवन स्तर को प्राप्त करने की सुविधा प्रदान करती है

15/10/2024

किसके लिए उत्पादन किया जाए

यह वितरण की समस्या है। यह एक बुनियादी समस्या है की यह शुद्ध बाजार मे पूंजीवादी अर्थव्यवस्था मे वस्तुओं एव सेवाओं का उत्पादन उन लोगो के लिए किया जाता है जो वित्तिय दृष्टि से मजबूत है। तथा उन्हे क्रय करने के लिए इच्छुक है। यह स्पष्ट है की अमीर व्यक्ति गरीबो की तुलना मे अधिक वस्तुएं एवं सेवाएं क्रय करते है। अमीर व्यक्ति कोई भी वस्तु एवं सेवाएँ क्रय कर सकते है जिन्हे मुद्रा के माध्यम से क्रय किया जा सकता है दूसरी ओर गरीब व्यक्ति केवल अपनी क्रय शक्ति के आधार पर वस्तु एव सेवाओं का क्रय कर सकते है। किसके लिए उत्पादन किया जाए इसका निर्णय पूंजीवादी, मिश्रीत अर्थव्यवस्थाएं आदि अपने दृष्टिकोण के आधार पर करती है।

PAGE NO. :
DATE : / /

26/10/2024 Topic:— माँग वक्र

Q. माँग वक्र मे परिवर्तन तथा माँग वक्र के साथ गति / स्थानान्तरण को समझाते हुए इसमे अन्तर स्पष्ट कीजिए

* Movement Along the Dem. C :— माँग वक्र के साथ गति :—

वस्तु और सेवाओं के मूल्य मे परिवर्तन के कारण माँग वक्र मे गति होती है जब वस्तु की कीमतों मे गिरावट के कारण इसकी माँग मे वृद्धि होती है तो इसे माँग मे विस्तार कहा जाता है।

तथा जब किसी वस्तु की कीमतों मे वृद्धि के कारण माँग मात्रा मे कमी आ जाती है तो इसे माँग मे संकुचन के रूप मे जाना जाता है।

* Extention of Demand :— माँग का विस्तार :—

अन्य बातों के समान रहने पर वस्तु की कीमतों मे गिरावट के कारण इसकी माँग मे वृद्धि होती है जिसे तालिका 1.1 और चित्र 1.1 की सहायता से समझा जा सकता है।

तालिका 1.1 माँग का विस्तार

Price	Quantity
10	1
8	2
6	3
4	4
2	5

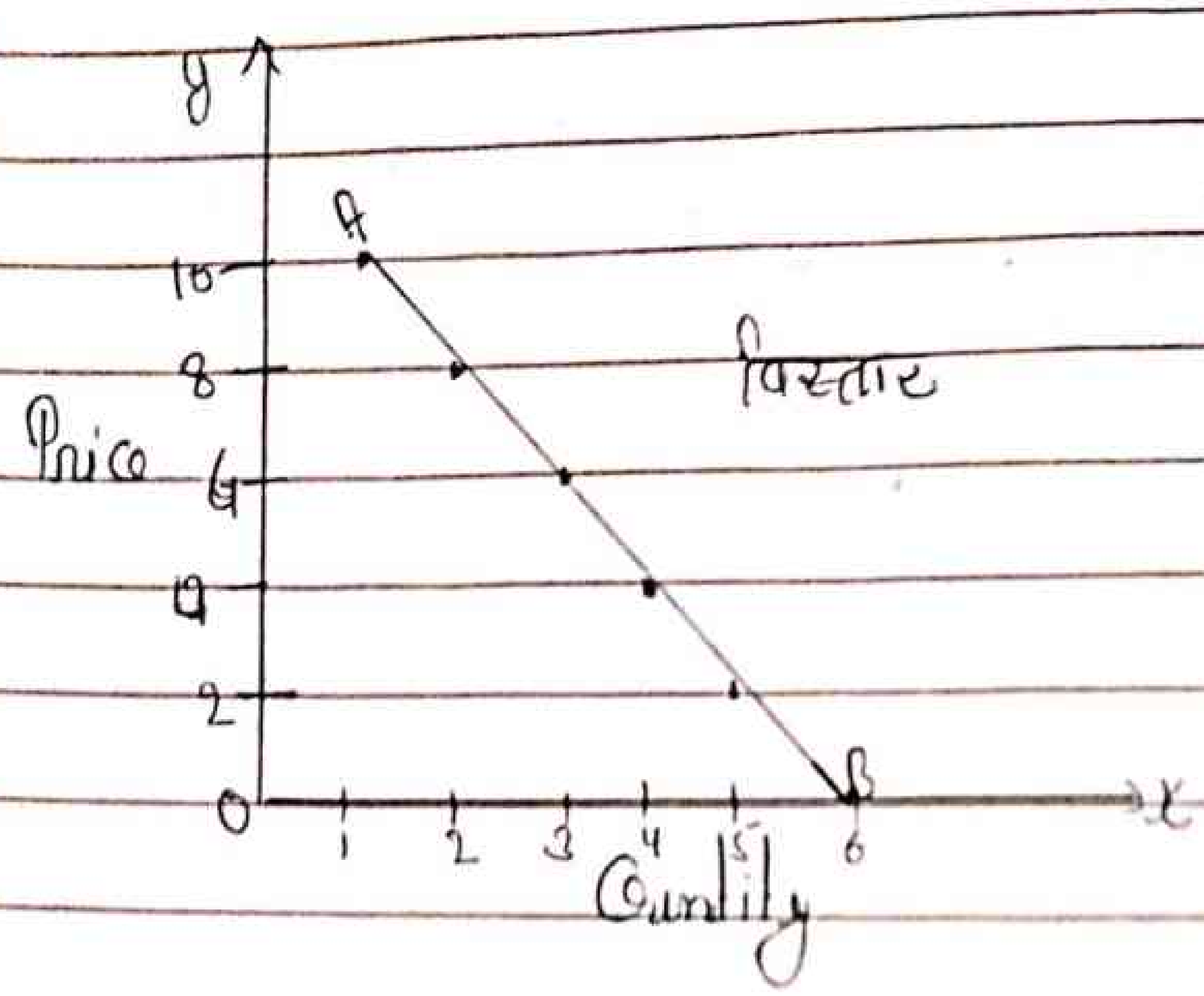

* Contraction in Demand :- माँग का संकुचन :-

यदि अन्य बातें समान रहती हैं तो वस्तु की कीमत बढ़ने पर इसकी माँग घट जाती है उपरोक्त कथन को तालिका 1.2 तथा चित्र 1.2 द्वारा समझेंगे।

तालिका — 1.2 माँग का संकुचन

Price	Quantity
2	5
4	4
6	2
8	1

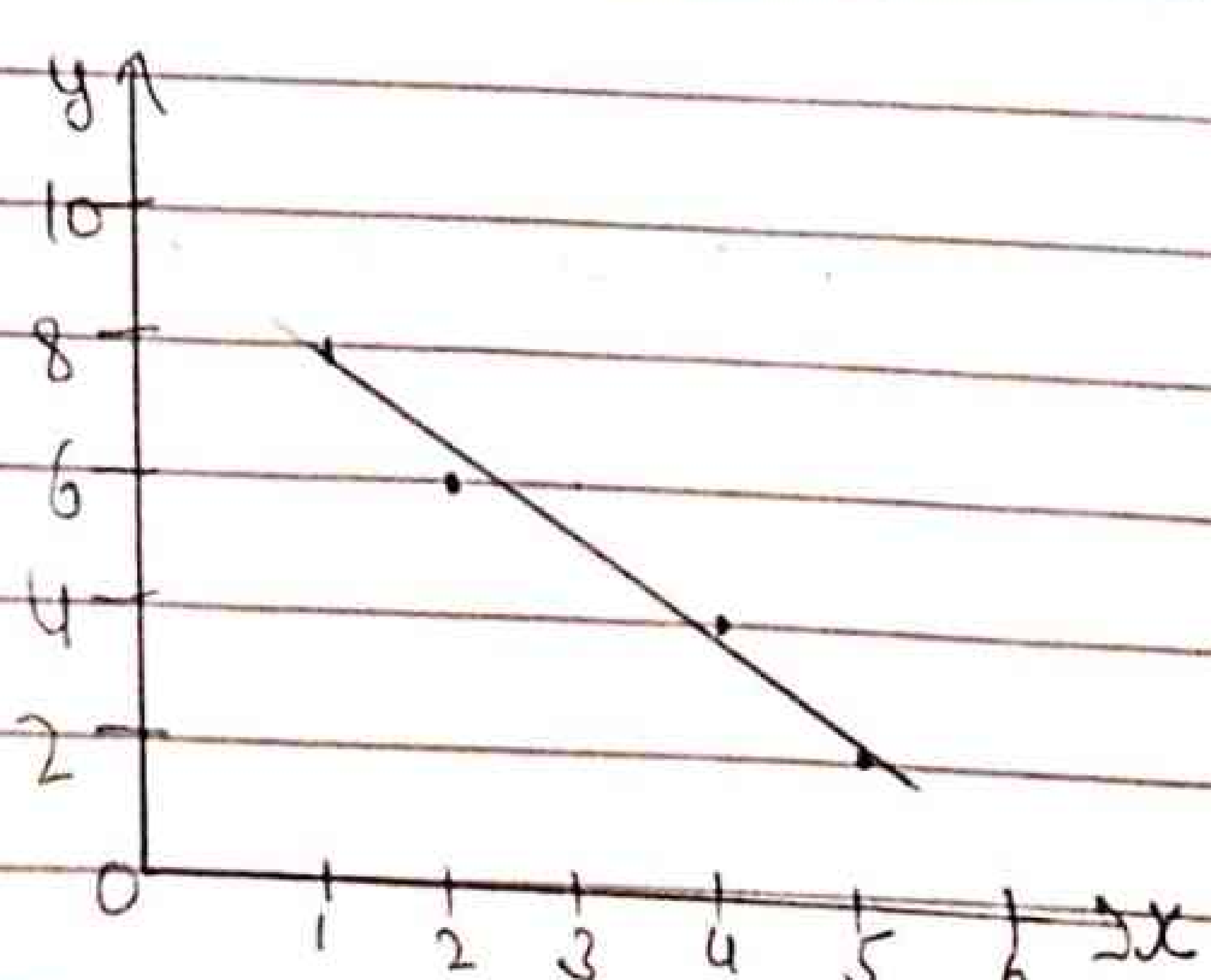

17/10/2024

* Sift in Demand vacra :- माँग वक्र मे परिवर्तन :- माँग के Sift in Demand पर जैसे आय. वैकल्पिक वस्तुओं की कीमतों मे वृद्धि अथवा पूरक वस्तुओ की कीमतो मे गिरावट, रुची और तकनीक मे परिवर्तन के कारण माँग मे आये परिवर्तन को माँग वक्र का परिवर्तन कहा जाता है।

(i) Increase in Demand :- माँग मे वृद्धि :- माँग मे वृद्धि का तात्पर्य उपभोक्ता समान कीमत पर वस्तु की अधिक मात्रा क्रय करना चाहता है। माँग मे वृद्धि होने पर माँग वक्र अपने दाँयी तरफ स्थानान्तरित हो जाता है यह दो प्रकार से बढ़ता है।

(I) समान मूल्य पर अधिक माँग :-

तालिका - 2.1 माँग मे वृद्धि

Price	demand
10	2
10	4
10	6

(ii) अधिक कीमत पर समान माँग :-

तालिका :- 2.2 अधिक कीमत पर समान माँग

मुल्य	माँग
2	8
4	8
6	8

माँग मे वृद्धि :— 2.1

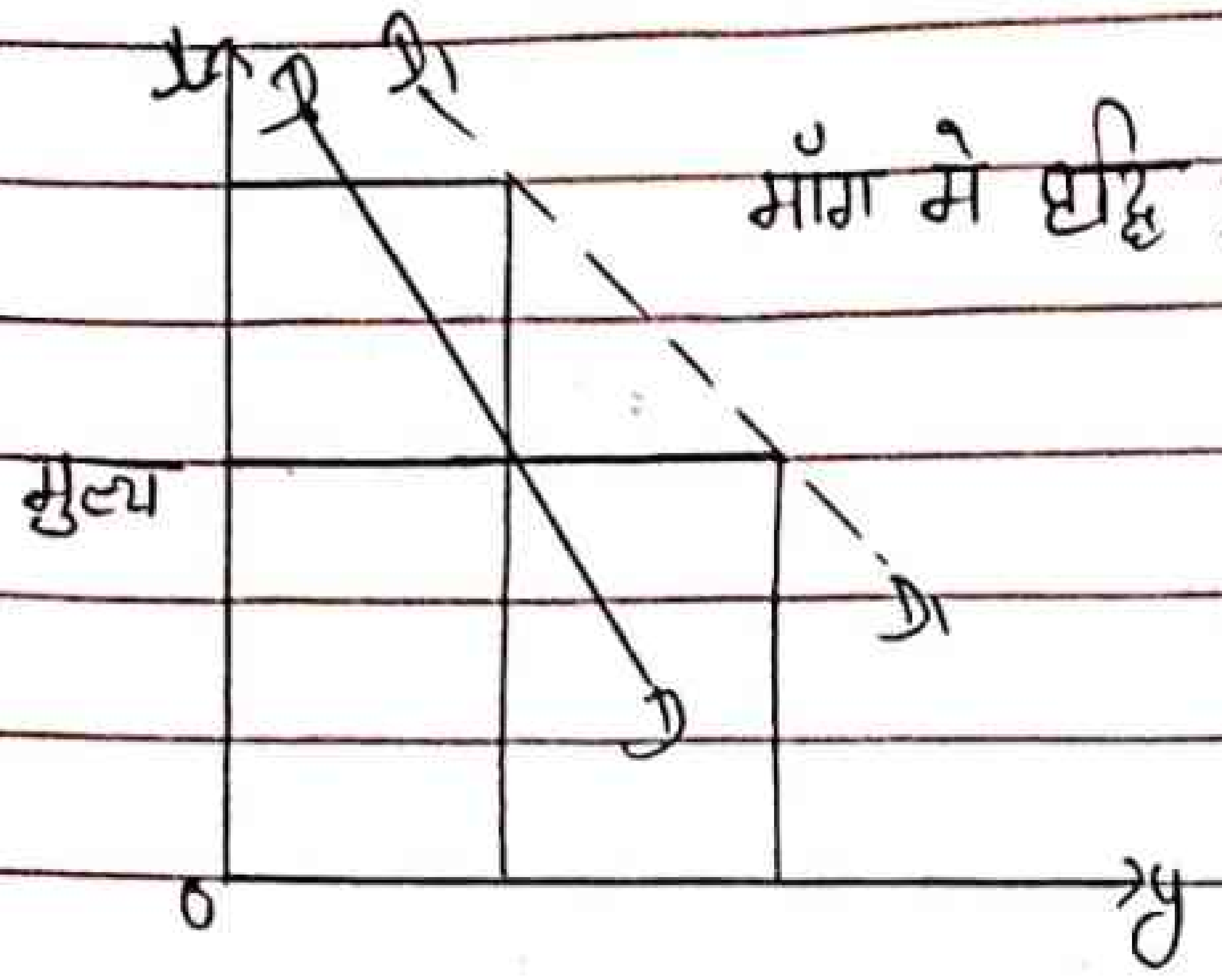

चित्र :— 2.1 माँग मे वृद्धि

Explain :— चित्र 2.1 मे माँग मे वृद्धि को दर्शाया गया है DD मूल माँग वक्र है जब वस्तु की कीमत OP_1 होती है तो उपभोक्ता बिन्दु x_1 पर होता है तथा इसके द्वारा माँगी गई मात्रा Ox_1 होती है मूल्य के अतिरिक्त किसी अन्य कारक मे परिवर्तन के प्रभाव के साथ माँग वक्र D_1D_1 परिवर्तित हो जाता है नया माँग वक्र यह दर्शाता है की वस्तु की कीमत के परिवर्तन के बिना वस्तु की माँग Ox_2 हो जाती है इसी प्रकार यदि मूल्य OP_1 से बढ़कर OP_2 हो जाता है फिर भी माँग समान नही रहती है अर्थात x_1 के बराबर ही बनी रहती है

* Decrease in Demand :— (माँग मे कमी :—)

माँग मे कमी का तात्पर्य उपभोक्ता समान कीमत पर भी वस्तु की कम मात्रा खरीदने को तैयार होता है। माँग मे कमी होने पर माँग वक्र अपनी बाई ओर स्थानान्तरित हो जाता है जिसे इस प्रकार से समझा जा सकता है

Gh
17/6/2024

* माँग वक्र मे परिवर्तन बनाम माँग वक्र के साथ गति।

अन्तर का आधार	माँग वक्र मे परिवर्तन	माँग वक्र के साथ गति
(1) अर्थ	माँग के किसी भी निर्धारक (कीमत के अतिरिक्त) मे परिवर्तन के कारण माँग की गई मात्रा मे परिवर्तन जिससे वक्र एक विशेष पक्ष मे स्थानान्तरित हो जाता है। इसको माँग वक्र मे परिवर्तन के रूप मे जाना जाता है।	कीमत मे परिवर्तन के कारण माँग की गई मात्रा मे परिवर्तन जिससे वक्र एक विशिष्ट दिशा मे आगे बढ़ता है इसको माँग वक्र के साथ स्थानान्तरण के रूप मे
(2) वक्र	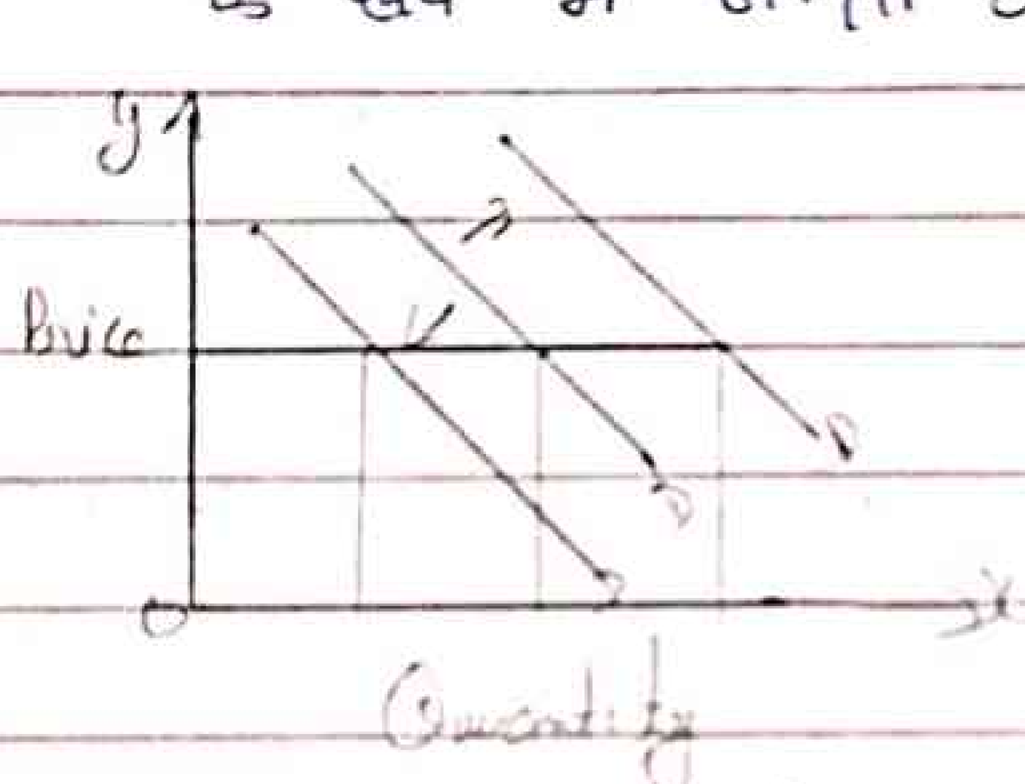	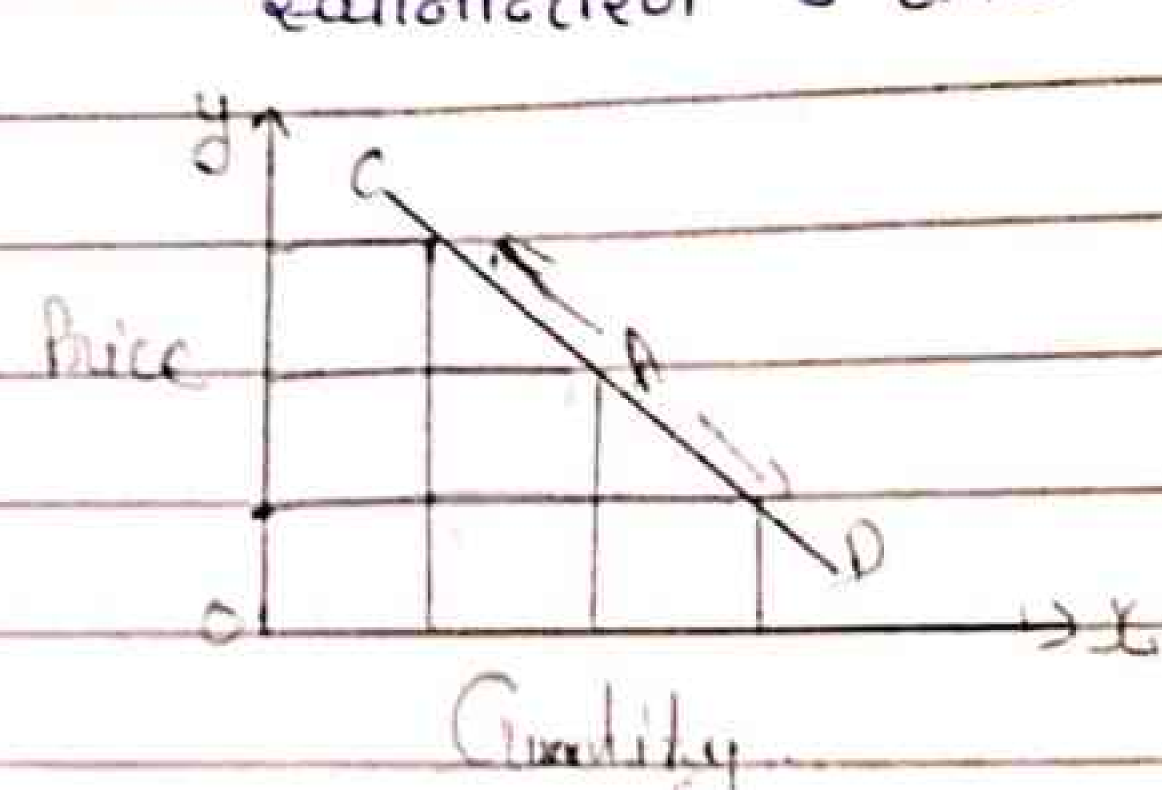
(3) निहितार्थ	माँग वक्र मे परिवर्तन के मामले वक्र की स्थिति परिवर्तित हो जाती है।	माँग वक्र के साथ परिवर्तन के सम्बन्ध मे, परिवर्तन उसी वक्र के साथ होता है
(4) निर्धारक	माँग वक्र मे परिवर्तन के मामले मे निर्धारकों मे कीमत के अतिरिक्त माँग के सभी निर्धारक शामिल होते है जैसे आय	माँग वक्र के साथ परिवर्तन के मामले मे निर्धारकों मे केवल उत्पाद की कीमत शामिल होती है
दर्शाना	यह माँग मे परिवर्तन को दर्शाता है।	यह माँग की मात्रा मे परिवर्तन को दर्शाता है
परिणाम	इसके परिणामस्वरूप माँग वक्र या तो दायी दिशा मे या बायी दिशा मे विवर्तित हो	इसके परिणामस्वरूप माँग वक्र या तो ऊपर की दिशा मे या नीचे की दिशा मे

PAGE NO.:
DATE / /

22/10/2024

* माँग मे वृद्धि एवं माँग के विस्तार के मध्य अन्तर :—

अंतर का आधार	माँग मे वृद्धि	माँग मे कमी
अर्थ	माँग मे वृद्धि से तात्पर्य वस्तु की कीमतो मे बिना किसी परिवर्तन से उत्पाद्व की माँग मे वृद्धि होना।	माँग के विस्तार का अर्थ है वस्तुओ एवं सेवाओ की कीमतो मे कमी के कारण उत्पाद की माँग मे वृद्धि होना।
परिवर्तन का मापक	माँग मे वृद्धि के कारण माँग वक्र मे परिवर्तन होता है तथा माँग भी बढ़ती है	समान माँग वक्र के साथ कीमत तथा माँग मे परिवर्तन होता है।
माँग वक्र मे प्रभाव	माँग मे वृद्धि के परिणामस्वरूप माँग वक्र बाईं से दाईं ओर गति करता है	माँग के विस्तार के परिणामस्वरूप समान माँग वक्र के साथ नीचे की ओर परिवर्तन होता है।
निर्धारक	माँग मे वृद्धि अन्य कारको जैसे स्थानापन्न पर वस्तुओ की कीमत पूरक वस्तुओ की कीमत, आय, स्वाद तथा पसन्द सरकारी नीतियो मे परिवर्तन के कारण होता है।	माँग के विस्तार का मुख्य निर्धारक वस्तुओ की कीमतो मे कमी है जबकि अन्य कारको को स्थिर रखा जाता है।

PAGE NO.:
DATE: / /

* Deffirence between contraction of Demand and Decrease of Demand:

माँग का संकुचन एवं माँग मे कमी के मध्य अन्तर :—

अन्तर का आधार	माँग का संकुचन	माँग मे कमी
(1) अर्थ	जब किसी वस्तु की कीमत मे वृद्धि के कारण माँग की गई मात्रा मे गिरावट होती है तो इसे माँग का संकुचन कहा जाता है बशर्ते अन्य सभी कारक स्थिर रहे। यह एक ही माँग वक्र पर ऊपर की ओर बढने पर रूप मे व्यक्त किया जाता है	जब किसी वस्तु की कीमत मे वृद्धि के अतिरिक्त अन्य कारको के कारण माँग की मात्रा मे गिरावट होती है। तो इसे माँग मे कमी कहा जाता है इसमे माँग वक्र मे बाई ओर परिवर्तित होना दर्शाया जाता है।
(2) घटना	माँग संकुचन तब होता है जब उत्पादन की कीमत मे वृद्धि होती है। इसका प्रभाव समान माँग वक्र पर परिवर्तन के रूप मे देखा जा सकता है।	जब किसी वस्तु या उत्पाद के मूल्य मे परिवर्तन के अतिरिक्त किसी भी कारक मे परिवर्तन होता है, तो माग मे कमी होती है। इसका प्रभाव बाई ओर माँग वक्र मे परिवर्तन के रूप मे देखा जा सकता है
माँग वक्र पर प्रभाव	माँग मे संकुचन मात्र मुल्य कारक द्वारा होता है।	माँग मे कमी के लिए कीमत कारक मे अतिरिक्त अन्य कारक भी उत्तरदायी होते है माँग वक्र का बाई ओर परिवर्तन होता है।

PAGE NO.
DATE / /

24/10/2024 Topic - अर्थशास्त्र का क्षेत्र

Q अर्थशास्त्र की परिभाषा देते हुए इसके क्षेत्र बताइए। तथा समझाइए की अर्थशास्त्र का अध्ययन क्यों किया जाता है।

Ans अर्थशास्त्र शब्द की उत्पत्ति दो ग्रीक शब्द ओइकोस [घरेलू] तथा नोमिन [प्रबन्धन] से हुई है जिसका संयुक्त अर्थ घरेलू प्रबन्धन है।

* Defination of Economic :- अर्थशास्त्र की परिभाषा :-

① Defination of monetary - धन सम्बन्धी परिभाषा :- एडम स्मिथ के अनुसार " अर्थशास्त्र राष्ट्रो के धन की प्रकृति और कारणों की जाँच है
सर्वप्रथम अर्थशास्त्र शब्द को एडम स्मिथ ने 1776 मे अपनी पुस्तक En Enquirie into the nature and causes of wealht of nation मे लिखा है।

② Defination of welfare :- कल्याण सम्बंधि परिभाष :- कल्याण सम्बन्धी अवधारणा को प्रोफेसर मार्शल ने 1990 मे अपनी पुस्तक अर्थशास्त्र के सिद्धान्त को [Principals of Ecomomic] मे प्रस्तुत किया था। मार्शल ने यह स्विकार किया है की अर्थशास्त्र धन का विश्लेषण है परन्तु यह केवल धन का ही विश्लेषण नही है मार्शल ने एडम स्मिथ द्वारा प्रदान किये गए अर्थशास्त्र के धन तत्व को कल्याण तत्व बताया।
डॉ मार्शल के अनुसार :- "अर्थशास्त्र जीवन के साधारण व्यवसाय मे मानव जाती का अध्ययन है

यह व्यक्तिगत एवं सामाजिक कार्यवाही के इस भाग का प्रशिक्षण भी करता है। जो बहतर प्रकार से होने वाली भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति प्राप्ती एव उपयोग से सम्बंधित है।

(3) Stop of Economic :- अर्थशास्त्र का क्षेत्र :-

(1) आर्थिक क्रियाएँ (Economic activities)
(2) आर्थिक नीतिया [Economic Policy]
(3) आर्थिक प्रणाली [Economic System]
(4) अर्थमिती [Economic Metric]
(5) प्रयुक्त अर्थशास्त्र [aplied Economic]

(1) Economic activities :- [आर्थिक क्रियाय] :- अर्थशास्त्र की विषय वस्तु मे निम्नलिखित आर्थिक गतिविधी सामय है जो की विषय का मुख्य आधार है

(i) Production [उत्पादन] :- यह आर्थिक गतिविधी है जो असाधनो को उत्पन्न करती है। अथवा वस्तुओ एव सेवाओं मे उपयोगिता एवं मुल्य वर्धन का सृजन करती है उदाहरण के लिए :- बिस्कुट के उत्पादन मे काम, चीनी तथा मैदा का उपयोग सामय है। उत्पादन के पाँच कारक एवं साधन निम्नलिखित है

PAGE NO. :
DATE : / /

(A) भूमी (B) श्रम (C) पूँजी (D) उद्यमी (E) संगठन

(ii) Consumption - उपभोग :—
इच्छाओं की प्रत्यक्ष सन्तुष्टि के लिए वस्तुओं एव सेवाओ का उपयोग करना, उपभोग से सम्बन्धी गतिविधिया उदाहरण :— वस्त्र पहनना, फल खाना इत्यादि

(iii) Investiment :—
जिन गतिविधियों के परिणाम स्वरूप भौतिक तथा मानव पूंजी मे वृद्धि होती है उसे निवेश कहा जाता है। इस प्रकार यह अन्य वस्तुओ एवं सेवाओ के उत्पादन के लिए उपयोग की जाने वाली पूजी का निर्माण है।

(iv) Exchange (विनिमय) :—
उत्पादित वस्तुओं की बिक्री एवं क्रय तथा उत्पादन के कारको से सम्बन्धित गतिविधी को विनीमय कहा जाता है मुद्रा क्रय और विक्रय का माध्यम होता है कीमत निर्धारण इस गतिविधी का दूसरा नाम है जिसे निम्नलिखित भागों मे विभाजित किया है

(1) Product prising [उत्पाद कीमत निर्धारण] :—
यह बाजार की विभिन्न परिस्थितियों अर्थात पूर्ण प्रतिस्पर्धा एकाधिकार तथा अपूर्ण प्रतिस्पर्धा की स्थिती मे वस्तुओ के कीमत निर्धारण से सम्बन्धित है

(2) Factor Prising — [कारक निर्धारण]
यह कारको के कीमत निर्धारण से

PAGE NO.
DATE / /

24/10/2024

सम्बंधित है कि किस प्रकार श्रमी, काम, पूँजी तथा उद्यमी की सेवाओं की कीमतो का निर्धारण जैसे किराया ब्याज तथा लाभ के रूप मे किया जाता है।

(2) Economic system :— आर्थिक प्रणाली :— आर्थिक प्रणाली को तीन भागों मे विभाजित किया गया है

(1) पूंजीवाद
(2) समाजवाद
(3) मिश्रित अवस्था

(1) Capitalism :— पुँजीवाद :— पूँजीवाद एक ऐसी प्रणाली है जहाँ लोग स्वतंत्र रूप से वस्तुओं एवं सेवाओं का उपभोग, उत्पादन तथा विनिमय करते है सरकार आर्थिक गतिविधियों मे हस्तक्षेप नही करती है तथा व्यक्ति सरकार के किसी भी हस्तक्षेप के बिना नीजि सम्पति अर्जित कर सकते है

(2) समाजवादी :— समाजवाद एक ऐसी प्रणाली है जिसमे सरकार उपभोग, उत्पादन, विनिमय आदि से सम्बन्धित समस्त गतिविधियों पर पूर्ण नियंत्रण रखती है जैसे रूस की अर्थव्यवस्ता

(3) Mixed Economic :— मिश्रीत अर्थव्यवस्था :— मिश्रित अर्थव्यवस्था प्रणाली मे व्यक्ति सरकार के नियंत्रण मे विभिन्न प्रकार की आर्थिक गतिविधियों को करने के

PAGE NO.
DATE / /

लिए स्वतंत्र होते है इसे पूँजीवादी तथा समाजवाद के मध्य का रास्ता माना जाता है।

(3) Economic policies – आर्थिक नीतियाँ :- विभिन्न आर्थिक समस्याएँ जैसे की बेरोजगारी, मुद्रा स्फीति, गरीबी आदि आर्थिक गतिविधियों के संचालन का परिणाम है। इन समस्याओं के समाधान के लिए संलग्न नीतियां निम्नअनुसार है।

(1) मौद्रिक नीति
(2) राजकोषीय नीति
(3) कीमत नीति
(4) आर्थिक नियोजन
(5) अन्तर्राष्ट्रीय तरलता

(4) Economictric :- अर्थशास्त्र की वह शाखा जिसमे आर्थिक गतिविधीयों को मापने तथा विश्लेषण करने के लिए गणित तथा सांख्यकी एक सहभागिता होती है। अर्थमिती कहलाती है। अर्थमिती का अध्ययन अर्थशास्त्र के विषय वस्तु मे शामिल है।

(5) Applyed Economics :- प्रयुक्त अर्थशास्त्र :- अर्थशास्त्र का अनुप्रयोग अर्थशास्त्र के सिद्धान्त तथा नीतियो तक ही सीमित नही है बल्कि यह व्यवहारिक विषयों जैसे कृषि उद्योग परिवहन आदि के विश्लेषण से भी सम्बन्धित है।

PAGE NO.:
DATE: / /

* अर्थशास्त्र का अध्ययन क्यों किया जाता है?

निम्नलिखित बिन्दु उन कारणों को दर्शाते है की हमे अर्थशास्त्र का अध्ययन क्यों करना चाहिए।

(1) उपभोक्ता व्यवहार का अध्ययन करना
(2) उत्पादन सिद्धान्त का अध्ययन करना
(3) आय के वितरण का अध्ययन करना
(4) किसी अर्थव्यवस्था के सामने आने वाली व्यापक आर्थिक समस्याओं का अध्ययन करना

(1) उपभोक्ता व्यवहार का अध्ययन करना :—

अर्थशास्त्र छात्रों को उपभोक्ताओं के व्यवहार के बारे मे यह जानने मे सक्षम बनाता है कि वे विभिन्न प्रकार की बाजार प्रस्तुतियों मे कैसे व्यवहार करते है अर्थशास्त्र मे उपभोक्ता व्यवहार का सिद्धान्त बताता है की कैसे एक तर्क संगत उपभोक्ता उपलब्ध संसाधनों तथा वस्तुओं एवं सेवाओं की दी गई कीमतों के साथ उच्चतम स्तर की सन्तुष्टि प्राप्त करने के लिए विकल्प चुनता है

Good

introduction / Referance
Remark/total 5/5 Kash 24/10/2024

PAGE NO.:
DATE / /

अर्थशास्त्र छात्रों को उपभोक्ता वो उत्पादकों के बारे मे जानने मे सक्षम बनाता है कि वे विभिन्न प्रकार के बाजारो मे उत्पादन निर्णय कैसे लेते है अर्थशास्त्र मे उत्पादन का सिद्धान्त बताता है कि कैसे एक निर्माता किसी दिये गये लागत पर उत्पादन के स्तर को बढाने या किसी दिये गये उत्पादन के स्तर के लिए लागत को कम करने के लिए उत्पादन निर्णय लेता है यह भी बताता है कि निर्माता किस प्रकार दी गई कीमतो पर विभिन्न इनपुटों को मिलाकर उत्पादन लागत को कम कर सकता है लाभ बढा

(3) आय के वितरण का अध्ययन करना :-

अर्थशास्त्र छात्रों को राष्ट्रीय आय के वितरण के बारे मे जानने मे सक्षम बनाता है। अधिक विस्तृत शब्दों मे, यह बताता है कि किसी अर्थव्यवस्था मे कुल उत्पादन से उत्पन्न आय भूमि, श्रम, पूंजी तथा उद्यमियों जैसे विभिन्न कारक स्वामियों को कैसे वितरित की जाती है। उत्पन्न आय को किराया, मजदूरी, ब्याज तथा लाभ के रूप मे वितरित किया जाता है।

(4) किसी अर्थव्यवस्था के सामने आने वाली व्यापक आर्थिक समस्याओं का अध्ययन करना :-

अर्थशास्त्र छात्रो को एक अर्थव्यवस्था के सामने आने वाली बुनियादी व्यापक आर्थिक समस्याओं जैसे गरीबी, बेरोजगारी, मुद्रास्फिति, मंदी आदि के बारे मे जानने मे सक्षम बनाता है। यह इन समस्याओं की व्याख्या तो करता है साथ ही ऐसी समस्याओं का समाधान करने के लिए विभिन्न तरीके भी सुझाता है।

Topic :- अर्थशास्त्र की विधियाँ

PAGE NO. :
DATE : / /

5/11/2024

Q. अर्थशास्त्र की विभिन्न विधियों का वर्णन कीजिए।

* Defination of Economic :-

अर्थशास्त्र की विधियाँ निम्नानुसार है :-

आगमात्मक | निगमात्मक

(1) Iductive आगमात्मक :- आगमात्मक विधि के निम्नलिखित चरण निम्नलिखित है

(1) समस्या की पहचान
(2) ~~समस्या की~~ पहचान आकड़ों का संग्रह
(3) निरिक्षण
(4) सामान्यीकरण

(1) Idefication of probleam :- समस्या की पहचान :- आगमनात्मक विधि के अन्तर्गत प्रथम चरण समस्या तथा इसकी गम्भीरता का पता लगाना है

(2) Collection of data :- आकड़ों का संग्रह :- समस्या की पहचान करने के पश्चात अगला कदम समस्या से सम्बन्धित आकडें का संग्रहण व विवरण अध्ययन अथवा विश्लेषण करना है। इस उद्देश्य के लिए विभिन्न सांख्यिकिय उपकरण एवं तकनीक उपलब्ध है

PAGE NO. :
DATE : / /

(3) Observation :— निरक्षण :—
आकड़ों के विश्लेषण की प्रक्रिया पूर्ण हो जाने के पश्चात इसका निरिक्षण किया जाता है तथा समस्या से सम्बन्धित निष्कर्ष निकाले जाते है :—

(4) Generalisation :— सामान्यीकरण :—
किये गये निरक्षण का उपयोग तर्क संगत तथा वैज्ञानिक माध्यम से सामान्यीकरण करने के लिए किया जाता है। इनपुट के रूप मे विशिष्ट तत्थ्यों का उपयोग करते हुए सम्पूर्ण अभ्यास का अन्तिम परिणाम सामान्य सत्य है।

* Advantages of Inductive Method. आगमनात्मक विधि के लाभ :—
आगमनात्मक विधि के निम्नलिखित लाभ है।

(1) निगमन विधि के माध्यम से विकसित आविधि सिद्धान्त के निष्कर्षों को मान्य करने के लिये आगमन विधि का प्रयोग किया जाता है।

(2) आगमनात्मक विधि के प्रयोगो द्वारा प्राप्त परिणामों आकड़ों के विश्लेषण का परिणाम हैं ये विभिन्न क्षेत्रों मे विभिन्न सरकारी नीतियाँ बनाने के लिए महत्वपूर्ण आधार है चूंकी आगमनात्मक दृष्टिकोण से सम्बन्धित प्रक्रियाओं मे सांख्यिकीय तकनीकों का प्रयोग किया जाता है, अन्तिम परिणामों के सही [निकटतम सत्य] होने की सम्भावना अधिक होती है।

5 6/11/2024

इसके अतिरिक्त बढ़ते हुए नमूने के आकार के साथ-2 परिणामों के शुद्धता मे वृद्धि होती है।

* (3) आगमनात्मक विधि को लागू करके प्राप्त सामान्यीकरण निगमित विधि की तुलना मे अधिक विश्वसनीय होती है। अनुभविक अनुसंधान के कारण सिद्धान्त तथा व्यवहार के मध्य का अंतर न्यूनतम स्तर पर रहता है। कुछ बुनियादी आर्थिक नियमों उद्भव के पीछे आगमन विधि की स्वीकृति निहित है।

* Disadvantages of Inductive - आगमनात्मक विधि की हानियाँ :- आगमनात्मक विधि की हानियाँ इस प्रकार है।

(1) आगमनात्मक विधि से जुड़ी प्रक्रियाओं की प्रकृति जटिल होती है। इन्हें पूरा करने के लिए अधिक समय की आवश्यकता होती है।

(2) आकड़ों के संग्रहण से इनके अध्ययन तक अर्थपूर्ण निष्कर्ष प्राप्त करना एक चुनौती है। इसके अतिरिक्त यदि कार्य का प्रारम्भ कुछ नये व्यक्तियों द्वारा किया जाता है तो यह वास्तव मे अधिक कठिन है।
इस दृष्टिकोण के अन्तर्गत प्रयोगों के माध्यम से एकत्र आकड़ों के आधार पर कार्य का सुझाव दिया जाता है कई बार यह दृष्टिकोण विभिन्न कारकों तथा परिणामों के मध्य अन्तर होने के कारण अनुपयुक्त किया जाता है।

यह एक महंगा दृष्टिकोण है क्योंकि आकड़ों का संग्रहण तथा विश्लेषण महत्वपूर्ण व्यय के साथ जुड़ा हुआ है।

PAGE NO. :
DATE : / /

समय अधिक लगता है

* Deductive Method :- निगमनात्मक विधि :—

आर्थिक अध्ययन की निगमन विधि जिसे विश्लेषणात्मक, सार, काल्पनिक अथवा पूर्व विधि कहा जाता है। इसमे सामान्य से विशिष्ट मे परिवर्तन की विशेषता है।

* Steps of Deductive Method :- निगमनात्मक विधि के चरण :-

निगमनात्मक विधि के चरण निम्नलिखित है

(1) समस्याओं का चयन करना —
(2) मान्यताओं का निर्माण
(3) परिकल्पनाओं का निर्माण
(4) परिकल्पना का परिक्षण तथा सत्यापन

(1) Selecting of the probleams :-

जिस समस्या के समाधान की आवश्यकता होती है। उसकी पहचान करना निगमन विधि के अन्तर्गत प्रथम तथा सबसे महत्वपूर्ण कदम है इस सम्बन्ध मे कोई अस्पष्टता नही होनी चाहिए इसमे बेरोजगारी, मुद्रास्फीती, निर्धनता आदि जैसे विस्तृत क्षेत्र अथवा किसी विशिष्ट क्षेत्र / उद्योग से सम्बंधित सकीर्ण क्षेत्र शामिल है।

(2) Formulating Assumptions :- मान्यताओं का निर्माण :-

समस्या का चयन होने के बाद कार्यवाही का अगला तरीक

7/11/2024

PAGE NO. :
DATE : / /

मान्यताओं की रूप रेखा तैयार करना है जो परिकल्पना की आधारशिला होती है।

(क) मान्यताओं का प्रभाव :— और भी अधिक होता है यदि वे प्रकृति मे समान्य है तथा समुद्र मे बनाये हुए होते है

(3) Formulating Hypothesis :— परिकल्पनाओं का निर्माण :— मान्यताओं तथा सामान्य तर्क के आधार पर परिकल्पनाओं का गठन किया जाता है गणित के प्रयोग। के साथ तर्क संगत निष्कर्ष निकाले जाते है।

(4) Testing and verifying the Hypothesis :- परिकल्पनाओ का परिक्षण तथा सत्यापन निगमन विधि के अन्तिम चरण मे परिकल्पनाओं का परिक्षण तथा सत्यापन करना शामिल है आधुनिक समय मे यह अर्थशास्त्रियों द्वारा सांख्यकियं तथा अर्थमितिय तकनीकों के अनुप्रयोग के माध्यम से किया जाता है सत्यापन प्रक्रिया यह सुनिश्चित करती है कि तैयार की गई परिकल्पना तथ्यों के अनुसार है।

* Advantages of Deduction Method :— निगमात्मक विधि के लाभ :—

(1) Real :— वास्तविक :— दुनियां के प्रख्यात अर्थशास्त्री केवेन ई बॉल्डिंग ने निगमन विधि को "बोधिक प्रयोग"

की पद्धति के रूप मे माना है हम अपनी मस्तिस्क मे ऐसी आर्थिक प्रणालियों की परिकल्पना करने का प्रयास करते है जो वास्तविकता से अधिक सरल होती है परन्तु जिन्हे आसानी से समझा जा सकता है

(2) Simple :— सरल :—
यह विधि प्रकृति मे सरल तथा विश्लेषणात्मक है। जटिल समस्याओं को आसान कर दिया जाता है। जिससे इनका विश्लेषण तथा समाधान करना आसान हो जाता है। विभिन्न परिस्थितियों के अनुमान इस प्रकार किये जाते है ताकि समस्या को सरल बनाया जा सके तथा तार्किक निष्कर्ष प्राप्त किया जा सके।

(3) शक्तिशाली (Powerful) :—
निगमन विधि विश्लेषण करने की प्रभावी विधि है यह महत्वपूर्ण निष्कर्ष तक पहुँचने के लिए इनपुट के रूप मे तथ्यात्मक आंकड़ों का उपयोग करता है।

* निगमात्मक विधि की हानियाँ :—
(1) अवास्तविक मान्यता
(2) सार्वभौमिक रूप से लागू नही
(3) त्रुटिपूर्ण सत्यापन

Introduction | परिभाषा | शब्दार्थ
सारांश | निष्कर्ष | सारांश | Referance
कम से कम 8 पृष्ठों मे
मात्रा / स्पेलिंग की शुद्धि
Remark/total
Sh
Kaish
07/11/2024

Q. अर्थशास्त्र का अर्थ क्या है?

Ans. अंग्रजी मे अर्थशास्त्र शब्द की उत्पति दो ग्रिक शब्द - ओईकोस (घरेलू) तथा नेमिन अंग्रेजी (प्रबन्ध) से हुई है जिसका संयुक्त अर्थ 'घरेलू प्रबन्धन' है।

Q. अर्थशास्त्र की परिभाषाएँ :- ① धन सम्बन्धी परिभाषा
② कल्याण सम्बन्धी परिभाषा।
③ दुर्लभता सम्बन्धी परिभाषा

Q. अर्थशास्त्र का क्षेत्र :- ① आर्थिक क्रियाएँ
② आर्थिक नितियाँ
③ आर्थिक प्रणाली
④ अर्थमिती

Q. अर्थमिति किसे कहते है?

Ans. अर्थशास्त्र की वह शाखा जिसमे आर्थिक गतिविधियों को मापने तथा विश्लेषण करने के लिए गणित तथा सांख्यिकी की एक साथ सहभागिता होती है, अर्थमिति कहलाती है

Q. अर्थशास्त्र की विधियाँ :- ① आगमनात्मक विधि
② निगमनात्मक विधि

Q. निगमनात्मक विधि क्या है?

Ans. आर्थिक अध्ययन की निगमन विधि जिसे विश्लेषणात्मक, सार, काल्पनिक अथवा पूर्व विधि कहा जाता है।

Q. आर्थिक समस्याएँ किसे कहा जाता है?

PAGE NO.:
DATE: / /

Ans. उत्पादित की जाने वाली वस्तु, उत्पादित की जाने वाली वस्तु की मात्रा, उत्पादित के लिए प्रयोग की जाने वाले विधि, उत्पादित वस्तु के लिए लक्षित उपभोक्ताओं और आर्थिक वृद्धि प्राप्त की जाने करने की प्रक्रिया को आर्थिक समस्याओं के रूप मे जाना जाता है।

Q. आर्थिक समस्या के पीछे मूल कारण बताइए।

(1) कमी / सीमित या दुर्लभ साधनों की समस्या
(2) चयन / चुनाव की समस्या
(3) अवसर लागत
(4) असीमित आवश्यकताएँ / इच्छाएँ

Q. आर्थिक प्रणाली की तीन समस्याएँ बताइए।

(1) किसका उत्पादन करना है?
(2) कैसे उत्पादन करना है?
(3) किसके लिए उत्पादन करना है?

Q. अवसर लागत क्या है?

Ans. अवसरों की हानि के कारण आय की हानि को अवसर लागत के रूप मे जाना जाता है।

Q. अर्थशास्त्र की शाखाएँ बताइए।

(1) सूक्ष्म अर्थशास्त्र
(2) व्यापक अर्थशास्त्र

9/11/2024

Q. माँग का अर्थ बताइए :-

माँग का तात्पर्य ऐसी वस्तुओं एवं सेवाओं की निश्चित मात्रा से है जिन्हें उपभोक्ता दी हुई समय अवधी मे विभिन्न कीमतों पर क्रय करने की इच्छा तथा भुगतान करने की क्षमता रखता है

* माँग के लिए आवश्यक बाते :-

1. इच्छा शक्ति
2. उपलब्ध साधन
3. साधनों की तत्परता
4. कीमत
5. समय

* बेन्हम के अनुसार :- "किसी समय विशेष मे दिये हुए मुल्य पर किसी वस्तु की माँग उस परिणाम को कहते है जो उस मुल्य पर एक निश्चित समय मे क्रय की जाती है"

* Types of Demand :- माँग के प्रकार :-

1. व्यक्तिगत एवं बाजार की माँग
2. फर्मों के उत्पादो एवं उद्योग के उत्पादो की माँग।
3. स्वायत एवं व्युत्पन्न माँग
4. टिकाऊ एवं गैर टिकाऊ वस्तुओं की माँग
5. अल्पावधी एवं दिर्घावधी माँग
6. संयुक्त एवं समग्र माँग
7. प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष माँग
8. कुल बाजार एवं बाजार के खण्डों द्वारा माँग

PAGE NO.:
DATE: / /

* फर्म के उत्पादों एवं उद्योग के उत्पादों की माँग किसे कहते है?

① फर्म के उत्पाद :-
एक अवधी के दौरान एक निश्चित कीमत पर एक फर्म का उत्पादन करने वाली मात्रा की माँग फर्म के उत्पाद की माँग है।

* derived Demand :- व्युत्पन्न माँग :-
एक वस्तु की माँग जो अन्य वस्तुओं की माँग से सम्बन्धित है को व्युत्पन्न माँग के रूप मे जाना जाता है उदाहरण :- पेट्रोल एवं डीजल की माँग कहना

* Joint Demand :- संयुक्त माँग :-
एक ही माँग को पूरा करने के लिए दो या दो से अधिक वस्तुओं की निश्चित मात्रा की माँग परस्पर एक ही समय पर की जाती है तो उसे संयुक्त माँग कहा जाता है।

* Aggregate demand :- समग्र माँग क्या है? :-
जब एक वस्तु की माँग दो या दो से अधिक विशिष्ट उपयोगों के लिए की जाती है उसे समग्र माँग कहा जाता है

* Market Demand :- बाजार माँग किसे कहते है?
किसी बाजार मे किसी उत्पाद को निश्चित मूल्य पर खरीदने की सभी उपभोक्ताओं की इच्छा एव क्षमता स्तर को बाजार की माँग के रूप मे जाना जाता है।

PAGE NO.:
DATE: / /

11/11/2024

* Individual demand function :- व्यक्तिगत मॉग फलन :- व्यक्तिगत मॉग फलन किसी विशेष वस्तु के लिए विभिन्न कीमतो आय स्तर सम्बन्धित वस्तुओं की कीमत तथा उनकी पसन्द एवं प्राथमिकता के अनुसार एक व्यक्ति की मॉग का प्रतिनिधित्व करता है

$$D = f [P]$$

* Market demand function :- बाजार मॉग फलन :- बाजार मॉग फलन बाजार मे विद्यमान व्यक्तिगत मॉग फलन का संयोजन है इसलिए इसमे किसी विशेष उत्पाद या सेवा के लिए मॉग की गई मात्रा को एक साथ लिया जाता है

$$Dx = F [P_x, P_r, M, T, A, U$$

Dx :- x वस्तु की मॉगी गई मा
F = कार्यात्मक सम्बन्ध
P_x = x वस्तु की कीमत
P_r :- सम्बन्धित वस्तुओ की कीमते अर्थात स्थानापन्न या पूरक वस्तुएं
M :- उपभोक्ता की मुद्रा आय
T :- उपभोक्ता की रुची
A :- विज्ञापन प्रभाव
U :- अज्ञात वस्तुएँ

* मॉग अनुसूची के प्रकार :- (1) व्यक्तिगत मॉग सूची
(2) बाजार मॉग सूची

(1) व्यक्तिगत मॉग सूची :- Individual demand schedule.

PAGE NO.:
DATE: / /

व्यक्तिगत माँग अनुसूची एक सारणीबद्ध प्रस्तुती है जो किसी उपभोक्ता द्वारा समय -2 पर कीमतों पर विभिन्न स्तरों पर माँग की गई वस्तु की विभिन्न मात्रा दर्शाती है।

* Types of Elasity of Demand:- माँग की लोच के प्रकार

- माँग की कीमत लोच
- आड़ी एवं तिरछी लोच
- आय लोच
- माँग की विज्ञापन तथा सम्वर्धनात्मक लोच

$$\text{कीमत लोच} = \frac{\text{माँग गई मात्रा मे प्रतिशत परिवर्तन}}{\text{कीमत मे परिवर्तन}}$$

* Types of Elasity Price :- कीमत लोच के प्रकार :-

1. पूर्णतया लोचदार मांग [E = ∞]
2. पूर्णतया बेलोचदार माँग [E = 0]
3. इकाई लोचदार माँग [E = 1]
4. लोचदार माँग [E > 1]
5. बेलोचदार माँग [E < 1]

EP = कीमत लोच
Q = मात्रा
ΔQ = मांगी गई मात्रा मे परिवर्तन
ΔP = कीमत मे परिवर्तन

*

13/11/2024

Q.L.P = II

PAGE NO. :
DATE : / /

Ans :- 1 सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम की मान्यताएँ :-

(1) अन्य सभी कारक का स्थिर होना
(2) निरन्तर उपभोग
(3) मापन

Ans - 2 सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम की कोई दो विशेषताएं :-

(1) वस्तु की मात्रा मे वृद्धि के साथ-2 उपयोग कम होता जाता है।
(2) सीमान्त उपयोगिता जब शून्य होती है तब कुल उपयोगिता सर्वाधिक होती है।

Ans - 3 उदासीनता वक्र का अर्थ :-

उदासीनता वक्र वह वक्र है जिसपर स्थित प्रत्येक दो वस्तुओं के ऐसे संयोगों को प्रदर्शित करते है जिससे उपभोक्ता को समान सन्तुष्टि प्राप्त होती है।

Ans - 4 उदासीनता वक्र की विशेषताएँ :-

(1) उदासीनता वक्र एक दूसरे को प्रतिच्छेदित नही करते है
(2) उदासीनता वक्र कभी भी अपने अक्ष को स्पर्श नही करते।
(3) उदासीनता वक्र का ढलान ऋणात्मक होता है।

Ans - 5 उदासीनता वक्र कभी भी अपने अपने अक्ष को स्पर्श नही करता

अपने अक्ष को इसलिए स्पर्श नही करता क्योंकि उदासीनता वक्र दो वस्तुओ के संयोग को प्रदर्शित नही करती है।

PAGE NO.
DATE / /

Ans. कीमत प्रभाव :—

कीमत प्रभाव किसी एक वस्तु की कीमत एवं उपभोक्ता की आय स्थिर रहने पर दूसरी वस्तु की कीमत मे परिवर्तन होने के कारण उपभोक्ता की साम्य स्थिती तथा वस्तु की क्रय होने वाले परिवर्तन को सङ्केतित करता है :—

Ans. Income effect :— आय प्रभाव :—

माँग के अन्य निर्धारकों को स्थिर करने पर उपभोक्ता की साम्य की स्थिति मे परिवर्तन या क्रय किये गये वस्तु की मात्रा मे परिवर्तन को आय प्रभाव मे परिवर्तन कहते है।

Ans. प्रथम आपूर्ति निर्णय :—

① कार्य करना है या नही
② कितना कार्य करना है
कार्य

Ans. प्रतिस्थापन प्रभाव :—

प्रतिस्थापन प्रभाव से अभिप्राय उपभोक्ता द्वारा किसी वस्तु की क्रय एवं साम्य स्थिती मे होने वाले उस परिवर्तन से है जब कोई वस्तु दूसरी वस्तु की तुलना मे सस्ती हो जाती है परन्तु वास्तविक आय समान रहती है।

PAGE NO. :
DATE : / /

14/11/2024 GLP — III

Ans. 1 प्रदेश रेखाएँ :-
प्रदेश रेखाएँ वे रेखाएँ होती हैं जो अपने ऊपर की ओर ढलान वाले भागों से समोत्पाद की सीमा के नीचे की ओर ढलान वाले भाग को अलग करती है।

Ans. 2 Cost :- लागत :-
उपभोक्ताओं को वस्तुओं एवं सेवाओं की पूर्ति करने के लिए व्यवसायिक गतिविधि मे होने वाले व्यय को लागत कहा जाता है।

Ans. Marginal Cost :- सीमान्त लागत
सीमान्त लागत वह लागत होती है जो एक अतिरिक्त इकाई के उत्पादन से सम्बन्धित होती है।

Ans. Total Vairiabl cost :- कुल परिवर्तनशील लागत
उत्पादन की वे लागतें है जो उत्पादन के साथ प्रत्यक्ष रूप से परिवर्तित होती है।

Ans. Short run average cost curve :- अल्पकालीन औसत लागत वक्र :-
1. औसत परिवर्तनशील लागत
2. औसत स्थाई लागत
3. औसत कुल लागत

Ans. Meaning of Market Structure :- बाजार संरचना का अर्थ :-

वस्तुओं एवं सेवाओं के लिए प्रतिस्पर्धा की प्रकृति तथा मात्रा न केवल वस्तु बाजार के लिए की संरचना को निर्धारित करती है।

Ans Classification of the market :- बाजार का वर्गीकरण :-

(1) क्षेत्रफल के आधार पर
लेन देन की प्रकृति के आधार पर
व्यवसाय की मात्रा के आधार पर
समय के आधार पर

Ans. The meaning of perfect com: पूर्ण प्रतिस्पर्धा का अर्थ :-

वह बाजार जिसमें बड़ी संख्या में क्रेता तथा विक्रेता शामिल होते हैं जो बाजार के पूर्ण ज्ञान के साथ समरूप उत्पादों का क्रय एवं विक्रय करते हैं।

Remark/total Sh. Kaish 14/11/2024

Q.1 Two advantages of monoply :- एकाधिकार के दो लाभ :-

① More profits :- अधिक लाभ :-
एकाधिकारी अपनी कंपनी उत्पादन की की कीमत बढ़ाकर अधिक लाभ कमा सकती है।

② Production control :- उत्पादन नियंत्रण :-
एकाधिकारी कम्पनी उत्पादन को कम करके उत्पाद की कीमत बढ़ा सकती है।

Q.2 Disadvantages of monopoly :- एकाधिकार की हानियाँ :-

① एकाधिकार एक सामाजिक लागत बनाता है, जिससे कुछ भार हानि बढ़ जाता है।
② उपभोक्ता जो उत्पाद के लिए इसकी सीमान्त लागत (MC) तक भुगतान करने को तैयार होंगे, उन्हें सेवा नहीं दी जाती है।

Q.3 Meaning of oligopoly :- अल्पाधिकार का अर्थ :-
जब बाजार में कम संख्या में फर्मों का प्रभुत्व होता है अल्पाधिकार कहलाता है।

Q.4 Types of oligopoly :- अल्पाधिकार के प्रकार :-

① पूर्ण प्रतिस्पर्धा
② एकाधिकार
③ एकाधिकार प्रतियोगिता

Q.5 Assumptions of oligopoly अल्पाधिकार की मान्यताएँ :-

PAGE NO.
DATE / /

(1) अल्पाधिकार उस समय उत्पन्न होता है जब थोड़े से विक्रेता होते है।
(2) इनके समीप स्थानापन्न वस्तुओ का उत्पादन करने वाली फर्मों की अल्प संख्या होती है

Ans अल्पाधिकार की विशेषताए :- Features of oligopoly :-

(1) कोई भी फर्म दूसरे के बजार पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालने से नही रोक सकती है।
(2) अल्पाधिकार एकाधिकार से भिन्न होता है, जिसमे एक फर्म बाजार पर हावी होती है

* Advantages of oligopoly :- अल्पाधिकार के लाभ :-

(1) अल्पाधिकार बाजार बडी संख्या मे छोटे विक्रेताओं की विशेषता है
(2) अल्पाधिकार की अपनी बाजार संरचना है। विक्रेता एक ही प्रकार के या विभेदित उत्पाद बेचते है

* Defination of oligopoly :- अल्पाधिकार की परिभाषा :-

अल्पाधिकार की स्थिति उस समय कही जाती है जब बाजार मे उद्योग मे समरूप वस्तु उत्पादन करने वाली अथवा निकट स्थानापन्न वस्तुओं का उत्पादन करने वाली फर्मों की संख्या अलग या बहुत थोडी होती है

PAGE NO
DATE: / /

18/11/2024

HLP I

Ans. 1 Opportunity Cost :- अवसर लागत :-

प्रोफेसर बेनहम के अनुसार किसी वस्तु की अवसर लागत आगामी सबसे बेहतर विकल्प है जिसे समान कारकों के समूह द्वारा उत्पादित किया जा सकता है जिसमे समान पड़ी व्यय होती है

Ans. 2 Three problems of Economic Sys: आर्थिक प्रणाली की तीन समस्याएँ :-

1. क्या उत्पादन करना है
2. कैसे उत्पादन करना है
3. किसके लिए उत्पादन करना है

Ans. 3 Meaning of economic problem आर्थिक समस्या का अर्थ :-

उत्पादित की जाने वाली वस्तु, उत्पादित की जाने वाली वस्तु की मात्रा, उत्पादन के लिए प्रयोग की जाने वाली विधि, उत्पादित वस्तुओं के लिए लक्षित उपभोक्ताओं और आर्थिक वृद्धि प्राप्त करने की क्रिया को आर्थिक समस्याओं के रूप मे जाना जाता है।

Ans - 4 Economic as art :- अर्थशास्त्र कला के रूप मे :-

पीगू, मार्शल, आदि अर्थशास्त्रियों ने अर्थशास्त्र को कला माना है क्यूकी कला को विशिष्ट उद्देश्यों की प्राप्ती के लिए ज्ञान के व्यवहारिक प्रयोग के रूप मे परिभाषित किया गया है।

Ans - 5 Positive Science Economic :- सकारात्मक विज्ञान अर्थशास्त्र :-

एवं उद्देश्य दो महत्वपूर्ण स्तम्भ है जिनके तथ्य आधार पे

एक सकारात्मक विज्ञान की स्थापना की जाती है इस प्रकार अर्थशास्त्र को एक सकारात्मक विज्ञान के रूप मे देखा जा सकता है।

Ans.6 Human Science Economic – मानक विज्ञान अर्थशास्त्र :–

एक मानक विज्ञान के रूप मे अर्थशास्त्र प्रकृति मे व्यक्तिपरक है क्योंकि यह मूल्यों पर आधारित है दूसरे शब्दों मे मानक अर्थशास्त्र मे न केवल आर्थिक विषयों का अध्ययन किया जाता है बल्कि इससे सम्बंधित महत्वपूर्ण निर्णय भी किया जाता है।

Ans.7 Initial Utility :– प्रारम्भिक उपयोगिता क्या होती है :–

किसी वस्तु की पहली इकाई का उपभोग करने के पश्चात जो उपयोगिता (सन्तुष्टि) प्राप्त होती है उसे प्रारम्भिक उपयोगिता कहते है।

Ans :–8 formula of Total Utility. कुल उपयोगिता का सूत्र :–

$$TU = MU_1 + MU_2 + MU_3 - \dots$$

TU = total Utility
MU = Marginal Utility

Ans.9 Formula of Marginal Utility सीमान्त ~~उपयोगिता~~ लागत का सूत्र :–

$$MC = \frac{\text{कुल लागत मे परिवर्तन}}{\text{मात्रा मे परिवर्तन}}$$

$$MC = \frac{\Delta TC}{\Delta Q}$$

PAGE NO. :
DATE : / /

Q.10 औसत उपयोगित –

$$AU = \frac{\text{कुल उपयोगिता}}{\text{उपभोग की गई वस्तुओ की संख्या}}$$

19/11/2024 HLP—II

Ans.1 – Monopolistic comptition :– एकाधिकार प्रतिस्पर्धा :– अर्थ –

जिसमे उत्पादन बाजार मे एक दूसरे के साथ ऐसे उत्पादो को बेचने की प्रतियोगिता रखते है जिसमे उत्पाद विभेद किया जाता है।

Ans-2 :– Advantages of manopolistic compition :– एकाधिकृत प्रतिस्पर्धा के लाभ

(1) बेहतर गुणवत्ता वाले उत्पादन
(2) बेहतर ग्राहक सेवा
(3) अधिक विकल्प

Ans3 – Authorized of manapalitic camption :– एकाधिकृत प्रतिस्पर्धा की हानियाँ

(1) अतिरिक्त क्षमता के लिए उत्तरदायि
(2) उच्च कीमते
(3) विज्ञापन

Ans4 – Defination of manapolitic camption :– एकाधिकृत प्रतिस्पर्धा की परिभाषा

एकाधिकृत प्रतिस्पर्धा एक बाजार संरचना है जहाँ बड़ी संख्या मे लघु विक्रेता होते है जो विभेदित परन्तु

DATE / /

स्थानापन्न उत्पाद विक्रय करते है।

Ans-5 :— एकाधिकृत प्रतिस्पर्धा मे विज्ञापन की भूमिका का अर्थ:—

The meaning of the role of Science in monopolistic comptition:—

एकाधिकृत प्रतिस्पर्धी बाजार संरचना मे कई कम्पनीयाँ अलग - अलग उत्पाद बैचती है उत्पाद विवेदन उत्पन्न करने के लिए वे विज्ञापन को एक तकनीक के रूप मे उपयोग करते है।

Ans 6:— Quadratic production funtion— द्विघात उत्पादन फलन

फलन निम्न अनुसार व्यक्त किया जाता है। द्विघात उत्पादन

$$Y = A + 1 \qquad Y = a + bx - cx^2$$

a, b, c वे बाधाएं जिनके मूल्य डेटा के सांख्यिकिय विश्लेषण द्वारा निर्धारित किये जाते है।

Ans 7:— Meaning of Law of Vairable proportion:— परिवर्तनशील अनुपात नियम का अर्थ

उत्पादन के किसी एक साधन को स्थिर रखकर अन्य उत्पत्ति के साधनो मे वृद्धि की जाती है तो एक निश्चित समय बाद उत्पादन गिरने लगता है।

Ans 8 —Definition of Isoquant Curve:— समोत्पाद वक्र की परिभाषा

पीटरसन के अनुसार :— समोत्पाद को एक वक्र के रूप मे परिभाषित किया जा सकता

PAGE NO :
DATE : / /

जो दो परिवर्तनशील साधनों के सम्भावित संयोजनों को दर्शाता है जिनका उपयोग एक समान कुल उत्पादन करने के लिए किया जा सकता है

Ans-9 :- Isoquant map :- समोत्पाद मानचित्र :-

समोत्पाद वक्र या सम मात्रा मानचित्र का एक समूह है जो अलग उत्पादन स्तर देने वाले निवेश के सबसे प्रभावि [तकनीकि दृष्टिकोण से] संयोजन को प्रदर्शित करता है को ....

Ans 10 :- Types of Isoquant :- समोत्पाद के प्रकार :-

1. रेखिक समोत्पाद
2. समकोण समोत्पाद
3. उत्तल समोत्पाद

Paper – I Principal of micro Eco.

PAGE NO.
DATE / /

2/11/2024 ALP – I

1) Mean of Economics :– अर्थशास्त्र का अर्थ :–

अर्थशास्त्र संसाधनों के उपयोग, वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन, समय के साथ उत्पादन और कल्याण की वृद्धि, तथा समाज के लिए महत्वपूर्ण चिंता के अन्य जटिल मुद्दों पर दुर्लभता और उसके प्रभावों का अध्ययन है।

Ans-2 – Definition of Economic :– अर्थशास्त्र की परिभाषा :–

अर्थशास्त्र सामाजिक विज्ञान की शाखा है, जिसके अन्तर्गत वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन, वितरण, विनिमय और उपभोग का अध्ययन किया जाता है।

Ans-3 :– Inductive method :– आगमनात्मक विधि :–

यह एक मनोवैज्ञानिक विधि है जिसमे विशिष्ट और उदाहरणों के माध्यम से सामान्य नियमों का निर्माण किया जाता है।

Ans-4 :– Budget line Price line :– बजट रेखा कीमत रेखा :–

बजट रेखा कीमत रेखा एक ग्राफिकल प्रतिनिधित्व है जो उपभोक्ता की मौद्रिक आय और वस्तुओं की कीमत के आधार पर विभिन्न वस्तुओं के संयोजन को दर्शाता है जिसे उपभोक्ता खरीद सकता है।

Ans :– 5 Meaning of Consumption Decision :– उपभोग निर्णय का अर्थ :–

पूर्ति एवं माँग प्राथमिकता आय के स्तर एवं विक्षेपन सहित उपभोक्ता वस्तुओं एवं सेवाओं से सम्बन्धित कारकों का लेन-देन उपभोक्ता के विकल्प के अन्तर्गत किया जात

PAGE NO. :
DATE : / /

Ans. 6 Meaning of ~~Production~~ Utility :– उपयोगिता का अर्थ :– किसी वस्तु या सेवा का उपभोग करने से हमे जो सन्तुष्टि प्राप्त होती है, उसे ही उपयोगिता कहते है

Ans 7:– Meaning of Production :– उत्पादन का अर्थ :– कुछ संसाधनों, तकनीकों और काम से किसी उपभोग करने वाली वस्तु व सेवा के बनाने को कहा जाता है।

Ans. 8:– Meaning of Production Function :– उत्पादन फलन के प्रकार :–

1. अल्पकालीन उत्पादन फलन
2. दिर्घकालीन उत्पादन फलन

Ans:–9 Meaning of Monopoly :– एकाधिकार का अर्थ :– एक ऐसे बाजार की स्थिति है जहाँ किसी वस्तु का केवल एक ही विक्रेता है।

Ans–10 Assumptions of monopoly :– एकाधिकार की मान्यताएँ :–

1. क्रेताओ और विक्रेताओ की बडी संख्या
2. विभेदीकृत यानि निकट स्थानापन्न उत्पादन

PAGE NO. :
DATE / /

Ans:-1 Meaning of Economic Problem:- आर्थिक समस्या का अर्थ:-

संसाधनों की कमी के कारण होने वाली चुनाव करने की समस्या है।

Ans:-2 Definition of Economic Problem:- आर्थिक समस्या की परिभाषा:-

किसी भी अर्थव्यवस्था के सीमित संसाधनों की सभी आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर सकते।

३/११/२४

Revison

23/11/2024 Topic :- माँग (Demand)

PAGE NO. :
DATE : / /

* Meaning of Demand :- माँग का अर्थ

- वस्तु को प्राप्त करने की इच्छा
- इच्छा पूर्ती के लिए साधन
- साधनों पर व्यय की तत्परता
- वस्तु की कीमत
- समयावधि

* Demand :- माँग :-

किसी उपभोक्ता द्वारा किसी निश्चित कीमत पर निश्चित व्यय क्रय करने को माँग कहा जाता है।

* Two types of Demand :- माँग तालिका दो प्रकार की है।

- व्यक्तिगत माँग तालिका → एक व्यक्ति के सन्दर्भ मे
- बाजार माँग तालिका → अनेक उपभोक्ताओ के सन्दर्भ मे

* Types of Demand :- माँग के प्रकार

- कीमत माँग [P↑ D↓ , P↓ D↑]
- आय माँग (उच्च कोटी वाली वस्तुओ) [निम्न कोटी वाली वस्तुओ के सन्दर्भ मे]
- आड़ी व तिरछी माँग [I↑ D↓ I↓ D↑]

* माँग को निर्धारित करने वाले तत्व :-

Revision

Topic :— माँग का नियम

24/11/2024

PAGE NO. :
DATE : / /

* Horizontal and oblique demand :— क्षैतिज या परोक्ष माँग :—

यह माँग उन वस्तुओं के लिए होती है जो एक दूसरे से सम्बंधित होती है

* Substitute goods :— स्थानापन्न वस्तुएँ
जैसे – चाय और कॉफी
एक दूसरे की स्थानापन्न वस्तुएँ.

* Complementary items :— पूरक वस्तुएँ :—
ये वस्तुएँ एक दूसरे का अच्छा विकल्प होती है जैसे कार और पेट्रोल.

* Due to the application of demand rules. माँग के नियम को लागू होने के कारण

(New experiments) (नये प्रयोग)

→ Income Effect (आय प्रभाव)

→ (कृतियों की संख्या मे परिवर्तन)

(4) सीमान्त उपयोगिता की सासनियता
(5) प्रतिस्थापन प्रभाव
(6)

Exceptions to the law of Demand :— माँग के नियम के अपवाद

(1) गिफिन वस्तुएँ
(2) प्रतिष्ठ मूलक वस्तुएँ
(3) भविष्य मे कीमत बढने की आशंका
(4) उपभोक्ता की अज्ञानता
(5) जीवन की अनिवार्य वस्तुएं
(6) युद्ध अथवा आपातकाल
(7) कुल आय का सुक्षम व्यय.

PAGE NO. :
DATE : / /

* Elasticity of Demand· माँग की लोच :- किसी वस्तु की कीमत मे हुए परिवर्तन से माँग मे हुए परिवर्तन की माप है।

* formula of Elasticity of Demand :- माँग की लोच का सूत्र :-

$$\frac{\text{माँग मे आनुपातिक परिवर्तन}}{\text{कीमत मे आनुपातिक परिवर्तन}}$$

* Types of Elasticity Demand :- माँग की लोच के प्रकार

- → कीमत लोच
- आय लोच ←
- → आड़ी व तिरछी लोच

Revision

9/10/2024 Topic :- Market structure.

PAGE NO. :
DATE : / /

* Classification of Market :- बाजार का वर्गीकरण

- (On the Basis of Area) (क्षेत्रफल के आधार पर)
- लेन देन के प्रकृति के आधार पर (On the Basis of Nature of Transaction)
- व्यवसाय की मात्रा के आधार पर (On the Basis of volume of Business)
- वस्तुओं तथा सेवाओं के आधार पर (On the Basis of Commodities and Services)
- समय के आधार पर (On the Basis of time)
- विक्रेताओं की स्थिति के आधार पर (On the Basis of status of Sellers)
- वैधता के आधार पर (On the Basis of legality)
- प्रतियोगिता की प्रकृति के आधार पर (On the Basis of Nature of Comptition)

* Determinants of Market structure :- बाजार संरचना के निर्धारक

- विक्रेताओं की संख्या तथा प्रकृति (Number and Natures of Sellers)
- क्रेताओं की संख्या तथा प्रकृति Number and Natures of Bu
- उत्पाद की प्रकृति (Nature of Product)
- प्रवेश तथा बहिर्गमन की शर्तें (Entry and Exit Conditions)
- पैमाने की मितव्ययिताएँ (Economic of Scale)

PAGE NO. :
DATE : / /

३/१२/२०२४

Revision Topic :- Types of Market

* Different Market Structures) :- बाजार संरचना के प्रकार :-

बाजार संरचना के प्रकार

- (पूर्ण प्रतिस्पर्धा) (Perfect Comptition Market)
- (अपूर्ण प्रतिस्पर्धा) (Imprefect Comption Market)

(1) पूर्ण प्रतिस्पर्धा बाजार :- (Perfect Comptition Market) :- पूर्ण बाजार से सम्बन्धित स्थितियाँ पूर्ण बाजार संरचना की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता एक ही प्रकार के उत्पाद को बड़ी संख्या मे क्रेताओं को विक्रय करना है

(2) Imprefect Comption Market :- अपूर्ण प्रतिस्पर्धा :- अपूर्ण बाजार से सम्बन्धित परिस्थितिया पूर्ण बाजार से भिन्न है

- एकाधिकार (Monopoly)
- एकाधिकार प्रतिस्पर्धा (Monopolitic Comption)
- अल्पाधिकार (Oligopoly)
- द्वयाधिकार (Duopoly)

Revision

PAGE NO.:
DATE: / /

4/12/2024 Topic :— उत्पादन बचत

* उत्पादक बचत का अर्थ :—

उत्पादक बचत को उत्पाद की बिक्री के दौरान उत्पादकों को वास्तविक रूप से प्राप्त होने वाली राशी तथा वस्तु की एक इकाई के लिए स्विकृत की गई राशी के मध्य अन्तर के रूप मे परिभाषित किया गया है।

* उत्पादक एवं उपभोक्ता बचत के मध्य अन्तर :—

अन्तर का आधार	उत्पादक बचत	उपभोक्ता बचत
अर्थ	यह उस कीमत के मध्य के अन्तर को संदर्भित करता है जिसपर एक फर्म वास्तव मे किसी उत्पाद को बेचती है और जिस कीमत पर वह बेचने के लिए तैयार है	यह उस कीमत के मध्य के अन्तर को संदर्भित करता है जिसपर उपभोक्ता किसी उत्पाद को खरीदने के लिए तैयार होता है जिस कीमत पर वह वास्तव मे उस वस्तु को खरीदता है
उदाहरण	मान लीजिए कोई उत्पादक किसी वस्तु को 200 रु मे बेचने के लिए तैयार है हालांकि मौसम के दौरान भारी वर्षा के कारण छाते की मांग बढ जाती है बढी हुई मांग का लाभ पाने	माना की मोनिका चोकलेट के लिए 500 रु देने के लिए तत्पर है पर परन्तु छूट मिलने के कारण 240 मे मिल जाती है (240-500) 260 रु मोनिका की बचत है

	के लिए वह वास्तव में खाते को 300 रु में बेचने के लिए (300-200) 100 रु उत्पादक की बचत होगी।	
कीमत का निर्धारक	यह उच्चतम कीमत निर्धारित करने में सहायता करता है जिसपर निर्माता उत्पाद बेचता है	जिसपर निर्माता यह न्यूनतम कीमत निर्धारित करने में सहायता करता है जिसपर उपभोक्ता उत्पाद खरीद सकता है
लाभ प्राप्त करना	उत्पादक बचत का लाभ निर्माताओं एवं सेवा प्रदाताओं द्वारा उठाया जाता है उपभोक्ता बचत का लाभ उपभोक्ता द्वारा	उपभोक्ता बचत का लाभ उपभोक्ता द्वारा किया जाता है
बाजार होने के सम्बन्ध	यह सामान्यतः बाजार मुल्य में वृद्धि के साथ बढ़ता है	यह सामान्यतः बाजार मुल्य में कमी के साथ बढ़ता है।

Revision

PAGE NO. :
DATE :

5/12/2024 Topic :— परिवर्तनशील अनुपात नियम

*** परिवर्तनशील अनुपात नियम का अर्थ :—**

उत्पत्ति के साधनों (भूमि, श्रम, पूँजी, साधन) को स्थिर रखकर किसी एक साधन की मात्रा मे वृद्धि की जाए तो एक निश्चित समय के पश्चात उत्पादन मे कमि आ जाति है। इसे उत्पत्ति ह्रास नियम या परिवर्तनशील अनुपातों का नियम कहते है।

*** उत्पति के साधन**

- पूँजी
- श्रम
- भूमि
- उद्यमी

*** परिवर्तनशील अनुपात के नियम की अवस्थाए :—**

→ ① प्रथम अवस्था :—
- ① सी. उपयोगिता उच्चतम बिन्दु पर होती है।
- ② उच्चतम औसत उत्पादन की अवस्था भी कहते है।

② द्वितीय अवस्था
- ① उत्पादन की सर्वश्रेष्ठ अवस्था
- ② सीमान्त उपयोगिता धनात्मक रहती है।
- ③ घटते प्रतिफल की अवस्था भी कहते है।

→ ③ तृतीय अवस्था
- ① सी. उपयोगिता ऋणात्मक हो जाती है
- TP व AP मे कमी आ जाती है